

फकीहे इस्लाम जनरीने हुजुर मुफ़्त-ए-आज़म हिन्द,  
ताजुशरीयअ हज़रत अल्लामा अलहाज अरशाह  
मुफ़्त मोहम्मद अक़्बर रज़ा ख़ाँ कावरी अजहरी  
से मुख़्तलिफ़ मबाके पर जो करामते ज़ाहिर हुं उनको चन्द झलकियाँ

# करामाते ताजुशरीअह



तस्नीफ़  
डाक्टर मौलाना मोहम्मद शहाबुद्दीन ख़जी

प्रकाशक

इस्लामिक रिसर्च सेंटर

58, कंसघान, सीदाघान, बरौली शरीफ़, (यूपी०)

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ  
(اے محبوب ہم نے آپ کو سارے جہاں کیلئے رحمت بنا کر بھیجا)



کتاب کو پڑھنے سے پہلے  
اس کتاب کو سکین کرنے والے  
اور اس کام میں حصہ لینے والوں کے حق میں

# دُعا فرمائیں

اللہ اچھا ہے ہمارے تمام  
سب سے بڑے گناہوں کو بخیر فرما دے  
اور ایمان پر ہمارے کام میں آتا فرما دے!

# آمین

PDF BY :  
**SAIYED MUHAMMAD HASAN QUADRI**  
+91-9465825634

मुफ्ती-ए-आज़म का ज़री क्या बना अख़्तर रज़ा  
महफ़िले अंजुम में अख़्तर दूसरा मिलता नहीं

# करामाते ताजुशरीआ

नबीरए आला हज़रत जानशीने मुफ़्तिए आज़म ताजुशरीआ अल्लामा मुफ्ती  
अल हाज अशशाह हाफ़िज़ व कारी मुहम्मद अख़्तर रज़ा स्वा क़ादरी अज़हरी  
दामत बरकातुहुमुल आलिया के कश्फ़ व करामात का मजमा

लेखक

डॉक्टर मौलाना मुहम्मद शहाबुद्दीन रज़वी

सैय्यिद मुहम्मद हसन क़ादरी

नाशिर

इस्लामिक रिसर्च सेन्टर

58-कसगरान, सौदागरान बरेली शरीफ़



## जुमला हुकूम बहयके नाशिर महफूज हैं

नाम किताब : करामात-ए- ताजुशरीआ

मुसन्निफ : डाक्टर मौलाना मुहम्मद शहाबुद्दीन रजवी

तर्जमा व कम्पोजिंग : मौलाना मुहम्मद शफीकुल हक रजवी

मुबाइल न.09997662550

तस्हीह : मुहम्मद मुशाहिद रफ़ात बरेलवी

इशाअत अव्वल : दिसम्बर 2015/1437

इशाअते सानी : अप्रैल 2016/1437

बएहतेमाम :

सफ़हात : 160

मिलने का पता :

**इस्लामिक रिसर्च सेन्टर**

58-कसगरान,सौदागरान, बरेली शरीफ़ यूपी

E-mail:mrazvi.razvi@gmail.com

www.alahazratbooks.com

Mob:08533059674,

;09873877274



## हर्फ आगाज

हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ज्ञात सतूदा सिफात से जिस को निस्बत का शर्फ हासिल हो जाये वह खुदा का मुकबूल व महबूब बन्दा हो जाया करता है। खुलफा-ए-राशिदीन, अस्हाब-ए-रसूल और अहले बैत-ए-अतहार माहताबे नबुव्वत व रिसालत के फौले हुये मुख्तलिफ़ माह व अंजुम हैं। इसी तरह उन मुकददस व मुतबरक हस्तियों से जिन का राबता मरबूत हो गया, वह भी पाक व मुकबूल हो गये। इस रुहानियत की दुनिया में कोई अब्दाल के मर्तबाए आला से मुशरफ़ हुआ तो कोई मनसब गौसिया जलीला पर फ़ाइज हुआ, इन अहलुल्लाह की शाने अरफ़अ देखिये कि चोर बन कर आया, कुतुब बन कर वापस गया। जिन अस्हाबे उम्मत ने उन अस्लाफ़ व अख़लाफ़ की गुलामी से फ़ैज़ हासिल किया, वह वलीए कामिल, साहिबे कश्फ़ो व करामत बुजुर्ग और आरिफ़ बिल्लाह बन गये।

निज़ामे क़ुदरत के तेहत यह बात ज़ाहिर व बाहिर है कि खुदा का वली वक़्त का बादशाह और मुतसर्रिफ़ हाकिमे वक़्त होता है, जिस की ज़ाहिरी कैफ़ियत यह होती है कि हाथ बज़ाहिर तंग और ख़ाली नज़र आता है। मगर बेशुमार नेअमते खुदावन्दी से पुर होता है। जिस्म नहीफ़ व नातवाँ लगता है मगर उस से मशहूर ज़माना पहलवान और बुलन्द व बाला पहाड़ लर्ज़ा बर अन्दाम नज़र आते हैं। यह दरवेशाना जिन्दगी बसर करने वाले खुद चटाई पर फ़रोक़श होते हैं, मगर दुनियवी तख़्त व ताज के

बादशाह और वज़राए आजम उन के क़दमों पर सरनिगूँ करते हैं। उन की अंगुशत मुबारक के हलके से इशारे पर फर्श ज़मीन पर चर्ख़ कुहन साल आफ़ताब व माहताब दरख़िशन्दा सितारे की तरह रक्स करते नज़र आते हैं। उन की निगाहें अगर एक तरफ़ ज़मीन के आख़िरी हिस्से तहतुस्सरा की गंहराइयों तक पहुँचती हैं, तो दूसरी तरफ़ अर्श बरी की बेपनाह वुस्सतों को छूती नज़र आती हैं। इन औलियाए किराम के मुबारक लबों पर कुदरते खुदावन्दी का कलाम होता है। इन महबूबाने बारगाहे इलाही की कुव्वते समअ व बसर के लिए मशरिक व मरिब और शुमाल व जुनूब के तमाम हिजाबात, मसाफ़ात की दूरी, मख़लूक़े खुदा की बेशुमार आबादी, हैवानात व नबातात और जंगलात के तनावर दरख़्त मानेअ नहीं होते हैं। और मुक़र्रिबाने बारगाहे रब्बुलइज़्ज़त के कुदूम हुक्मे इलाही के पाबन्द हुआ करते हैं, हर हर क़दम हर लमहा हर लहज़ा मरज़ीए इलाही व मनशाये खुदावन्दी के ताबेअ होते हैं। उन का क़ल्ब व सीना उलूमे इलाही का ख़ज़ाना होता है, जो दिलों के हालात व ख़तरात पर काबू रखते हैं, मख़लूकात के अज़म व इरादों को ख़ूब पहचान लेते हैं।

अल्लाह तबारक व तआला ने उन ही ख़ासाने खुदा व मक़बूलाने बारगाह की तरह मेरे पीर व मुरशिद रहबरे शरीअत व तरीक़त आरिफ़ बिल्लाह जानशनीए हुज़ूर मुफ़्ती आजम हज़रते ताजुशशरीआ अल्लामा मुफ़्ती हाफ़िज़ का़री अलहाज मुहम्मद अख़्तर रज़ा कादरी अजहरी दामतबरकातुहुमुलआलिया को मुन्तखाब फ़रमाया, और उन्हें अपना महबूब व मक़बूल बन्दा बनाया और यह सब सदका व तुफ़ैल है हुज़ूर नबी करीम अहमदे मुजतबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि



वसल्लम का, जिन की निगाह लुत्फ व ऐनायत और फज़ल व करम ने मुरशिदे गिरामी के अन्वार व तजल्लियात को आलमे इस्लाम के चप्पे चप्पे और गोशे गोशे में रौशन व मुनव्वर कर रखा है। अल्लाह तआला ने हज़रत ताजुशरीआ को अपने घर बातुल्लाह (मक्का मुअज़्ज़मा) में बुलाया, नमाज़े पढ़ने की सआदत बख़्शी, गुस्ल काबा में शिरकत और अंबियाए किराम व रसूलाने ऐज़ाम के तबरूकात की ज़ियारत से मुशरफ़ कराया।

وتعزوا من تشاء وتذلوا من تشاء بيدك الخير و هو على كل شئ قدير-

हज़रत मुरशिदे गिरामी से तिशनियाने रूहानियत सैराब होते हैं। इक्तिसाबे फ़ैज़ हासिल करने वालों का हुजूम होता है। गर्ज़ यह कि मुशिदे गिरामी हज़रत ताजुशरीआ के आस्ताना-ए-करम से दोनों जहान के खज़ाने मिल सकते हैं।

खासाने खुदा, खुदा न बाशद

लेकिन अज़ खुदा जुदा न बाशद

सगे दर आस्तानाए आलिया रज़विया

अहक़र मुहम्मद शहाबुद्दीन रज़वी गुफ़िरा लहु

22 नवम्बर 2015 ई 1437 हिजरी

सरपरस्त: मदरसा गौसिया रज़ाउलउलूम मौज़ा शैदापुर

पोस्ट कैसरगंज, ज़िला बहराइच शरीफ़

कौमी जनरल सिक्रेट्री: आल इन्डिया जमाअते रज़ाए

मुस्तफ़ा, बरेली शरीफ़



## तकदीम

अजःमुहक्कि अज़ हज़रत अल्लामा मुफ़्ती सय्यद शाहिद  
अली रज़वी मुहदिदस रामपुरी।

हज़रत ताजुशरीआ की ज़ात अतिया खुदावन्दी  
ऐसी मीनारा नूर हस्तियाँ अल्लाह तआला के करम का  
मज़हर होती हैं।

फ़कीहे इस्लाम हज़रत अल्लामा मुहम्मद इस्माईल  
रज़ा ख़ाँ मारुफ़ बिही ताजुशरीआ मुफ़्ती मुहम्मद अख़तर  
रज़ा ख़ाँ नसबन बड़हेच पठान, मसलकन सुन्नी हनफ़ी,  
मशरबन कादरी बरकाती, मौलदन व मसकनन बरेलवी,  
तालीमन मनज़री, और तकमीलन अज़हरी हैं।

चौदहवी सदी हिजरी के निस्फ़े आख़िर, बीसवीं  
सदी ईसवी के निस्फ़े अव्वल में ग़ैर मुन्कसिम हिन्दुस्तान  
और रुहेलखण्ड के मरकज़े इल्म व इरफ़ान, मख़जने फ़ैज़  
व बरकत, ममबए जूद व सख़ा, मअदने नूर व निकहत  
बरेली शरीफ़ में आलमे अरवाह से आलम अजसाम में  
जलवा गर हुये। आप के वालिद माजिद मुफ़स्सिरे आज़म  
अल्लामा मुहम्मद इब्राहीम रज़ा ख़ाँ कादरी (मुतवफ़्फ़ी  
1385 हिजरी 1965 ई) जददे अमजद हुज्जतुल इस्लाम  
मुफ़्ती मुहम्मद हामिद रज़ा ख़ाँ कादरी (मुतवफ़्फ़ी 1362  
हिजरी 1943 ई) नाना जान मुफ़्ती-ए-आज़म अल्लामा  
मुफ़्ती मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ कादरी (मुतवफ़्फ़ी 1402  
हिजरी 1981 ई) और परदादा कुतुब इरशाद आला हज़रत  
इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ कादरी फ़ाज़िले बरेलवी (मुतवफ़्फ़ी  
1340 हिजरी 1921 ई) अपने अहद के मुमताज़ उलमा व  
फुक़हा रासेख़ीन फिलइल्म और मरजअ सूफीयाए

कामीलीन में शुमार किये जाते हैं।

आप की विलादत के वक़्त जददे आला इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ कादरी फ़ाजिले बरेलवी और जददे अमजद हज़रत हुज्जतुल इस्लाम मुफ़्ती मुहम्मद हमिद रज़ा कादरी विसाल फ़रमा चुके थे। वालिद माजिद मुफ़्त्सिरे आज़म अल्लामा इब्राहीम रज़ा ख़ाँ कादरी की उमर का 36 वाँ साल था जिन की "दर्स व तदरीस" का चढ़ता सूरज पूरे शबाब पर था। दूर, दूर से तिशनियत इल्म व फ़ज़ल परवाना वार हाज़िर हो कर "दर्स मुफ़्त्सिरे आज़म" में शरीक हो रहे थे। नाना जान हज़रत मुफ़्तीए आज़म अल्लामा मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ कादरी जो अपने वक़्त के फ़र्दे फ़रीद, उलूमे नक़लिया के ताजदार, उलूमे अक़लिया के ग़व्वास मैदाने फ़काहत के शहसवार और मैदाने सियासत के अलमबरदार थे। अरब व अजम में उन की धूम थी, सारे जहान में उन का चर्चा था, इल्म व इरफ़ान के बहर नापैदा किनार थे, जिन की न जाने कितनी मौजें थीं, वह एक कार ख़ाना थे, जहाँ पुरजे नहीं ढलते थे, शख़्सियत साज़ी होती थी। उस रौशन और शख़्सियत साज़ माहौल में हज़रत ताजुशशरीआ का अहद तिफ़ली शुरू हुआ। हज़रत ताजुशशरीआ को पीरे मजाज़ सैय्यदुल उलमा हज़रत अल्लामा सय्यद शाह आले मुस्तफ़ा कादरी बरकाती मारहरवी व जुबदतुस्सादात अहसनुलउलमा हज़रत अल्लामा सय्यद हैदर हसन कादरी बरकाती नूरी मारहरवी (मुतवफ़्फ़ी सन 1995 ई) और बुरहाने मिल्लत हज़रत मुफ़्ती बुरहानुल हक़ जबलपुरी का ईक़ान और नामवर नाना जान हज़रत मुफ़्ती आज़म का शोहरए आफ़ाक़ ईमान मयस्सर आया। होश की आँखें खुलीं तो हर तरफ़ क़ुरआन व सुन्नत की हुक़मरानी नज़र आई, फ़िक्हे हनफ़ी का सिक्का बजते



देखा, दीन मतीन और अजमत रसूल की हिमायत अल्लाह और उस के रसूल के दुश्मनों की अदावत में अपने नाना जान और वालिद-ए-माजिद को यकताए रोजगार पाया।

हजरत ताजुशरीआ मदज़िल्लाहु ने अपने वालिदैन करीमैन, जामिआ रजविया "मन्जरे इस्लाम" और "जामिअतुलअज़हर" काहिरा(मिस्र) में मुख्तलिफ़ असातिजा किराम से तालीम व तरबियत पाई और सनद व दस्तार से सरफ़राज़ हुये। आप 1963 ई में जामेअ अज़हर मिस्र तशरीफ़ ले गये, वहाँ आप ने शोअबा "कुल्लिया उसूलुददीन" में दाखिला लिया और माहिर असातिजा किराम से फन्ने तफ़सीर व हदीस में तालीम व तरबियत पाई। जामेअ अज़हर मिस्र के "शोअबाए कुल्लिया उसूलुददीन" का सालाना इम्तिहान अगर्चे तहरीरी होता था मगर मालूमात आम्मा(जनरल नालेज)का इम्तिहान तकरीरी होता था। चुनांचि जामिआ के सालाना इम्तिहान के मौके पर जब जानशीने मुफ़तीए आजम मौलाना मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ बरेलवी का इम्तिहान हुआ तो मुम्तहिन ने आप की जमाअत के त़लबा से इल्मे कलाम के चन्द सवालात किए, पूरी जमाअत में से कोई एक भी त़ालिबे इल्म मुम्तहिन के सवालात के सहीह जवाबात न दे सका। मुम्तहिन ने रूये सुख़्न आप की तरफ़ करते हुये सवालात को दुहराया, जानशीने मुफ़तीए आजम ने उन सवालात का ऐसा शाफ़ी व काफ़ी जवाब दिया कि मुम्तहिन तअज्जुब की निगाह से देखते हुये कहने लगे कि :

आप तो हदीस व उसूले हदीस पढ़ते हैं। इल्मे कलाम में कैसे जवाब दे दिया, आप ने इल्मे कलाम कहाँ पढ़ा ?

आप ने जवाब में फ़रमाया कि :



“मैं ने दारुल उलूम मन्ज़रे इस्लाम बरेली शरीफ में चन्द इब्नेदाई किताबें इल्मे कलाम की पढ़ी थीं और मुझे मुताला का बहुत शौक था जिस की वजह से मैंने आप के सवालात के जवाब दे दिए। अगर इस से भी मुश्किल सवाल होता तो भी मैं सही जवाब देता।”

आप के जवाब से मसरूर हो कर मुम्तहिन जामिआ ने आप को जमाअत में पहला मक़ाम और पहली पोज़ीशन दी। आप ने 1964 ई में जामिआ अज़हर को टॉप किया। उस वक़्त ममलुकते जमहूरिया मिस्र के सदर जमाल अब्दुन्नासिर के हाथों अवॉर्ड अता किया गया। इस इम्तिहान में नुमाया कामयाबी पर एडीटर माहनामा आला हज़रत ने “कवाइफ़े आस्ताना रज़विया” के उनवान से रिपोर्ट शाय की।

“नबीरए आला हज़रत व हुज्जतुल इस्लाम अलैहिर्हरमा और हज़रत मुफ़स्सिरे अज़म के फ़रज़न्दे दिल बन्द मौलाना अख़्तर रज़ा ख़ाँ साहब ने अरबी में बी.ए.की सनदे फ़राग़त निहायत नुमाया और मुमताज़ हैसियत से हासिल की। मौलाना अख़्तर रज़ा ख़ाँ साहब न सिर्फ़ जामिआ अज़हर में बल्कि पूरे मिस्र में अव्वल नम्बरों से पास हुये। मौला तआला उन को इस से ज़्यादा बेश काम्याबी अता फ़रमाये और उन्हें ख़िदमात का अहल बनाये, वह सही मअना में आला हज़रत इमाम अहले सुन्नत के जानशीन कहे जायें” **اللهم زد فزده**

(माहनामा आला हज़रत जमादिलउला 1385 हिजरी / सितम्बर 1965 ई.)

तीन साल बाद यानी 17 नवम्बर 1966 ई / 1386 हिजरी को बरेली शरीफ़ वापसी हुई। बरेली शरीफ़ में हज़रत मुफ़्तीए अज़म की सर परस्ती में तारीख़ी इस्तिक्बाल हुआ। वापसी के बाद 1967 ई में अपने मादर इल्मी जामिआ रज़विया “मन्ज़रे इस्लाम” में दर्स व तदरीस

का सिलसिला शुरू फरमाया। ऐसा महसूस होता है कि आज दर्स व तदरीस का तअल्लुक उन के जिस्म से नहीं बल्कि उन की रूह से जुड़ा हुआ है। दर्स व तदरीस उन की रूहानी गिज़ा है। ग्यारह साल बाद आप के बरादरे अकबर रैहान मिल्लत मौलाना मुहम्मद रैहान रज़ा खाँ कादरी ने "मन्ज़रे इस्लाम" का सदर मुदर्रिस व शैखुलहदीस बना दिया। आप ने इस अज़ीम मनसब की जिम्मेदारियों को बहुस्न व खूबी निभाते हुये तालीमी व तन्ज़ीमी ऐअतेबार से जामिआ रज़विया "मन्ज़रे इस्लाम" की शोहरत व मकबूलियत में चार चाँद लगा दिए। मसरूफ़ियतों का दाइरा रोज़ बरोज़ बढ़ता गया तो बाज़ाब्ला दर्स व तदरीस का मशगला मुस्तक़िल जारी रखना मुम्किन नहीं रह सका, तब आप ने अपने दौलत खाना "बैतुर्रज़ा" में मखसूस औकात में दर्स व तदरीस की महफ़िल सजाई। यहाँ दर्स व तदरीस का फ़ैज़ ऐसा जारी हुआ कि उस हलकाए दर्स में शर्फ़ तिलमिज़ पाने के लिए तीन तीन जामिआत "मन्ज़रे इस्लाम" "मज़हरे इस्लाम" और "जामिआ नूरिया" के तलबा की बड़ी तादाद जमा हो गई। इफ़ितताह बुख़ारी शरीफ़ व ख़त्मे बुख़ारी शरीफ़ तदरीस व तफ़हीम की आला मन्ज़िल है। आप ने यह काम भी बहुत अहसन तरीक़ा पर अन्जाम दिया। इफ़ितताह व इख़ितताम बुख़ारी का सिलसिला अहले सुन्नत के बड़े बड़े मदारिस व जामिआत में शुरू हुआ तो वसीअतर होता गया। दर्स बुख़ारी व दर्स तदरीस के वक़्त ऐसा लगता है कि इमाम बुख़ारी व इमाम मुस्लिम की महफ़िलों को उन के जानशीन की हैसियत से संवार रहे हैं। अपने जददे आला आला हज़रत, जददे अमजद हुज्जतुल इस्लाम, नाना जान मुफ़तीए अज़म, वालिद माजिद मुफ़स्सिरे अज़म और अपने असातिज़ा में हज़रत

बहरूल उलूम मुफती सय्यद अफज़ल हुसैन रजवी की तालीमी व तदरीसी यादों को ताज़ा कर रहे हैं।

हज़रत ताजुशरीआ अर्सें हाज़िर के उन बर गुज़ीदा उलमाए दीन, मुफ़रिसरीन व मुहद्दीसीन, फुकहा व मुतकल्लिमीन और मुफ़ितयाने शरअ मतीन में मुमताज़ हैसियत के हामिल हैं जिन के वजूदे मसऊद से बे शुमार मख़लूके खुदा को हक़ शनासी और सदाक़त शआरी की दौलते गिराँ नुमाया नसीब हुई, ज़ाती सीरत व किरदार में सफ़ा आफ़ताब की तरह दरख़्शाँ, मुआशिरत व समाजी फ़लाह व बहबूद के लिए हमा वक़्त मुज़तरब व कोशाँ। ऐसे बुज़ुर्ग व बरगुज़ीदा इस वक़्त बहर पहलू ज़वाल पज़ीर मुआशिरे में नापैद होते जा रहे हैं, वक़्ती मसलिहत, ज़ाती मफ़ाहिमत और दुनियावी मन्फ़अत ने दौरे जदीद को बहुत तौफ़ीक़ बना दिया है। हर चहार जानिब नफ़सा नफ़सी के आलम में इंसान इसलाह व फ़लाह के तसव्वुर से भी मायूस व ना उमीद होता जा रहा है जबकि मायूसी व नाउमीदी काफ़िरोँ का शेवा है यह मायूसी नक्काराए वक़्त बन जाये अगर हज़रत ताजुशरीआ जैसी ताबेदार शख़सीयत इस तारीकी के माहौल में शमा रौशन की सूरत में मौजूद न हों। कहा जाता है कि ऐसी मीनारा नूर हस्तियाँ अल्लाह तआला के करम का मजहर होती हैं। इस उम्मत मुस्तफ़वी को इन्आम व इकराम के तौर अता की जाती हैं। हज़रत ताजुशरीआ की ज़ात बा बरक़त अतियाए खुदावन्दी हैं हज़रत ताजुशरीआ उस वक़्त अपने मुक़द्दस मिशन के लिए मसरूफ़े जिहाद हुये जब हज़रत मुफ़ती आज़म के विसाले पुर मलाल के बाद दुनिया बरेली को ख़ाली समझने लगी थी, पैग़ामे हक़ व सदाक़त के अलम बरदारों पर बे यकीनी का कोहरा छा गया था। एक तरफ़



दुश्मुनाने दीन, दूसरी तरफ हासिदीन अपने मिशन को आगे बढ़ाने के लिए घात में लगे हुये मैदाने अमल में उतरने के लिए पर तोल रहे थे। आला हज़रत इमाम अहले सुन्नत मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िल बरेलवी का फ़रमाने जीशान उस वक़्त के माहौल की मनज़र कशी कर रहा था।

इक तरफ़ आदाए दीं इक तरफ़ हैं हासिदीं

बन्दा है तन्हा शहा तुम पे करीबों दुरुद

अशद ज़रूरत थी, हालात ना साजगार थे, मुख़ालिफ़त उरुज पर थी, हक़ की बात कहना मुश्किल हो रहा था, आप ने ज़ुरअते ईमानी और अख़लाकी कुव्वत से मुस्लेह हो कर इल्मे सदाक़त लहराया, दीन के दिफ़ाअ और अज़मते मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के तहफ़फ़ुज के लिए इस क़दर सर फ़रोशी से मैदाने अमल में आये कि देखते ही देखते उन की बात को सुना जाने लगा, और उन के अफ़कार व ख़्यालात दिलों में उतरने लगे। जां सोज़ी या जां सिपारी की यह वह रिवायत थी जिसे ताईदे इज़दी हासिल थी, और जिस पर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की करम गुस्तरयाँ साया फगन थीं।

पन्द्रहवीं सदी हिजरी इक्कीसवी सदी ईसवी के निस्फ़े अब्बल में आस्माने इल्म व फ़ज़ल पर ऐसे छाये कि सहाब रहमत बन सावन भादों की तरह बरसे, इल्म व फ़ज़ल की सूखी खेतियाँ सैराब हुईं। चमन लहलहाने लगे, तिशनिगाने इल्म व फ़ज़ल और साहिबाने तहकीक़ व तदकीक़ ने इस सरे चशमाए फ़ैज़ व करम से न सिर्फ़ अपनी इल्मी प्यास बुझाई बल्कि वह भी इल्म व फ़ज़ल, तहकीक़ व तदकीक़ के चमन लाला ज़ार हुये, तरह तरह के खुश रंग और खुशबू वाले फूल खिले। क्या ख़ूब कहा ज़ौक ने :

गुलहाए रंगा रंग रो है जीनते चमन

ऐ जौक इस जहाँ को है जेब इखिलाफ़ से

और फिर यह हुआ कि वह सब अपनी अपनी खुशबूओं से आलमे इस्लाम को महकाने लगे। पूरी दुनियाए इस्लाम जिस से महक उठी। समन्दर की सीपों ने उस अब्रे निसयाँ से कीमती मोती चून लिए, तालाब व नदियाँ उसे बरसाती पानी समझ कर आप से बाहर हुई।

बारिश में तालाब भी हो जाते हैं कम ज़रफ़

आप से—मगर बाहर समन्दर नहीं होता

बलन्द टीले अपनी ऊँचाई और फ़र्जी बलन्दी पर नाज़ा और मगरूर रह कर खुश्क और बेफ़ैज़ रहे, न सैराब हुये न सब्ज़ा ज़ार व लाला ज़ार बने बल्कि सब्ज़ा ज़ार खेती और लाला ज़ार चमन ऐनाद व हसद और बादे समूम की लपटों से सूखने और मुरझाने लगे, न ही इल्म व फ़ज़ल और रहमत व अनवार की इस बारिश से कुछ ज़ख़ीरा कर सके जो वक़्त पर काम आता। मगर इस माहौल में भी मायूस होने की ज़रूरत नहीं।

चमन के माली अगर बनालें चमन के मुवाफ़िक़ शीआर अब भी

चमन में आ सकती है पलट कर चमन की रूठी बहार अब भी

लिहाज़ा इस में न किसी बैसाखी की ज़रूरत है, न लिफ़्ट व क्रेन की, बस अख़लास व लिल्लाहियत और कौल व अमल में इत्तेहाद व यकसानियत की ज़रूरत है।

मुअरिख़े बरेली शरीफ़ मेरे शागिर्द रशीद, फ़रज़न्द रूहानी मौलाना मुहम्मद शहाबुद्दीन रज़वी जनरल सिक्रेट्री आल इन्डिया जमाअत रज़ाए मुस्तफ़ा मुअल्लिफ़ "मुफ़तीए अज़म और उन के ख़ुल्फ़ा" और "हयाते ताजुशरीआ" नौ जवान कलम कारों में ज़ूद नवेस, पुख़्ता कलम और दो दर्जन से जाइद किताबों के मुसन्निफ़ व मुअल्लिफ़ हैं। मरकज़े इल्म व इरफ़ान बरेली शरीफ़ के

अहवाल व मुआरिफ और उन के माआखज व मराजेअ और खान्दाने रजा के मशाहीर अकाबिरीन की सीरत व सवानेह पर गहरी नजर रखने वाले रमज शनास शख्सियत के मालिक हैं। "हयाते ताजुशशरीआ" के कबूले आम व खास के बाद "नवादिराते ताजुशशरीआ" पूरी आव व ताब के साथ मन्जरे आम पर ला चुके हैं। फकीर नूरी ने "नवादिराते ताजुशरीआ" पर इक सरसरी नजर डाली यह किताब क्या है? ताजुशशरीआ पर रीसर्च और पी एच डी करने वालों के लिए एक दस्तावेज, रौशन राह और बुनियादी माखज है। हजरत ताजुशशरीआ की शख्सीयत हशते पहलू हीरे की तरह है। जिस की हर किरन अपनी तरफ खींचती है। इस किताब से वह किरनें पूरी तरह नुमाया हैं। खान्दाने रजा के जियालों की सवानेह व तजकरे, जाती, कौमी, मिल्ली और मजहबी हालत पर मुश्तमिल एक तारीखी आइना है, जिसे देख कर और पढ़ कर रूह तड़प उठेगी और दिल मसरूर होगा। बाद हु मुसन्निफ के लिए दिल से दुआयें निकलेंगी। मौलाना मुहम्मद शहाबुददीन रजवी सल्लमहु ने "नवादिराते ताजुशशरीआ" में जिन खारदार वादियों से गुजर कर कीमती और नादिर मालूमात फ़राहम की हैं वह उन्ही का हिस्सा हैं। इस मवाद की फ़राहमी में वह कब से लगे हुये हैं, यह इसकी जमा व तरतीब की तारीख का पता किताब खुद देदेगी, बताने की ज़रूरत नहीं। यह किताब लाइके तवज्जोह भी है और काबिले सद सताइश भी।

मैं ने मौसूफ से ज़ोर देकर कहा है कि: माज़ी, हाल और मुस्तक़बिल के लिहाज़ से कोई मुतज़ाद, मुतआरिज़ और मुतनाज़ा बात न आने पाये "नवादिराते ताजुशशरीआ" बिल्कुल दस्तावेज़ी हैसियत की हामिल हो फिर भी अगर कोई कोरे बातिन इस में नक्स तलाश करता है, तो उस



का हाल मक्खी जैसा होगा कि जिसे अच्छी चीज़ नज़र नहीं आती वह हमेशा गन्दगी पर बैठती है।

मौलाना शहाबुद्दीन रजवी अब उस रजवी सफ़रुलमुज़फ़्फ़र 1437 हिजरी 8 दिसम्बर 2015 ई में हज़रत ताजुशरीआ मदज़िल्लाहुल आली के सन्दह नादिर व नायाब रसाइल नई आब व ताब के साथ ज़ेवरे तबाअत से आरास्ता कर के ला चुके हैं। नीज हज़रत ताजुशरीआ मदज़िल्लाहुलआली से मुख़्तलिफ़ मक़ामात और मवाक़ै पर कश्फ़ व करामत का जो ज़हूर हुआ और उस को अहले अक़ीदत व मोहब्बत ने महफूज़ कर लिया, वह अगर्चे खुद में एक बड़ा काम और तरतीब व तज़ईन की मन्ज़िलों से गुज़ार कर मन्ज़रे आम पर लाना जुये शेर लाने के मिसदाक़ है। मगर मौसूफ़ ने यहाँ भी हौसले और हिम्मत से काम ले कर कुल नहीं तो कुछ अन्मोल हीरे और मोती लड़ी में पिरो कर एक हार बनाम "करामते ताजुशरीआ" तैयार कर दिया है, और हज़रत ताजुशरीआ के बाज़ कश्फ़ व करामात को ज़ेवरे तबाअत से आरास्ता कर के पेश कर दिया है। जो काबिले सताइश भी है, काबिले ज़्यारत और लाइके मुताला भी, और अहले सिलसिला के लिए बेश बहा तोहफ़ा भी अल्लाह तआला मौसूफ़ की इन सब काविशों को कबूले आम व ख़ास अता फ़रमाये। आमीन।

आज इस बात की शदीद ज़रूरत है कि हम अपने अकाबिर व असलाफ़ की इल्मी और रुहानी हालात व कैफ़ियात, फ़ज़ाइल व कमालात, अक़ाइद व नज़रियात ख़िदमात जलीला और ज़र्री कारनामों से अ़वाम व ख़्वास अहले सुन्नत को ज़्यादा मुतआरफ़ करायें ताकि उन के इल्मी फ़ैज़ान और रुहानी क़दरों से ज़्यादा लोग फ़ैज़याब हो सकें, ताकि आदाए दीन और हासिदीन की ज़बान व

कलम को कानून में किया जा सके।

अरबाबे इल्म व दानिश से मुखिलसाना गुजारिश है कि इस दरतावेज को तन्कीद और तअन व तशनीअ का मौजू न बनाये बल्कि मुसन्निफ को जरी मशवरो से नवाजे। यह हमारे अखलास व मोहब्बत का तकाजा है। इस राह की मुशिकलों और दुशवारियों को वही कुछ जानता है जो इस राह से गुजरता है। दूसरा इन अजीयतों से आशना नहीं।

अल्लाह तआला खान्दाने रजा के हर हर फर्द खुसूसन हजरत ताजुशरीआ मददजिल्लाहुल आली उन के जा नशीन व फरजन्द हजरत मौलाना असजद रजा खा, हजरत ताजुशरीआ की आल नस्बी व रुहानी और तमाम वाबस्तगाने सिलसिल्ला आलिया रजविया को दुशमनों के शर, हासिदों के हस्द व जुमला अमराज जिस्मानी व रुहानी और आसेब रोजगार से मामून व महफूज फरमाये, आमीन।

हजरत ताजुशरीआ मददजिल्लाहुल आली के साया आतिफत को ता देर हम सब के सरो पर काइम व दाइम रखे और उन के फयूजात इल्मिया, अमलिया और रुहानिया से माला माल फरमाये, आमीन।

फकीर नूरी सम्यद शाहिद अली हसनी रजवी जमाली करीमी  
(खलिफाए हुजूर मुफती आजम, काजिए शरअ व मुफती जिला रामपुर)  
शैखुल हदीस व नाजिमे आला मरकजी दर्सगाह  
अहले सुन्नत अलजामिअतुलइस्लामिया पुराना गंज, रामपुर

## आरिफ़बिल्लाह हज़रत ताजुशरीआ का मुस्तसर तआरुफ़

**विलादत :**

जानशीन मुफ़ित-ए-आजम अल्लामा मुफ़ती आलहाज अश्शाह मुहम्मद अख़तर रज़ा अज़हरी कादरी इब्ने मौलाना मुहम्मद इब्राहीम रज़ा जीलानी इब्ने हुज्जतुलइस्लाम मौलाना मुहम्मद हामिद रज़ा इब्ने आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी 25 फ़रवरी 1942 ई. को मोइल्ला सौदागरान बरेली शरीफ़ में पैदा हुये।

**ख़ानदानी पसमन्ज़र:**

ताजुशरीआ का ख़ानदान अफ़ग़ानिन नसल और कबील-ए-बढ़ेच से तअल्लुक रखता है। मूरिसे आला शाहज़ादा सईदुल्लाह ख़ाँ कन्दहार हुकूमत अफ़ग़ानिस्तान के वली अहद थे, ख़ानदानी इख़्तिलाफ़ की वजह से कन्दहार को तर्क वतन कर लाहौर आये। यहाँ पर गवर्नर ने शीशमहल में आप के कियाम का इन्तिज़ाम किया और दरबार मुहम्मद शाह बादशाह देहली को इत्तिलाअ भिजवाई, दरबार से शाही मेहमाननवाज़ी का हुक्म सादिर हुआ। फिर शाहज़ादा सईदुल्लाह ख़ाँ ने देहली बादशाह मुहम्मद शाह से जा कर मुलाकात की, आप को बादशह ने फौज का जनरल बना दिया और आप के साथियों को भी फौज में अच्छी जगह मिल गई। रुहेलखण्ड में कुछ बगावत के आसार नुमाया हुये तो बादशाह ने आप को रुहेलखण्ड की दारुस्सुलतनत बरेली शरीफ़ भेज दिया



ताकि वहाँ अमन व अमान काइम करें। आप के साहबजादे सआदत यार खाँ दरबार देहली में वजीर -ए-मुग्लिकत थे, उनको कलीदी कलमदान मिला था, उनकी अपनी अलाहिदा मुहर थी। हाफिज़ काजिम अली खाँ के अहद में मुगलिया हुकूमत का जवाल शुरू हो गया। हर तरफ बगावतों का शोर और आजादी व खुदमुख्तारी का जोर था। आप अवध की कमान संभालने पहुँचे। आप के फ़रज़न्द मौलाना शाह रज़ा अली खाँ बरेलवी जिन्होंने 1857 ई. में अहम किरदार अदा किया। अंग्रेज़ ने उनका सर कलम करने के लिए पाँच हजार के इन्आम का एलान किया था। आप के दो फ़रज़न्द मौलाना मुफ़्ती नकी अली खाँ बरेलवी और दूसरे मौलाना हकीम तकी अली खाँ बरेलवी तवल्लुद हुये, जिन्होंने दरजनों किताबें लिखीं, मौलाना नकी अली खाँ बरेलवी के तीन फ़रज़न्द तवल्लुद हुये।

(1) आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खाँ कादरी  
फ़ाजिले बरेलवी

(2) मौलाना हसन रज़ा खाँ बरेलवी

(3) मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद रज़ा खाँ बरेलवी।

**तस्मिया ख़ानी :**

जानशीन मुफ़्ति-ए-आज़म की उमर शरीफ़ जब चार साल, चार माह, चार दिन की हुई तो वालिद माजिद मुफ़्त्सिरे आज़म हिन्द मौलाना मुहम्मद इब्राहीम रज़ा जीलानी ने तकरीब बिस्मिल्लाह ख़ानी मुन्ज़किद की, और उसमें दारुलउलूम मन्ज़रे इस्लाम के जुमला तलबा को

दअवत दी। हुज़ूर मुफ़्त-ए-आज़म कुदिदसा सिर्रहु, ने रस्मे बिस्मिल्लाह अदा कराई। और "मुहम्मद" नाम पर अकीका फरमाया। पुकार ने का नाम "मुहम्मद इस्माईल रज़ा" और उर्फ़ "मुहम्मद अख़्तर रज़ा" तजवीज़ हुआ। हुज़ूर मुफ़्त-ए-आज़म की साहबज़ादी यानी जानशीने मुफ़्त-ए-आज़म की वालिदा माजिदा ने तअलीम व तरबियत का खास ख़्याल रखा। चूँकि नाना जान का सहीह जानशीन इसी नवासे को मुस्तक़बिल में बनना था, और सारी तवक्कुआत इन्हीं से वाबस्ता थीं, इसी लिए नाना जान हुज़ूर मुफ़्त-ए-आज़म की दुआये भी आप ही के हक़ में निकलती रहीं।

**हुसूले उलूमे इस्लामिया :**

जानशीने मुफ़्त-ए-आज़म ने घर पर वालिदा माजिदा से कुरआन करीम नाज़रा ख़त्म किया। उसी दौरान वालिद माजिद से उर्दू की किताबें पढ़ी। घर पर तअलीम हासिल करने के बाद वालिद बुज़ुर्गवार ने दारुलउलूम मन्ज़रे इस्लाम में दाख़िल करादिया। नोहमीर, मीज़ान, मुन्हाइब वगैरा से हिदाया आख़ेरैन तक की कितबें दारुलउलूम मन्ज़रे इस्लाम के कुहना मशक़ असातिज़ा किराम से पढ़ीं। ताजुशशीआ ने फ़ारसी की इब्तिदाई कुतुब पहली फ़ारसी, दूसरी फ़ारसी, गुलज़ारे दबिस्ता, गुलिस्ताँ और बोस्ताँ मन्ज़र-ए-इस्लाम के उस्ताद हाफ़िज़ इन्आमुल्लाह ख़ाँ तस्नीम हामिदी बरेलवी से पढ़ी। 1952 ई. में एफ़ आर इस्लामिया इन्टर कालेज में दाख़िला लिया। जहाँ पर हिन्दी और अंग्रेज़ी की तालीम

हासिल की।

मुफ़रिसरे आजम हिन्द कुददुस सिरुहु के मुरीदे खास जनाब निसार अहमद हामिदी सुलतान पूरी मरहूम की कोशिश से जामिआ अजहर काहिरा(मिस्र)से अरबी अदब में महारत हासिल करने के लिए फ़ज़ीलतुशशैख़ मौलाना अब्दुत्तवाब मिस्री की ख़िदमात हासिल की गई थीं। शैख़ साहिब दारुल उलूम मन्ज़र इस्लाम में दर्स व तदरीस दिया करते थे। उनके खास तलामिज़ा में आप का शुमार होता था। आप दौराने तालिबे इल्मी मामूल था कि अलस्सुबह अरबी अख़बारात उस्ताद को सुनाते और उर्दू हिन्दी के अख़बारात की ख़बरों व इत्तिलाआत को अरबी ज़बान में तर्जमा कर के सुनाते। आप को शैख़ साहिब बड़ी तवज्जोह और इन्हेमाक से पढ़ाते आप की ज़िहानत व फ़तानत को देखते हुये जामिआ अजहर में दाख़िला का मशवरा मौलाना इब्राहीम रज़ा ख़ाँ जीलानी को दिया तो वह तैयार हो गये। ताजुशशरीआ जानशीन मुफ़ित-ए-आजम 1963 ई. में जामिया अजहर काहिरा मिस्र तशरीफ़ ले गये। वहाँ आप ने "कुल्लिया उसुलुदीन" (एम-ए-ए) में दाख़िला लिया। मुसलसल तीन साल तक जामिया अजहर मिस्र में रह कर फ़न्ने तफ़सीर व हदीस के माहिर असातिज़ा से इक्तिसाब इल्म किया।

ताजुशशरीआ बचपन ही से ज़िहानत व फ़ितानत और कुव्वते हाफ़िज़ा के मालिक थे। और अरबी अदब के दिलदादा थे। जामिया अजहर मिस्र में दाख़िला के बाद जब आप की जामिया के असातिज़ा और तलबा से



गुफ्तगु हुई तो वह आप की बे तकल्लुफ़ फ़सीह व बलीग़ अरबी गुफ्तगु सुन कर महबे हैरत हो जाते थे और कहते थे कि एक अजमियुन्नसल हिन्दुस्तानी अरबियुन्नसल अहले इल्म हज़रात से गुफ्तगु करने में कोई तकल्लुफ़ महसूस नहीं करता। वाकई काबिले हैरत बात है।

जामिया अज़हर मिस्र के शौअबा-ए-कुल्लिया-उसूलुद्दीन का सालाना इम्तिहान अगर्चे तहरीरी होता था। मगर मालूमाते अम्मा(जनरल नालेज) का इम्तिहान तकरीरी होता था। चुनाँचेह जामिया के सालाना इम्तिहान के मौका पर जब जानशीन मुफ़ित-ए-आज़म का इम्तिहान हुआ तो मुम्तहिन ने आपकी जमाअत से इल्मे कलाम के चन्द सवालात किए, पूरी जमाअत में से कोई एक भी सवालात के सहीह जवाब न दे सका। मुम्तहिन ने रूये सुख़ आप की तरफ़ करते हुये सवालात को दोहराया। जानशीन मुफ़ित-ए-आज़म ने उन सवालात का ऐसा शाफी व काफ़ी जवाब दिया कि मुम्तहिन तअज्जुब की निगाह से देखते हुये कहने लगा कि "आप तो हदीस व उसूले हदीस पढ़ते हैं, तब इल्मे कलाम में कैसे जवाब दिया"। आप ने इल्मे कलाम कहाँ पढ़ा ?

जानशीन मुफ़ती-ए-आज़म ने जवाब में कहा कि "मैंने दारुलउलूम मन्ज़रे इस्लाम बरेली में चन्द इब्तेदाई किताबें इल्मे कलाम की पढ़ी थीं और मुझे मुताला का बहुत शौक़ था जिस की वजह से मैंने आप के सवालात के जवाब दे दिए। अगर इस से भी मुश्किल सवाल होता तो भी मैं सहीह जवाब देता।

आप के जवाब से मसरूर हो कर मुग्तद्दिन जामिया ने आप को जमाअत में पहला मक़ाम और पोजीशन दी, और आप अव्वल नम्बरों से पास हुये।

जामिया अज़हर से फ़रागत :

ताजुशरीआ मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा अज़हरी मददजुल्लाहु 1963 ई में जामिया अज़हर मिस्र तशरीफ़ ले गये, और वहाँ पर तीन साल मुसलसल रह कर हुसूले इल्म में मशगूल रहे। दूसरे साल के सालाना इम्तिहान में आप ने शिरकत की। अल्लाह तआला ने अपने फज़ले अमीम से पूरे जामिया अज़हर काहिरा में इम्तिहान में आला कामयाबी अता फ़रमाई। उस कामयाबी पर एडीटर माहनामा आला हज़रत "बरेली क्वाइफ़ अस्ताना रज़विया" के उनवान से रक़मतराज़ हैं :

नबीर-ए-आला हज़रत हुज्जतुलइस्लाम अलैहिर्रहमा और हज़रत मुफ़सिस्रे आजम के फ़रज़न्दे दिलबन्द मौलाना अख़्तर रज़ा ख़ाँ साहब ने अरबी में बी-ए-की सनद फ़रागत निहायत नुमाया और मुस्ताज हैसियत से हासिल की, मौलाना अख़्तर रज़ा ख़ाँ साहब न सिर्फ़ जामिया अज़हर में बल्कि पूरे मिस्र में अव्वल नम्बरों से पास हुये। मौला तआला उन को इस से ज़्यादा बेश अज़ बेश कामयाबी अता फ़रमाये। और उन्हें ख़िदमात का अहल बनाये, और वह सहीह मअना में आला हज़रत इमाम अहले सुन्नत के जानशीन कहे जायें। अल्लाहुम्मा जिद फ़जिद।

ताजुशरीआ की 1966 ई. में जामेअ अज़हर

काहिरा से फरागत हुई तो अव्वल पोजीशान हासिल करने की वजह से जामिआ की मुक़तदिर शख़्सियात ने आप को बतौर इन्आम "अज़हर अवॉर्ड" पेश किया और साथ ही साथ "सनदे फ़रागत व तहसीले उलूमे इस्लामिया" से भी नवाजे गये।

काहिरा से बरेली तशरीफ़ आवरी :

जब आप जामेअ अज़हर से बरेली शरीफ़ तशरीफ़ लाये तो उनकी कैफ़ियत अजीब व ग़रीब थी। दर असल पहले जामिआ अज़हर जाना बहुत मुश्किल मरहला था मुसलसल क़ियाम की वजह से अहले ख़ानदान से मुलाकात व मुसाफ़ा ना मुम्किन था, बरेली आमद की ख़बर से खुशियों की लहर दौड़ गई। जनाब उमीद रज़वी बरेलवी यूँ तहरीर फ़रमाते हैं, बड़नवान "आमदनत बाइस"...

गुलिस्ताने रज़वियत के महकते फूल, चमनिस्ताने आला हज़रत के गुले खुशरंग, जनाब मौलाना मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ साहब इब्ने हज़रत मुफ़स्सिरे आज़म हिन्द रहमतुल्लाहि अलैहि एक अर्सी दराज़ के बाद जामेअ अज़हर से फ़ारिग़ुत्तहसिल हो कर 17 नवम्बर 1966ई 1386 हिजरी की सुबह को बहार अफ़जाये गुलशने बरेली हुये। बरेली के जंक्शन स्टेशन पर मुतअल्लिकीन व मुतवस्सिलीन व अहले ख़ानदान, उलमा-ए-किराम व तल्वा-ए-दारुलउलूम(मन्ज़रे इस्लाम)के अलावा बेशुमार मोअतक़दीन हज़रात ने(जिन में बैरुने जात खुसूसन कानपुर के अहबाब भी मौजूद थे) हज़रत मुफ़ती-ए-



आजम मदजुल्लाहु की सर परस्ती में शानदार इस्तिकबाल किया, और साहबजादा मौसूफ को खुशरंग फूलों के गजरो और हारों की पेशकश से अपने वालिहाना जजबात व खुलूस और अकीदत का इजहार किया।

इदारा मौलाना अख़तर रजा ख़ाँ अजहरी और मुतवस्सिलीन को इस कामयाब वापसी पर हदया—ए—तबरीक व तहनियत पेश करता है, और दुआ करता है कि अल्लाह तआला बतुफ़ैल अपने हबीबे करीम अलैहिस्सलात वत्तस्लीम, उन के आबा किराम खुसूसन आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजदिदे आजम रदियल्लाहु तआला अन्हु का सच्चा सही वारिस व जानशीन बनाये।

ई दुआ अज मन व अज जुमला जहाँ आमीन बाद।

(मौलाना रैहान रजा ख़ाँ मुदीर माहनामा आला हज़रत बरेली दिसम्बर 1966 ई. 1386 हिजरी)

“हुज़ूर ताजुशरीअ को लेने के लिए हुज़ूर मुफ़्ती—ए—आजम बज़ाते खुद बनफ़से नफीस तशरीफ़ ले गये, और ट्रेन का बे ताबाना इन्तिज़ार फ़रमाते रहे, जैसे ही ट्रेन प्लेटफ़ार्म पर पहुँची सब से पहले हज़रत ने गले लगाया, पेशानी चूमी और बहुत दुआयें दीं और फ़रमाया कि कुछ लोग गये थे मगर बदल कर आये मगर मेरे बच्चे पर जामिआ की तहजीब का कुछ असर नहीं हुआ, मा शाअल्लाह।”

अन्दाजे तर्बियत:

हज़रत ताजुशरीआ के वालिद माजिद मुफ़स्सिर—ए—आजम हिन्द रहमतुल्लाहि अलैहि ने आप की नश व

नुमा बड़े नाज़ व नअम और खुसूसी एहतिमाम के साथ की, दौराने तालिबेइल्मी आप को तकरीर व वअज़ की तरबियत देते थे। एक बार वालिद माजिद ने आप को क़रीब बुला कर बैठाया और फ़रमाया कि कल से तलबा(मन्ज़र-ए- इस्लाम)को सैफुलजब्बार(मुसन्निफ़ा सैफुल्ला हिलमसलूल अल्लामा शाह फ़ज़ले रसूल उस्मानी बदायूनी)सुनाया करोगे। आप ने अर्ज किया कि अब्बा हुज़ूर अभी मेरी उर्दू भी अच्छी नहीं है,फ़रमाया कि सब ठीक हो जायेगी,यह काम तुम्हारे ज़िम्मा किया जाता है। आप ने दूसरे दिन से हम दर्स तलबा को जमा किया और ख़ानकाहे आलिया रज़विया की छत पर बैठ कर "सैफुलजब्बार"का दर्स शुरू करदिया। इस तरह मुतअदिद बार सैफुलजब्बार का दर्स दिया और मुतालअ किया,वालिद माजिद के इस से कई मक़ासिद पोशीदा थे,एक तो यह कि उर्दू एबारत ख़वानी बेहतर हो जायेगी,दूसरी अक़ाइद-ए-अहले सुन्नत व जमाअत की ख़ूब जानकारी हासिल होगी,तीसरी वजह यह थी कि तकरीर व ख़िताबत करने में तकल्लुफ़ और झिझक ख़त्म हो जायेगी।

**असातिज़ा किराम :**

आप के असातिज़ा में क़ाबिले ज़िक्र असातिज़ा किराम के नाम दर्ज हैं :

- 1- हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म मौलाना अश्शाह मुस्तफ़ा रज़ा नूरी बरेलवी कुददुस सिर्रहु
- 2- बहरूलउलूम हज़रत मौलाना मुफ़्ती सैयद मुहम्मद

अफ़ज़ल हुसैन रज़वी मुंगेरी

3- मुफ़रिसरे आज़म हिन्द हज़रत मौलाना मुहम्मद इब्राहीम रज़ा जीलानी रज़वी बरेलवी

4 -फ़ज़ीलतुशशैख़ मौलाना अल्लामा मुहम्मद समाही शैखुल हदीस वत्तफ़सीर जामेआ अज़हर काहिरा

5- हज़रत अल्लामा मौलाना महमूद अब्दुलगफ़ार उस्ताजुलहदीस जामेआ अज़हर काहिरा

6-उस्ताजुलअसातिज़ा मौलाना मुफ़ती मुहम्मद अहमद उर्फ़ जहाँगीर खाँ रज़वी आज़मी

7 रैहाने मिल्लत मौलाना मुहम्मद रैहान रज़ा रहमानी रज़वी बरेलवी

8 फ़ज़ीलतुशशैख़ मौलाना अब्दुल्लाब मिस्त्री उस्ताद मन्ज़र-ए-इस्लाम बरेली

9 मौलाना हाफ़िज़ इन्आमुल्लाह खाँ तस्नीम हामिदी बरेलवी।

दर्स व तदरीस :

ताजुशशरीआ अल्लामा मुफ़ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा अज़हरी को 1967 ई में दारुलउलूम मन्ज़रे इस्लाम बरेली में दर्स व तदरीस देने के लिए पेश कश की गई। आप ने उस दअवत को कबूलियत से सरफ़राज़ किया, 1967 ई. से तदरीस के मनसब पर फ़ाइज़ हो गये। ताजुशशरीआ के बरादरे अकबर मौलाना रेहान रज़ा रहमानी बरेलवी ने 1978 ई. में "सदरुलमुदरिस्सीन" के आला ओहदा पर तक़्रूर किया। और इस ओहदे के साथ "रज़वीदारुलइफ़ता" के नायबे मुफ़ती भी रहे। दर्स व तदरीस का सिलसिला



मुसलसल बाराह साल तक चलता रहा।

हिन्दुस्तान गीर तब्लीगी दौरे की वजह से यह सिलसिला कुछ अय्याम के लिए मुन्कतअ हो गया मगर कुछ ही दिनों बाद अपने दौलत कदे पर दर्स कुरआन व हदीस का सिलसिला शुरू किया। जिस में मन्जरे इस्लाम, मजहरे इस्लाम और जामिआ नूरिया रजविया के तलबा कसरत से शिरकत करते, 1407 हिजरी और 1408 हिजरी को मदरसा अलजामियातुल इस्लामिया गंजकदीम रामपुर में खत्म बुखारी शरीफ कराया। 1408 हिजरी को जामिआ फारुकिया भोजपुर जिला मुरादाबाद में बुखारी शरीफ का इफितताह किया। 1409 हिजरी को दारुलउलूम अमजदिया कराची (पाकिस्तान) में बुखारी शरीफ का इफितताह फरमाया, और जिलहिज्जा 1409 हिजरी को अलजामिअतुल कादरिया रिछा बेहड़ी जिला बरेली शरीफ में शरह वकाया का तवील सबक पढ़ाया। अब तक मुल्क व बैरुने मुमालिक में न जाने कितने मदारिस व जामीआत में दर्से बुखारी दिए हैं। जामिआ फारुकिया बनारस में खत्म बुखारी के मौका पर साहिबे बुखारी और आखिरी हदीस पर ढाई घन्टा तकरीर फरमाई।

**फतावा नवीसी का आगाज :**

जानशीन-ए-हुज़ूर मुफती-ए-आज़म अल्लामा मुफती मुहम्मद अख़रत रजा खाँ अज़हरी दामत बरकातुहुमुल आलिया को अल्लाह तआला ने वदीअत के तौर पर इल्मी व फ़िकही सलाहियतों और जुज़याते फ़िक़हिया पर कामिल दस्तरस, इल्मे कुरआन व हदीस पर

मुकम्मल इदराक अता फरमाया। आप ने सब से पहले फतवा 1966ई/1386हिजरी में तहरीर फरमा कर मुफ्ती सैयद अफज़ाल हुसैन मुंगेरी सदर दारुलइफता मन्ज़र-ए-इस्लाम को दिखाया, आप ने फरमाया कि अब मैंने देख लिया है नाना मोहतरम को दिखा आइये, फिर आप ने अपने नाना ताजदारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ्ती-ए-आज़म कुददुस सिरुहु की खिदमत में पेश किया। हज़रत ने मुलाहिज़ा फरमा कर आप से मुखातब हो कर दादे तहसीन और हौसला अफज़ाई फरमाई और हिदायत की और फरमाया दारुलइफता में आ कर फतवा लिखा करो और मुझे दिखाया करो। इस से पहले फतवा में सवालात के शाफ़ी व काफ़ी जवाबात दिये। यह इस्तिफता मरकज़ इस्लाम मदीनतुल मुनव्वर से आया था जिस में तलाक़, निकाह मीरास से मुतअल्लिक़ मसाइल शरइया दरयाफ़त किए गये थे। आप ने तफ़सील से दलाइल व बराहीन के साथ फतवा को मुज़य्यन कर के उस्ताज मोहतरम और नाना ज़ान से दाद व तहसीन हासिल की।

नबीरा-ए-उस्ताजे ज़मन हज़रत मौलाना मुफ्ती हबीब रज़ा खाँ बरेलवी कहते हैं कि:

“कभी कभी नागा हो जाता था तो हज़रत की अहलिया मोहतरमा पीरानी अम्माँ साहिबा अलैहिर्रहमा दरयाफ़त फरमाती कि आज अख़तर मियाँ नहीं आये हैं। उन से कहो कि रोज़ाना आया करे। हज़रत इन को बहुत पसन्द फरमाते हैं।”

ताजुशरीआ जब भी फ़तावा की इस्लाह के लिए हाज़िरे ख़िदमत होते तो हज़रत आप को अपने करीब बैठाते, फ़तावा मुलाहिज़ा फ़रमाते और ज़रूरत के तेहत कुछ इज़ाफ़ा तरमीम व तब्दील फ़रमा कर दस्तख़त फ़रमा देते, यह मामूल बरसों रहा। और हज़रत के अय्यामे अलालत दफ़तरी कामों, दारुलउलूम मजहर इस्लाम और "सनदे ख़िलाफ़त व इजाज़त" पर दस्तख़त करने और महर की तमाम तर ज़िम्मादारियाँ आप के सुपुर्द फ़रमा दी थीं। जिस को आप ने बाहुस्न व ख़ूबी अन्जाम दिया। आप खुद अपने फ़तवा नवीसी की इब्तिदा यूँ तहरीर फ़रमाते हैं।

"मैं बचपन से ही हज़रत (मुफ़ती-ए-आज़म) से दाख़िले सिलसिला हो गया हूँ, ज़ामिआ अज़हर से वापसी के बाद मैंने अपनी दिलचस्पी की बिना पर फ़तवा का काम शुरू किया। शुरू शुरू में मुफ़ती सैयद अफ़ज़ल हुसैन साहब अलैहिर्रहमा और दूसरे मुफ़ितयाने किराम की निगरानी में मैं यह काम करता रहा। और कभी कभी हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हो कर फ़तवा दिखाया करता था। कुछ दिनों के बाद उस काम में मेरी दिलचस्पी ज़्यादा बढ़ गई और फिर मैं मुस्तक़िल हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर होने लगा। हज़रत की तवज्जोह से मुख़्तसर मुदत में इसकाम में मुझे वह फ़ैज़ हासिल हुआ कि जो किसी के पास मुदतों बैठने से भी न होता।"

(माहनामा इस्तिकामत कानपूर स.151 रज्जबुलमुर्ज्जब 1403 हिजरी 1983 ई.)

ताजुशरीआ ने लेखक (मुहम्मद शहाबुद्दीन रज़वी)



के एक सवाल के जवाब में फ़रमाया कि : मैंने दारुलउलूम मन्ज़र-ए-इस्लाम में पढ़ा और पढ़ाया, जामिआ अज़हर में भी पढ़ा, शुरु से ही मुझे मुतालअ का बहुत शौक था, अपनी दरसी किताबों के अलावा शरह हवाशी और गैर मुतअल्लिक किताबों का रोज़ाना कसरत से मुतालअ करता, और ख़ास ख़ास चीज़ों को डायरी में नोट कर लिया करता था। उसके अलावा सब से अहम बात यह है कि मुझे जो कुछ भी मिला वह हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म कुददुस सिर्रहु की सोहबत व इस्तिफ़ादा से हासिल हुआ। उनकी एक घण्टे की सोहबत, इस्तिफ़ादारात और इस्तिफ़ादा सालों की मेहनत व मुशक्कत पर भारी पड़ते थे। मैं आज हर जगह हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म का इल्मी व रुहानी फ़ैज़ान पाता हूँ। आज जो मेरी हैसियत है वह उन्हीं की सोहबते कीमया असर का सदका है।

तक़रीबन चौबीस साल से मुसलसल मुफ़्ती आज़म कुदिसा सिर्रहु के उस मनसब को बहुस्न व ख़ूबी अन्जाम दे रहे हैं। ताजुशरीआ के फ़तावा आलमे इस्लाम सनद का दर्जा रखते हैं। एक अन्दाज़े के मुताबिक़ ता दम तहरीर फ़तावा के रजिस्ट्रों की तअ़दाद 31 से मुतजावज़ हो गई है।

**मरकज़ी दारुलइफ़ता का क़ियाम:**

1981 ई.में ताजदारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म कुददुस सिर्रहु के इन्तिक़ाल के बाद आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कादरी फ़ाज़िल बरेलवी के दौलत

कदा पर(जहाँ ताजुशरीआ की मुस्तकिल सुकूनत है)  
 "मरकजी दारुलइफता" की बुनियाद डाली, 1982 ई. में घर  
 पर ही मसाइल के जवाबात एनायत फरमाते थे। बाजाबता  
 तौर पर किसी इदारा की बुनियाद नहीं पड़ी थी, मगर  
 उलमा व मशाइख और अवामे अहले सुन्नत की जरूरत  
 का ख्याल करते हुये "मरकजी दारुलइफता" के कियाम का  
 फैसला किया।

उस वक्त हजरत रोजाना दारुल इफता में जलवा  
 अफरोज होते, और आप ने मौलाना मुफती काजी  
 अब्दुरहीम बस्तवी, मौलाना मुफती मुहम्मद नाजिम अली  
 कादरी बाराबकी, मौलाना मुफती हबीब रजा खाँ बरेलवी  
 को मुफती की हैसियत से मरकजी दारुलइफता में मुकर्रर  
 फरमाया। फतावा को रजिस्टर में नकल की खिदमत के  
 लिए मौलाना अब्दुलवहीद खाँ बरेलवी को मामूर किया  
 गया। मौलाना अब्दुल वहीद बरेलवी मरहूम ने 1983 ई से  
 2005 ई तक फतावा की नकल का काम किया। आज  
 मरकजी दारुलइफता में मौलाना के हाथ से मुंदरिज  
 फतावा के 80 रजिस्टर होंगे। मौजूदा वक्त में मरकजी  
 दारुलइफता से जारी फतावा की हैसियत मुल्क व बैरूने  
 ममालिक में हर्फे आखिर के दर्जा में हैं। जिस मसनदे  
 इफता की बुनियाद मुजाहिदे जंग आजादी मौलाना मुफती  
 रजा अली खाँ बरेलवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने रखी थी  
 वह आज तक बारौनक है।

**अजदवाजी जिन्दगी:**

जानशीन मुफती आजम का अक्द मसनून हकीमुल—

इस्लाम मौलाना हसनैन रज़ा बरेलवी अलैहिर्रहमा की दुख्तरेनेक अख़्तार सालेह सीरत के साथ तय कर दिया गया था। जिस की तकरीब 3 नवम्बर 1968 ई शअबानुलमुअज़्जम 1388 हिजरी बरोज़ इतवार को महल्ला कांकर टोला पुराना शहर बरेली शरीफ़ से हुई जिन से एक साहबज़ादा मख़दूम गिरामी मौलाना अस्जद रज़ा कादरी बरेलवी और पाँच साहबज़ादियाँ तवल्लुद हुई। जिन में सब की शादियाँ हो चुकी हैं।

हज़रत की अहलिया मोहतरमा यानी पीरानी अम्माँ साहिबा जिन को मैं हुज़ूर अम्मी जान कहता हूँ अल्लाह तआला ने आप को बड़ी खूबियों से नवाज़ा है, आप के अन्दर शफ़क़त व मोहब्बत, उल्फ़त व हमदर्दी, गुमगुसारी व मुरव्वत और रहनुमाई हद दर्जा पाई जाती हैं। बाहर से आने वाले मेहमानों के तआम व कियाम का इन्तिज़ाम करना। घर में रहने वाले ख़ुददाम की किफ़ालत और शहर में बहुत से ऐसे ख़ानदान हैं जो निहायत ही ग़रीब व कमज़ोर हैं, उन की हमेशा माली मदद करती हैं। ग़रीब व नादिर ख्वातीन की रमज़ान शरीफ़ और ईद व बकरी ईद वगैरा के ख़ास मवाक़ेअ पर खाना, कपड़ा, कुछ नक़दी के साथ ख़ूब मदद करती हैं। इस के अलावा उन के पास ज़रूरत मन्दों की हमेशा एक क़तार लगी रहती है। नमाज़, रोज़ा, औराद व दज़ाइफ़, नमाज़े तहज्जुद व नवाफ़िल की ख़ास पाबंद हैं। हुज़ूर अम्मी जान की दुआओं में क़बूलियत की बड़ी तासीर पाई जाती है। आप को मौजूदा दौर की हज़रत राबिआ बसरी से ताबीर किया



जाये तो बेजा न होगा। अल्लाह तआला सेहत व सलामती अता फरमाये। (आमीन)

अल्लाह तबारक व तआला आप के फरजन्द को सल्फे सालिहीन और खानदाने रजा का सच्चा नमूना बनाए और साहिबजादा गिरामी को वालिदे बुजुर्गवार ताजुशशरीआ का सही मअनों में जा नशीन और काइम मकाम बनाए। (आमीन)

**हज व जियारत:**

ताजुशशरीआ मुफती मुहम्मद अख्तर रजा अजहरी ने पहला हज 1403/4 सितम्बर 1983 ई., दूसरा हज 1405/1985 ई. तीसरा हज 1406 हिजरी 1986 ई., में अदा फरमाये। और मुतअदिद बार उमरा से भी फ़ैजयाब हुये। अब हर साल रमजानुलमुबारक के हसीन अय्याम मक्का शरीफ और मदीना शरीफ में गुज़ारते हैं। ज़्यारत रोज़ाए नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इश्क की शमअ कभी कभी साल में दो दो बार फ़रोज़ा होती है और ज़्यारते हरमैन से मुस्तफ़ीज़ होते हैं।

**नस्बंदी के खिलाफ़ फ़तवा :**

इंदिरागाँधी साबिक वज़ीर-ए-आज़म हिन्द का मिज़ाज आमिराना था, उनके दौरे इक्त्तदार में अ़वाम पर जुल्म व जबर किया गया, कांग्रेस पार्टी की सारी कुव्वत का नुक्त्त इत्तिख्वाब सिर्फ़ और सिर्फ़ इंदिरागाँधी की ज़ात थी। उन्होंने यह सब बिला शिरकत ग़ैर इक्त्तदार पर अपनी गिरफ़्त काइम रखने के लिए ही किया था। वह सियासी मुख़ालिफ़ीन को बेदर्दी से कुचल देने के लिए

सख्त से सख्त इक़दाम करने में कोई हिचकिचाहट महसूस नहीं करती थीं। इंदिरागाँधी के साथ उन के बेटे संजय गाँधी का ताना शाही नज़रिया पसे पुश्त काम कर रहा था। 1975 ई. में पूरे मुल्क में हंगामी हालात(इमर जेंसी) का एलान कर दिया गया, तमाम शहरियों के बुनियादी हुक्क सल्ब कर लिए गये, राकीबी को कैदे सलासिल में जकड़ कर नज़रे जिन्दा (जेल)कर दिया गया, "मीसा" जैसे जाबिर कानून को नाफिजुलअमल कर दिया गया। इन तमाम हालात के साथ ही दो से ज़्यादा बच्चे पैदा करने पर सख्ती से पाबन्दी आइद कर दी गई और उन लोगों पर नसबन्दी करना ज़रूरी करार दे दिया। पुलीस अ़वाम को जबरन पकड़ पकड़ कर नसबन्दी करा रही थी, उसी इसना में नसबन्दी के जवाज़ या अ़दमे जवाज़ पर शरई नुक्ता नज़र जानने और अ़मल करने के लिए दारुलइफ़ता बरेली से अ़वाम ने रज़ूअ करना शुरू कर दिया। दूसरी तरफ़ देवबंद के दारुलइफ़ता से का़री मुहम्मद तय्यब मोहतमिम दारुलउलूम देवबन्द ने नसबन्दी के जाइज़ होने का फ़तवा दे दिया। मुल्क की हीजानी कैफ़ियत और उम्मत मुस्लिमा में इन्तिशार को देखते हुये जाबिर व ज़ालिम हुक्मराँ के ख़िलाफ़ ताजदारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म कुददुस सिरहू के हुक्म पर ताजुशरीआ ने नसबन्दी के हराम व नाजाइज़ होने का फ़तवा सादिर फ़रमाया। इस फ़तवा पर हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म के अ़लावा हज़रत मौलाना मुफ़्ती काज़ी अब्दुरहीम बस्तवी, मौलाना मुफ़्ती रियाज़ अहमद सीवानी के

दस्तख़त हैं।

फ़तवा की इशाअत के बाद हुकूमत ने इस बात के लिए दबाव डाला कि यह फ़तवा वापस ले लिया जाये मगर हज़रत ने फ़तवा से रुजूअ करने से इन्कार कर दिया और नुमाइन्दगाने हुकूमत से साफ़ साफ़ कह दिया गया कि फ़तवा कुरआन व हदीस की रौशनी में लिखा गया है। किसी भी सूरत में वापस नहीं लिया जा सकता। ख़िलाफ़त व इजाज़त की शानदार तक़रीब:

जानशीन-ए-हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी बरेलवी की ख़िलाफ़त व इजाज़त की तक़रीब, एक हसीन और शानदार तक़रीब थी, दारुलउलूम मज़हर-ए-इस्लाम बरेली के सेह रोज़ा इजलास 13/14/15/जनवरी 1962 ई/6/7/8 शअबानुलमुअज़्ज़म 1381 हिजरी की सदारत और सरपरस्ती ताजदारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म कुददुस सिरुहु ने फ़रमाई।

हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म कुददुस सिरुहु ने मौलाना साजिद अली ख़ाँ बरेलवी मोहतमिम दारुलउलूम मज़हर-इस्लाम को हुक्म दिया कि 15/जनवरी 1962 ई./8/शअबान1381 हिजरी को सुबह 8बजे घर पर महफ़िले मीलाद शरीफ़ का इन्तेकाद किया जाये। मीलाद ख़्वाँ हज़रात उलमा व मशाइख़ और तलबा मदारिस व फ़ारिगुत्तहसील होने वाले तलबा को दअवते शिरकत दे दी जाये। शदीद सर्दी के मोसम में कई हज़ार लोग मीलाद शरीफ़ में तशरीफ़ लाये और ताजुशशरीआ



अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा खाँ अजहरी को बुलवाया, अपने करीब बिठाया, दोनों हाथ अपने हाथों में लेकर जमीअ-ए-सलासलेआलिया कादरिया सहोरवर्दिया, नक्शबन्दिया चिशितया और जमीअे सलासिले अहादीस मुसलसल बिलअव्वलियत की इजाज़त व ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाया। तमाम औराद व वज़ाइफ़, आमाल व अशग़ाल, दलाइलुलख़ैरात, हज़बुलबहर, तअवीज़ात वग़ैरा वग़ैरा की इजाज़त मरहूमत फ़रमाई।

इस मौक़े पर मुजाहिदे मिल्लत मौलाना हबीबुर्रहमान अब्बासी रईस आज़म उड़ीसा, बुरहाने मिल्लत मुफ़्ती बुरहानुलहक जबल पूरी, मौलाना ख़ालीलुर्रहमान मुहदिदसे अमरोहवी, अल्लामा मुश्ताक़ अहमद निज़ामी इलाहाबाद, मुफ़्ती नज़ीरुलअकरम नईमी मुरादाबादी मौलाना मुहम्मद हुसैन संभली, मौलाना अनवार अहमद शाहजहाँपुरी, मौलाना काज़ी शमसुद्दीन जाफ़री जौनपुरी, मौलाना कमाल अहमद तुलशीपुरी, मौलाना शअबान अली हुब्बानी गोन्डवी, सूफ़ी अज़ीज़ अहमद बरेलवी वग़ैरा जैसे जय्यद उलमा मशाइख़ मौजूद थे। सभी हज़रात ने उठ उठ कर यके बाद दीगरे ताजुशरीआ को मुबारकबादियाँ दीं।

(माहनामा नूरी किरन बरेली स:40, फ़रवरी 1962ई/1381हिजरी)

जानशीन-ए-मुफ़्ती आज़म को बचपन ही में हुज़ूर मुफ़्ती आज़म कुदिसा सिर्रहु ने बैअत फ़रमा लिया था और बीस साल के बाद खुद ही हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म ने मीलाद शरीफ़ की महफ़िल में ख़िलाफ़त व इजाज़त से

सरफराज़ फ़रमाया। जब हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म ने 15 जनवरी 1962 हिजरी 1381 हिजरी को ख़िलाफ़त अता फ़रमाई उस वक़्त शमसुलउलमा मौलाना काज़ी शमसुद्दीन अहमद रज़वी जअफ़री अलैहिर्रहमा, बुरहाने मिल्लत मुफ़्ती बुरहानुलहक़ रज़वी जबलपुरी अलैहिर्रहमा भी तशरीफ़ फ़रमा थे। मुफ़्ती बुरहानुलहक़ रज़वी जबलपुरी ने फ़रमाया कि हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म से मेरी गुफ़्तगु इस बारे में हुई है, कि हुज़ूर मुफ़्ती आज़म ने फ़रमाया था कि जानशीन अपने वक़्त पर वही होगा जिसे होना है। सदरुशशरीआ मौलाना अमजद अली रज़वी आज़मी अलैहिर्रहमा से दरयाफ़्त किया था कि हुज़ूर आप का जानशीन कौन होगा ? तो आला हज़रत ने हुज्जतुल इस्लाम अलैहिर्रहमा के मुतअल्लिक़ फ़रमाया बड़े मौलाना, मैंने अर्ज़ किया। उन के बाद फ़रमाया मुसतफ़ा रज़ा (हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म) अर्ज़ किया उन के बाद फ़रमाया जीलानी जब आला हज़रत ने नबीरा-ए-आला हज़रत मुफ़स्सिरे आज़म हिन्द अलैहिर्रहमा को मुरीद किया तो शजरा पर तहरीर फ़रमाया, "ख़लीफ़ा इन्शाअल्लाह बशर्त इल्म व अमल" यह रजिस्टर मुरीदीन में तहरीर फ़रमाया। हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म कुदिसा सिर्रहु ने अपने जानशीन के मुतअल्लिक़ इरशाद फ़रमाया कि इस(अल्लामा मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी) लड़के से बहुत उम्मीदें वाबस्ता हैं"।

हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म कुदिसा सिर्रहु ने आख़री ज़माने में एक तहरीर जानशीने-मुफ़्ती-ए-आज़म को एनायत फ़रमाई और उस में अपना "जानशीन" और

“काइम मक़ाम” मुक़र्रर किया,

14/15/नवम्बर 1984 ई को मारहरा मुत्तहश में उर्स कासमी की तक़रीब में अहसनुलउलमा मौलाना मुफ़्ती सैयद हसन मियाँ बरकाती सज्जादा नशीन ख़ानकाह बरकातिया मारहरा ने जानशीन मुफ़्ती आज़म का इस्तिक़बाल “काइम मक़ाम मुफ़्ती-ए-आज़म अल्लामा अज़हरी जिन्दाबाद” के नज़रा से किया और मजमअ कसीर में उलमा व मशाइख़ और फुज़ला व दानिशवशों की मौजूदगी में जानशीन मुफ़्ती-ए-आज़म को यह कह कर।

“फ़कीरे आस्ताना आलिया कादरिया बरकातिया नूरिया के सज्जादा की हैसियत से काइम मक़ाम मुफ़्ती आज़म अल्लामा अख़तर रज़ा ख़ाँ साहिब को सिलसिला कादरिया बरकातिया नूरिया की तमाम ख़िलाफ़त व इजाज़त से माज़ून व मजाज़ करता हूँ। पूरा मजमा सुन ले, तमाम बरकाती भाई सुन लो, और यह उलमा-ए-किराम (जो उर्स में मौजूद हैं) इस बात के गवाह रहें”।

बअ़दाहु अहसनुलउलमा मौलाना सैयद हसन मिया बरकाती मद्ज़ुल्लाहु ने जानशीने मुफ़्ती-ए-आज़म की दस्तारबन्दी की और नज़र भी पेश की।

सैयदुलउलमा मौलाना अश्शाह सैयद आले मुसतफ़ा बरकाती मारहरवी अलैहिर्रहमा ने जमीअे सलासिल की इजाज़त व ख़िलाफ़त अता फ़रमाई और ख़लीफ़ा-ए-इमाम अहमद रज़ा बुरहानेमिल्लत हज़ारत मुफ़्ती बुरहानुलहक़ रज़वी जबलपुरी अलैहिर्रहमा ने भी तमाम



सलासिल और हदीस शरीफ की खिलाफत से नवाजा।

वालिद माजिद मुफिस्सरे आजम हिन्द ने अपने फरजन्द अरजमन्द को कबल फरागत इल्मे आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा का जानशीन बनाया और एक तहरीर भी एनायत फरमाई।

रैहाने मिल्लत मौलाना मुहम्मद रैहान रज़ा बरेलवी मोहतमिम मन्ज़र इस्लाम अपनी इरादत में शाइअ होने वाले "माहनामा आला हज़रत" में बउनवान "कवाइफ़ दारुलउलूम" तहरीर फरमाते हैं। "वाजेह हो कि यह तहरीर उस ज़माने की है जब मफ़िस्सरे आजम हिन्द मौलाना इब्राहीम रज़ा बरेलवी कुदिसा सिर्रहु की तबीअत बहुत ज़्यादा अलील थी, और सारे लोगों को यह अंदेशा था कि अब मौलाना इब्राहीम रज़ा जीलानी बरेलवी ज़ाहिरी दुनिया से रुख़सत हो जायेंगे।

बवजहे अलालत यह तवक्क़ो नहीं कि अब ज़्यादा ज़िन्दगी हो, बिना बरीं ज़रूरत थी कि दूसरा काइम मक़ाम हो। लिहाज़ा अख़्तर रज़ा सल्लमाहु को काइम मक़ाम व जानशीने आला हज़रत बना दिया गया, जानशीन का अ़मामा बाँधा गया, और इबा पहनाई गई। यह दस्तार और इबा और तलबा की दस्तार व उबा अहले बनारस की तरफ़ से हुई।"

(माहनामा आला हज़रत बरेली स:32, दिसम्बर 1962ई 1382हिजरी)

**शेअर व शाइरी और नमूना-ए-कलाम**

जानशीने मुफ़्ती-ए-आज़म ने तीन ज़बानों में शेअर व शाइरी में तबअ आजमाई की। उसकी यहाँ पर क़द्रे

वज़ाहत की जाती है। आप को ज़माना-ए- तालिबेइल्मी में ही शेअर व शाइरी का शगफ़ हो गया था। मगर ज़्यादा रूजहान उसकी तरफ़ न था। इब्तिदा में शाइरी की इसलाम अपने असातिज़ा और वालिद माजिद से लेते रहे, ज़माना-ए-तालिबेइल्मी की नअतें, नज़में "माहनामा आला हज़रत" और माहनामा "नूरी किरन" में छपती रहीं। आस्ताना रज़विया पर मुन्अकिद होने वाले "मुशाइरे" में भरपूर हिस्सा लेते और आला कामयाबी होती, ताजुशरीफ़ा और आप के बरादर अक्बर मौलाना रेहान रज़ा ख़ाँ रहमानी बरेलवी की शाइरी का मवाज़ना भी होता। सुनने वालों का कहना है कि हर दो शख्स के कलाम में एक अलाहिदा ही चाशनी होती, आप को शेअरगोई का शौक ज़माना-ए-तालिबे इल्मी से ही था। शहर में मुन्अकिद होने वाले मुशाइरों में आप को मदद किया जाता। हाफ़िज़ इन्आमुल्लाह ख़ाँ तस्नीम हामिदी और जनाब उमीद रज़वी बरेलवी को वक़तन फ़ोक्तन अपने अशआर दिखालेते थे। उन्नीस साल की उमर की एक नअत पाक के चन्द शेअर मुलाहिज़ा हों।

इस तरफ़ भी एक नज़र महर दरख़शान जमाल  
हम भी रखते हैं बुहत मुदत से अरमान जमाल  
इक इशारे से किया शक़ माहे ताबाँ आप ने  
मरहबा सद मरहबा सल्ले अला शाने जमाल  
फ़र्श आँखों को बिछाओ रह गुज़र में आशिकों  
हर तरफ़ देखेंगे ऐसे जलवा-ए-शान जमाल  
मर के मिट्टी में मिले वह बा खुदा बिलकुल ग़लत

मिस्त्र साबिक अब भी हैं मरकद में सुलतान जमाल  
 हासिदाने मुस्तफा को दीजिए अछातर जवाब  
 दर हकीकत मुस्तफा प्यारे हैं सुलताने जमाल  
 मार्च 1987 ई. 1407 हिजरी को एक हादसा में चोट  
 आ जाने के बाद जानशीन मुफ्ती-ए-आज़म को कई रातें  
 ठीक से नीन्द न आई। शब 10 मार्च 1987 ई को रात  
 भर न सो सके, और उसी इज़ितराब के आलम में उन्होंने  
 मन्दर्जा जैल नअत अकदस कही।

चन्द अशआर दर्ज जैल हैं :

तलातुम है यह कैसा आँसुओं का दीदा-ए-तर में

यह कैसी मौजें आई हैं तमन्ना के समन्दर में

तजस्सुस करवटे क्यों ले रहा है कल्बे मुज़तर में

मदीना सामने है बस अभी पहुँचा में दम भर में

न रखा मुझ को तैबा के कफ़स में इस सितमगर ने

सितम कैसा हुआ बुलबुल पे यह कैद सितमगर में

सितम से अपने मिट जाओगे तुम खुद ऐ सितमगारो

सुनो हम कह रहे हैं बे खतर दौरे सितमगर में

नबाते जलवा गाह नाज़ मेरे दीदा व दिल को

कभी रहते वह इस घर में कभी रहते वह उस घर में

मदीने से रहें खुद दूर उस को रोकने वाले

मदीने में खुद अख़तर है मदीना चशमे अख़तर में

जब जानशीने मुफ्ती-ए-आज़म को गुम्बदे खज़रा  
 की ज़ियारत करे बग़ैर हिन्दुस्तान वापस भेज दिया गया  
 तो हुकूमत सऊदिया के जुल्म व बरबोरियत से मुतास्सिर  
 हो कर यह नअत पाक कही, इस मौका पर जब 17



फरवरी 1987 ई को झरया (बिहार) के एक जलसा में एक शाइर ने इसी ज़मीन में एक नअत पढ़ी थी। आप ने बरजस्ता स्टेज पर ही सात शेर कहे और बकिया अशआर ट्रेन में कहे। चौदह अशआर में से चन्द मुलाहिजा हों।

दागे फुरकते तैबा कल्बे मुजमहिल जाता  
काश गुम्बदे ख़ाजरा देखने को मिल जाता  
मेरा दम निकल जाता उन के आस्ताने पर  
उन के आस्ताने की खाक में मैं मिल जाता  
मौत लेके आजाती जिन्दगी मदीने में  
मौत से गले मिल कर जिन्दगी में मिल जाता  
दिल पे जब किरन पड़ती उन के सब्ज गुम्बद की  
उसकी सब्ज रंगत से बाग बनके खिल जाता  
फुरकते मदीना ने वह दीए मुझे सदमे  
कोह पर अगर पड़ते कोह भी तो हिल जाता  
दरपे दिल झुका होता इज़न पाके फिर बढ़ता  
हर गुनाह याद आता दिल खजिल खजिल जाता  
मेरे दिल में बस जाता जलवाज़ार तैबा का  
दागे फुरकत तैबा फूल बन के खिल जाता  
उनके दरपे अखातर की हसरतें हुई पूरी  
साइले दर अक़दस कैसे मन्फ़अिल जाता

**तस्नीफ़ व तराजीम:**

फकीहे इस्लाम मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा अज़हरी बरेलवी ने अपनी दीगर मसरूफ़ियात के बावजूद तस्नीफ़ व तालीफ़ का सिलसिला जारी रखा। कसीर तअदाद में प्रोग्रामों और तब्लीगी असफ़ार की वजह से यह काम

कम हो पाता है। मगर हज़रत की आदतें मुबारका हैं कि सफ़र व हज़र में मजामीन, फ़तावा, तस्नीफ़, व तालीफ़ की मसरूफ़ियात में इन्हें माक में कमी नहीं आने देते हैं। हज़रत का मामूल है कि रोज़ाना सुबह व शाम अरबी इबारात का तर्जमा उर्दू ज़बान में और उर्दू ज़बान का तर्जमा अरबी में मरकज़ी दारुलइफ़ता के मुफ़्तियाने किराम या जामिआतुर्रज़ा के आसातिज़ा को इमला करा देते हैं।

फ़तावा जो दारुलइफ़ता में मुफ़्तियाने किराम हल नहीं कर पाते हैं, उनको जमा कर दिया जाता है और जब बाहर तब्लीगी दौरे पर तशरीफ़ ले जाते, तो वह मसाइल साथ होते, ट्रेन वगैरा में सवालात के जवाबात कलम बन्द करते। आज ताजुशशरीआ दुनिया-ए-इस्लाम के लिए मरजा-ए-उलमा व फ़ुक़हा बने हुये हैं।

**इमामत व ख़िताबत :**

हज़रत ताजुशशरीआ ज़माना तालिबे इल्मी से ही इमामत के फ़राइज़ अन्जाम देने लगे थे। वालिद माजिद मुफ़स्सिरे आज़म हिन्द मौलाना इब्राहीम रज़ा ख़ाँ जीलानी बरेलवी ने बाज़ाब्ता तौर पर "रज़ा मस्जिद" की इमामत व ख़िताबत का मन्सबे जलीला के लिए तहरीरी वसीयत नामा जारी किया था। हुज़ूर मुफ़ती-ए-आज़म कुददुस सिरिहू का मामूल था कि जब ताजुशशरीआ हमराह होते तो आप को ही नमाज़ पढ़ाने का हुक्म फ़रमाते। एक अर्से दराज़ से नमाज़ ईदैन बरेली की ईदगाह में इमामत के फ़राइज़ अन्जाम दे रहे हैं। मन्सब फ़र्ज़ शनासी और पुरवकार तरीक़े से मुतअल्लिका फ़राइज़ अन्जाम देते हैं।

जब आप कुरआन शरीफ की तिलावत करते हैं, या खुल्ना पढ़ते हैं तो लेहने दाऊदी की याद कानों में बाजगस्त करने लगती हैं। आप की किरअत में अरबी मिस्री लब व लहजा पाया जाता है।

**बे मिसाल हुस्ने खत :**

हज़रत ताजुशरीआ फ़न्ने ख़िताती में महारत रखते हैं। इसलिए आप के मकातीब, मज़ामीन व मक़ालात और फ़तावा हुस्ने तहरीर के लिहाज़ से बे मिसाल हैं। उन तहरीरात को देखते ही दिल बाग़ बाग़ हो जाता है, इल्म व फज़ल के साथ साथ यह खूबी बहुत कम उलमा व मुफ़्तियाने एज़ाम में पाई जाती है। हज़रत का तर्ज़ ख़िताती अहद व ज़मान के ऐतिबार से बदलता रहा है मगर हर ज़माना की तहरीरें अपने आप में आला नमूना और बे मिसाल ख़िताती का आइना दार हैं। ऐसा मालूम होता है कि मोतियों की लड़ियाँ पिरोई हुई हैं। दर हकीकत हुस्ने तहरीर से खुद शख़्सियत का वह ज़माले मख़फ़ी बेहिजाब हो जाता है जिस तक रसाई बहुत मुश्किल है। हज़रत के मकातिब के हुस्न ज़ाहिरी से हुस्न मअनवी आशकार होता है। राकिमुस्सुतूर के पास हज़रत की तहरीरात अहद ब अहद मौजूद हैं। ज़माना-ए तालिबे इल्मी, बादे फ़रागत, अहदे दर्स व तदरीस, अहदे दारुलइफ़ता, अहदे जानशीनी, ज़माना-ए-शबाब और मौजूदा वक़्त की तहरीरात महफूज़ हैं। इस से हुस्न तहरीर और फ़न्ने ख़िताती का बाखूबी अन्दाज़ा होता है। और हज़रत की एक खुसूसियत है कि फुलस्केप के कागज़ पर बग़ैर नीचे



कुछ रखे लिखते जाते हैं और मजाल है कि कोई लाइन ज़रा सी भी टेढ़ी हो जाये।

**उम्मत मुस्लिमा की फ़िक्र मन्दी :**

जानशीन-ए-हुज़ूर मुफ़ती-ए-आज़म जहाँ उम्मत मुस्लिमा की मज़हबी रहनुमाई फ़रमा रहे हैं, वहीं कौमी व मिल्ली मसाइल में भी रहनुमाई का फ़रीज़ा अन्जाम दे रहे हैं। आलमे इस्लाम को दरपेश मसाइल के हल और उलमा-ए-अहले सुन्नत के इन्दिया के इज़हार और बैनलअक़वामी ताक़तों पर दबाव बनाने के लिए आप ने "उर्स रज़वी" के हसीन मौक़ा पर 22/जुलाई 1995 ई. में मर्कज़ी दारुलइफ़ता सौदागरान में काइदीने मिल्लत, उलमा, मशाइख़ और अइम्मा मसाजिद का इजलास बुलाया जिस में मुल्क व बैरूने मुल्क में उम्मत मुस्लिमा के मुख़्तलिफ़ पेचीदा मसाइल पर बहस व मुबाहि़सा के बाद क़रारदाद पास की गई। उन क़रार दादों में, यक़साँ सीवल कोड, के नफ़ाज़ की मुख़ालिफ़त, तंज़ीमे अइम्माए मसाजिद के ज़रीआ औकाफ़ पर गासिबाना कब्ज़ा, उलूमे दीनी और दुनियावी की तरफ़ मुसलमानों की ख़ुसूसी तवज्जह मरकूज़ करने, आपसी इन्तिशार व इख़्तिलाफ़ को मैदाने जंग व जिदाल के बजाय अपने काइदीन की बारगाह में तवज्जो तलबी, चेचेनया और फ़िलिस्तीनी मुसलमानों की हिमायत, टाडा के तहत गिरफ़्तार मुसलमानों की आज़ादी वगैरा वगैरा उमूर पर हुकूमते हिन्द से मुतालबात किए गये।

इस मुश्तरका अख़बारी एलानिया पर हज़रत के

अलावा अल्लामा जियाउलमुस्तफा कादरी, मौलाना अब्दुलमुबीन नोअमानी, मौलाना अब्दुलमुस्तफा रुदोलवी, अलहाज मौलाना मुहम्मद सईद नूरी, मौलाना रियाज हैदर हनफी, मौलाना अनवार अहमद कादरी, मौलाना आरज़ू अशरफी, अल्लामा मुहम्मद हुसैनी अशरफी, मौलाना मुहम्मद हुसैन अबुलहक्कानी, मुफ्ती मुहम्मद मतीउर्रहमान मुज़तर रज़वी, मौलाना बशीरुलकादरी वगैरा के दस्तखात हैं।  
तहफ़्फुजे मुस्लिम पर्सनल लॉ की तहरीक :

जानशीन-ए-हुज़ूर मुफ्ती-ए-आज़म अल्लामा मुहम्मद अख़तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी बरेलवी उम्मत मुस्लिमा की रहनुमाई और कियादत में हमेशा पेश पेश रहे। एक ज़माना वह था जब शाह बानो मसअला को ले कर पूरे मुल्क में मुस्लिम पर्सनल लॉ पर हमले किए जा रहे थे, सुप्रीम कोर्ट ने शरीअते इस्लामिया के मन्शा व मबदा के ख़िलाफ़ फैसला सादिर कर दिया था। सुप्रीम कोर्ट के फैसला के ख़िलाफ़ उलमा अहले सुन्नत ने चैलेंज किया और पूरे मुल्क में एहतिजाजी मज़ाहिरा व इजलास के ज़रीआ अपने जज़बात व एहसासात को हुकूमते हिन्द तक पहुँचाया। अवामी सतह पर दबाव इस क़दर बढ़ गया था कि हुकूमते हिन्द को मजबूरन पार्लियामेंट के ज़रीआ क़ानून बना कर सुप्रीम कोर्ट के फैसला को कलअदम क़रार देना पड़ा। (तहफ़्फुजे मुस्लिम पर्सनल लॉ अज

मौलाना यासीन अख़तर मिस्बाही मतबूआ दारुलक़लम देहली)

**हुकूमती ओहदा से इस्तिग़ना :**

उत्तर प्रदेश के साबिक वज़ीर आला नारायण दत्त

तैवारी (गवर्नर आंध्रा प्रदेश) खानदाने आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कादरी फ़ाज़िले बरेलवी से गहरा तअल्लुक रखते हैं। उन्होंने अपने अहद में हज़रत के बरादरे अकबर मौलाना रेहान रज़ा खाँ रहमानी मियाँ को एम-एल-सी-नामज़द किया था। उनकी मुक़र्ररा मीआद ख़त्म हो जाने के बाद जानशीन-ए-मुफ़्ती-ए-आज़म के लिए कोशा रहे मगर हज़रत ने मना फ़रमा दिया। 1989 ई में जनाब उस्मान आरिफ़ नक़्शबंदी (गवर्नर उत्तर प्रदेश) आप के दरे दौलत पर हाज़िर हुये और एम-एल-सी-नामज़द करने की हुकूमते उत्तर प्रदेश की मंशा ज़ाहिर की मगर हज़रत ने ओहदा क़बूल करने से मना फ़रमा दिया। उत्तर प्रदेश के गवर्नर उस्मान आरिफ़ ने आप से बहुत मिन्नत व समाजत की मगर आप राज़ी न हुये। उस्मान आरिफ़ साहब आप से क़ल्बी लगावो और अकीदत रखते थे। औलिया-ए-किराम के आस्तानों पर हाज़री देना और मशाइख़ से दुआयें लेना उन का मामूल था। हज़रत की बेपनाह इज़्ज़त और अदब व एहतिराम करते थे। मगर कुरबान जाइये इस अल्लाह के वली पर कि दुनिया को ग़ालिब होने न दिया और हुकूमती ओहदा से हमेशा दूर रहे। क्या आज के तरक्की याफ़ता दौर में ऐसा मुम्किन है?

**मुरादाबाद के मुक़द्दमा में शानदार कामयाबी :**

अल्लाह तआला ने जानशीन-ए-हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म अल्लामा अख़तर रज़ा अज़हरी मदज़ुल्लाहु को वह मक़बूलियत अता फ़रमाई है कि जिस इलाके में पहुँच



जायें वह इलाका का ऐलाका आप का गिरवीदा हो जाता है। मुफ्ती सय्यद शाहिद अली रज़वी रामपुरी के बकौल :

जहाँ दूसरे पीराने एज़ाम सालिहासाल लोगों को दाखिले सिलसिला करने के लिए मेहनत करते हैं, तरगीब दिलाते हैं, मगर हज़रत सिर्फ़ उस जगह एक घन्टा के लिए तशरीफ़ ले जाये तो वह लोग आप के नूरानी जलवा ज़ेबा को देखते ही मुरीद होने के लिए बिला तरगीब बे ताबाना बेकरार हो जाते हैं। यह खुदादाद मकबूलियत आप को ही मयस्सर है।

इसी मकबूलियत व शोहरत को देखते हुये हासिदीन से न रहा गया, उन से कुछ न बन पड़ा तो हज़रत के खिलाफ़ एक मुक़दमा दाइर कर दिया। पहले थाना नाग फ़नी मुरादाबाद में एफ़-आई-आर-दर्ज कराने के लिए इन्स्पेक्टर से रज़ूअ किया। जब उस ने इस फ़र्जी रिपोर्ट पर मुक़दमा काइम करने से मना कर दिया तो उस हासिद ने 20/नोवम्बर 1996 ई. को मुरादाबाद कोर्ट में इस्तिगासा दाइर किया। जिस की बुनियाद पर थाना में एफ़-आई-आर-दर्ज हो गई। जब बरेली इत्तिलाअ पहुँची तो साहबज़ादा गिरामी मौलाना असजद रज़ा ख़ाँ कादरी, मुफ्ती अब्दुलमन्नान कलीमी मुरादाबादी, राकिमुस्सुतूर और बरादरम मुजीब रज़ा ख़ाँ मरहूम इब्न हज़रत मौलाना हबीब रज़ा ख़ाँ बरेलवी, अली जनाब अफ़रोज़ मियाँ मुरादाबाद पहुँचे। कोर्ट में जानकारी हासिल की, बादोहु अपना जवाब दाखिल किया गया। हमारे वकील के जवाबात सुन कर फ़ाज़िल जज हैरान

रह गया। जज ने 22 फरवरी 1999 ई को हज़रत के हक में 8 सफ़हात पर मुश्तमिल शानदार फैसला सादिर किया। यह बात याद रहे कि बावजूद मुख़ालिफ़ की हजार कोशिशों के हज़रत कभी भी कोर्ट तशरीफ़ नहीं ले गये। मुक़दमा की पैरौकारी राकिमुस्सुतूर ने की, हर तारीख़ पर बरेली से मुरादाबाद जाता था अलहम्दु लिल्लाह हक़ की फ़तह व नुसरत हुई और बातिल शिकस्त व रीख़्त हुआ।  
हालते हाज़िरा के शरई तकाज़े:

एक मुफ़ती के लिए ज़रूरी है कि ज़माना के हालात और कवाइफ़ पर नज़र रखते हुये शरई और आईली कानूनी रहनुमाई का फ़रीज़ा अन्जाम दे। 1995 ई में हुकूमते हिन्द के शोअबा इलेकशन कमीशन ने तमाम बाशिन्दगाने मुल्क के लिए "शनाख़्ती कार्ड" का रखना और इस्तेमाल करना ज़रूरी करार दे दिया था। इस "शनाख़्ती कार्ड" में नाम वलदियत और पूरा पता व उमर दर्ज होती है। साथ ही फ़ोटो चस्पॉ होता है। फ़ोटो हराम होने की वजह से आस्ताना आलिया रज़विया के मरकज़ी दारुलइफ़ता में "शनाख़्ती कार्ड" बनवाने या न बनवाने के लिए सवालात का अंबार लग गया। दूसरी तरफ़ अलेकशन कमीशन ने भी सख़्ती करना शुरू कर दी कि हर काम में मसलन बैंक अकाउन्ट, ख़रीद व फ़रोख़्त, मुलाज़िमत तालीम व तदरीस और वोटिंग वगैरा में इसी शनाख़्ती कार्ड के इस्तेमाल को लाज़िमी करार दिया गया है। इसी दौरान अलजामिअतुल अशरफ़िया मुबारकपुर में "मज्लिसे शरई" की मीटिंग का ऐहतिमाम हुआ। हज़रत जानशीनए मुफ़तीए आजम ने "मज्लिसे शरई" की सदरत

फरमाई। रईसुत्तहरीर अल्लामा अरशदुलकादरी की तजवीज पर आप ने "शनाख्ती कार्ड" बनवाने की इन अल्फाज के साथ इजाजत दी कि "इस सूरत में तलब के वक़्त ज़रूरते मलजिया या हाजते शदीदा मुतहक्क होगी। लिहाजा खास शनाख्ती कार्ड के लिए तस्वीर खिचवाने की इजाजत होगी" (फरवरी 1995 ई मजलिस शरई मुबारकपुर)

अवाम की शदीद तरीन ज़रूरत के तहत हज़रत ने मशरूत इजाजत अता फरमाई, तो एक तब्का में नुक्ता-चीनी शुरू हुई, जब इस की ख़बर हज़रत को हुई तो आप ने एक वज़ाहती बयान जारी फरमाकर बहस को बन्द कर दिया। लिखते हैं :

ऐसे नये मसाइल जो फ़िलवाके फ़रइया अमलिया हों, और उन से मुतअल्लिक कोई सरीह जुज़इया न मिल सके तो हर आलम नहीं बल्कि माहिर व तजर्बाकार मुफ़ती की तरफ़ रजूअ करना चाहिए। और उस मुफ़ती पर लाज़िम है कि उसूले शरई के पेशे नज़र इस का हुक्म सादिर फरमाये। उसूले शरअ से हट कर फ़तावा देना हर ग़िज़ जाइज़ नहीं। अगर उस ने जिसे दलील क़रार दिया और फिर वाज़ेह हुआ कि यह दलील, दलीले शरई नहीं तो फ़ौरन उस पर रजूअ लाज़िम है और इक् का ऐलान करना चाहिए। किसी हराम शय के मुबाह होने का फ़तवा उस वक़्त दिया जायेगा जबकि वहाँ यह ज़ाब्त सादिक आये "अज़्ज़रूरात तन्बीहुलमहज़ूरात" और मुफ़ती को तयक्कुन हो जाये कि इस ज़रूरते शरइया के मुआरिज़ कोई दूसरा काइदा शरइया नहीं है। (कल्मी फ़तवा)



अरब दुनिया में मसलके आला हज़रत की इशाअत:

जानशीन-ए-हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म ने हिन्द व पाक के अलावा दरजनों अरब ममालिक का तब्लीगी सफ़र फ़रमाया, और अब भी यह सिलसिला जारी है, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कादरी फ़ाज़िले बरेलवी के मसलक की तरवीज व इशाअत के लिए आप अंथक ज़द व जिहद फ़रमा रहे हैं। उस की एक अज़ीम मिसाल यह है कि रमज़ानुलमुबारक 1404 हिजरी "रोज़नामा अलहुदा अबूज़हबी" ने ख़ुसूसी नम्बर शाइ किया। जिस में यह लिखा कि "बरेलवियत एक नया फ़ितना है, नया मज़हब है" ताजुशरीअ को यह पढ़ कर शदीद बेचैनी हुई कि अरब की दुनिया में आला हज़रत कुददुस सिर्रहु को बदनाम किया जा रहा है। आप ने "मुत्तहिदा अरब इमारात" से शाइ होने वाले (11) ग्यारह मुल्की अख़बारात से रज़ूअ किया और "रोज़नामा अलहुदा" का जवाब अरबी में तरतीब दे कर शाइ कराया। और बाज़ाब्ता तौर पर बर्र सगीर में एक मुहिम चलाई ताकि उन अख़बारात पर दबाव बने और आला हज़रत कुददुस सिर्रहु के मसलक को बदनाम करने वालों की साज़िश नाकाम हो जाये। हज़रत ने हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और बंगलादेश में दस्तख़ती मुहिम की अपील भी जारी की।

हुज़ूर मुफ़्तीए आज़म के नमाज़े जनाज़ा की इमामत :

हज़रत ताजुशरीअ जब दौलत कदे पर जलवा अफ़रोज़ होते हैं तो अहले शहर का यह मामूल रहता है कि किसी ने वसीयत की है कि अगर मेरा इन्तिकाल हो जाये तो हज़रत से नमाज़े जनाज़ा पढ़वाई जाये वगैरा वगैरा। आप बा हुस्ने तबीब व ख़ातिराइन लोगों की दअवत को क़बूल फ़रमाते हैं, कहीं नमाज़ जनाज़ा की इमामत के लिए तशरीफ़ ले जा रहे हैं तो किसी की

दुकान व मार्केट का इफतेताह करने जा रहे हैं, फिर कहीं किसी के घर में महफिले मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम में शिरकत करने जा रहे हैं। कहीं मुरीदीन की दअवत पर बैअत के लिए जलसे को रौनक बख्श रहे हैं।

हुजूर मुफ्ती-ए आजम मौलाना मुस्तफा रज़ा खाँ बरेलवी कुदिदसा का विसाल 14मुहर्रमुलहराम 1402/12 नवम्बर 1981 ई को शब में हुआ। हुजूर मुफ्तीए आजम ने अपनी नमाज़े जनाज़ा की इमामत के लिए किसी भी "सय्यद" के लिए वसीयत नहीं फरमाई थी मख़दूमा साहिबा छोबी (अहलिया मोहतरमा हुजूर मुफ्तीए आजम)ने फरमाया "कि नमाज़े जनाज़ा मौलाना अख़्तर रज़ा साहिब पढ़ायें, अगर वह नहीं पढ़ाते हैं तो फिर मौलाना तहसीन मियाँ पढ़ायें।" हज़रत मख़दूमा साहिबा अलैहिरमा के हुक्म के मुताबिक़ हुजूर मुफ्तीए आजम हिन्द कुदिदसा सिरहु की नमाज़े जनाज़ा ताजुशरीआ अल्लामा अख़्तर रज़ा खाँ अज़हरी ने पढ़ाई। मगर चन्द मुत्तेबईन ने यह मशहूर कराया कि नमाज़े जनाज़ा की इमामत हज़रत मौलाना मुख़्तार अशरफ़ कछौछवी ने पढ़ाई, जो सरासर ग़लत फ़हमी पर मब्नी है। ताजुशरीआ ने अपने एक मक़ाला में खुद इस मसअला की वज़ाहत की हैं।

"जददा मोहतरमा हज़रत छोबी साहिबा ने हुजूर मुफ्तीए आजम की नमाज़े जनाज़ा की इमामत के लिए दो अफ़राद को नामज़द किया था, एक मैं फ़कीर, दूसरे सदरुलउलमा हज़रत मुफ्ती तहसीन रज़ा खाँ साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि और इस सिलसिला में खुद हुजूर मुफ्तीए आजम नव्वरा हुल्लाह मरक़दा हु ने किसी के लिए कोई वसीयत न फरमाई थी, मुझे तज़करा को छेड़ने का अफ़सोस है, मगर यह इसलिए ज़रूरी है कि बाज़

हलके यह खबर उड़ा रहे हैं कि हुजूर मुफ्तीए आजम अलैहिर्रहमा ने अपनी नमाजे जनाजा के लिए किसी सय्यद को नामजद फरमाया था।"

यह ग़लत खबर इतनी मशहूर की गई कि हुजूर मुफ्ती आजम के तज़करा नवीसों ने भी इसी को बार बार दुहराया जब कि राकिमुस्सुतूर ने तक़रीबन दस साल क़ब्ल अपनी एक किताब बनाम "हुजूर मुफ्तीए आजम के सियासी अफ़कार" में हज़रत की इमामत के तअल्लुक से लिखा था, इस पर बाज़ ने ऐअतिराज़ किया, बादहु हज़रत की तफ़सीली तहरीर आ जाने से अहले इल्म और अ़वाम पर हकीकते हाल का इंक़िशाफ़ हो गया। राकिमुस्सुतूर (शहाबुद्दीन) की तज़करा नवेसियों से गुज़ारिश है कि वह तहकीकी बुनियादों और दरायात की कसौटी पर परखी गई रिवायत को ही सफ़हे क़िरतास पर नक़ल करें। इस से ग़लतुल अ़वाम के रास्ते पर चलने से बचा जा सकता है।

जब हज़रत मख़ादूमा मोहतरमा साहिबा का इन्तिक़ाल हुआ तो आप ने क़ब्ल विसाल वसीयत फ़रमा दी थी कि मेरी नमाजे जनाजा मौलवी अख़्तर मियाँ सल्लमहु पढ़ायेंगे। 10मार्च 1985 ई को बाद नमाजे ज़ोहर इस्लामिया इन्टर कालेज मैदान में हज़रत ने नमाजे जनाजा की इमामत के फ़राइज़ अंजाम दिए।



## सुबूते करामाते औलिया अल्लाह

अल्लाह तआला के मकबूल व मकरिब और नेक बन्दों में कुछ सालिक और कुछ मजज़ूब होते हैं, जिन्हें अल्लाह का वली कहा जाता है। सालिक अल्लाह के वह महबूब और नेक बन्दे होते हैं, जो मुआशिरे में रह कर दीने इस्लाम पर अमल पैरा और "الحب في الله والبغض في الله" के आईना दार होते हैं। रहे मजज़ूब तो वह फना फिल्लाह होते हैं, जो जिक्रे इलाही में महवे और दीन व मुआशिरे की बज़ाहिर कोई परवाह नहीं रखते। ऐसे ही लोगों के बारे में, अल्लामा यूसुफ़ नब्हानी अलैहिर्रहमा ने एक हदीस शरीफ़ नक़ल की है, "कुछ परा गन्दा बाल, गुब्बार से अटे हुये और फटे कपड़ों वाले होते हैं, उनकी कोई इंसान परवाह तक नहीं करता, लेकिन अगर वह किसी बात पर कस्म खुदा की खा ले तो अल्लाह तआला उन की कस्म पूरी फरमा देता है।"

हदीस शरीफ़ में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने किसी मखसूस बात पर कस्म खाने की वज़ाहत नहीं फरमाई, बल्कि मजमूर्ई तौर पर किसी भी बात को वह चाह लें और ज़िद कर लें तो यकीनन वह बात अल्लाह तआला पूरी फरमाता है।

**विलायत किसे कहते हैं :**

विलायत का मोहतरम व मुअज़्ज़ाज़ दर्जा किन लोगों को कब मिलता है, इस के बारे में मुहक्किकीन ने लिखा है, कि वली वह मोमिने सालेह है जिस को मअरफ़त

व कुर्बे इलाही का एक खास दर्जा मिलता है, और फिर शरीअत के मुताबिक इबादत व रियाज़त करने के बाद विलायत का अज़ीम मर्तबा हासिल होता है, और कभी इब्तिदन बिला रियाज़त व मुजाहिदा के भी मिल जाता है।

औलियाए किराम में सब से बड़ा दर्जा खुलफाए अरबा यानी सय्यदिना सिद्दीके अकबर, सय्यदिना फारूके आजम, हज़रत उस्मान ग़नी और, हज़रत मौला अली रिज़वानुल्लाह तआला अलैहिम अजमईन को हासिल है, उस के बाद गौस, कुतब, अब्दाल, औताद, नक़्बा, आसार व कियाफ़ा, नज्बा, हवारी हज़रात, रजई हज़रात, ख़ात्म, रिज़ालुलग़ैब व ग़ैराहुम, औलिया किराम के तबकात, मरातिब और अक़साम को, हज़रत अल्लामा यूसुफ़ नब्हानी अलैहिर्रहमा ने तफ़सील से, अपनी किताब "जामेअ करामात औलिया" में जिक्र फ़रमाया है। तफ़सील की यहाँ गुन्जाइश नहीं है। वैसे हर ज़माने में औलियाए किराम होते हैं, कोई ज़माना ऐसा नहीं जिस में औलिया हज़रात न रहे हों, कियामत तक यह हज़रात होते रहेंगे, मगर उन का पहचानना आसान नहीं।

वली कौन हज़रात होते हैं, इस तअल्लुक से हज़रत अल्लामा यूसुफ़ नब्हानी अलैहिर्रहमा ने, अल्लामा तफ़ताज़ानी, अल्लामा कैशरी और इमाम राज़ी अलैहिमुर्रहमा के नज़रिया को बयान फ़रमाया है कि "वली वह होता है जिस की ताआत में तसलसुल हो, या उस की हिफ़ाज़त व निगरानी का ज़िम्मा अल्लाह करीम ने अपने ज़िम्मे ले

लिया हो"अब उस का खुज़लान व रुस्वाई नहीं होती। और खुज़लान यह है कि वह इसयान व नाफरमानी पर कादिर हो जाये,और तसलसुल इताअत,उसे इस नाफरमानी से रोक देता है। और कुदरते ताआत अल्लाह की तौफीक से हमेशा उस के साथ रहती है। अल्लाह करीम खुद फरमाता है"وهو يتلى الصالحين" यानी अल्लाह नेक लोगों का मुतवल्ली होता है लेकिन याद रहे कि वली नबियों की तरह मासूम नहीं होते बल्कि वह महफूज़ होते हैं। महफूज़ का मतलब यह है कि वह गुनाहों पर इसरार नहीं करते।

(जामेअ करामात औलिया अज़ अल्लामा यूसुफ नब्हानी स 127 मतबूआ देहली)

विलायत के बा अज़मत दर्जे पर वह शख्स फ़ाइज़ होगा,जो اطيعوا الله واطيعوا الرسول की अमली तफ़सीर,और الحب فى الله والبغض فى الله का आईना दार हो और अम्रबिलमअरुफ़ पर अमलपैरा,और नहीं अनिल मुन्कर से इज्तिनाब करता हो।

अब आइये ज़रा औलियाए किराम की अज़मत व अहमियत,तसरूफ़ व करामात को कुरआन व अहादीस के तनाज़िर में मुलाहिजा करें।

आयाते कुरआनिया से सुबूते विलायत व करामत:

الا ان اولياء الله لا خوف عليهم ولا هم يحزنون الذين آمنوا  
وكانوا يتقون لهم البشرى فى الحياة الدنيا وفى الآخرة لا تبدل  
لكلمات الله ذلك هو فوز العظيم (سورة يونس آية ६२)

सुन लो बेशक अल्लाह के वलियों पर न कुछ खौफ़ है और न कुछ ग़म,वह जो ईमान लाये और



परहेजगारी करते हैं, उन्हें खुशखबरी है दुनिया की ज़िन्दगी में और आखिरत में अल्लाह की बातें बदल नहीं सकते यही बड़ी काम्याबी है।

दूसरी जगह यूँ इरशाद है:

وهزى اليك بجذع النخلة تساقط عليك رطبا جنيا فكلى و  
اشربى - (سورة مريم، آية ٢٥)

और खजूर की जड़ पकड़ अपनी तरफ़ हिला तुझ पर ताज़ी पक्की खजूरें गिरेंगी तो खा और पी।

एक दूसरी जगह इरशाद है :

كلما دخل عليها زكريا للمحراب و جد عندها رزقا قال يا  
مريم انى لك هذا - قالت هو من عند الله ان الله يرزق من يشاء  
بغير حساب (سورة عمران، آية ٣٥)

जब ज़क़रिया उस के पास उस की नमाज़ पढ़ने की जगह जाते, उस के पास नया रिज़क़ पाते, कहा ऐ मरयम! यह तेरे पास कहाँ से आया ? बोलीं वह अल्लाह के पास से है, बेशक अल्लाह जिसे चाहे उसे बे गिनती दे।

واذا اعتزلتموهم وما يعبدون الا الله فآو الى الكهف ينشر  
لكم ربكم من رحمته ويهئى لكم من امركم مرفقا . و ترى الشمس  
اذا طلعت تزاو عن كهفهم ذات اليمين و اذا غربت تقرضهم ذات  
الشمال (سورة الكهف، آية ١٥)

और जब तुम उन से और जो कुछ वह अल्लाह के सिवा पूजते हैं सब से अलग हो जाओ तो ग़ार में पनाह लो तुम्हारा रब तुम्हारे लिए अपनी रहमत फैला देगा और तुम्हारे काम में आसानी के सामान बना देगा और ऐ

महबूब! तुम सूरज को देखोगे कि जब निकलता है उन के गार से दाहनी तरफ़ बच जाता है और जब डूबता है तो उन से बायें तरफ़ कतरा जाता है।

अहादीसे करीमा से सुबूते विलायत व करामात :

ما عرج في الصحيحين عن أبي هريرة رضي الله عنه أن النبي صلى الله تعالى عليه وسلم قال، لم يتكلم في المهد الا ثلاثة، عيسى ابن مريم عليها السلام و صبي في زمن جريح الناسك و صبي آخر، اما عيسى فعرفتموهم، و اما جريح فكان رجلا عابداً بيني اسرائيل كانت له ام، فكان يوما يصلي اذ شتقت اليه امه، فقالت يا جريح فقال يا رب الصلوة خير ام رؤيتها ثم صلى فدعته ثانيا فقال مثل ذلك حتى قال ثلاث مرات و كان يصلي ويدعها فاشتد ذلك على امه قالت اللهم لاتمته حتى تزيه المؤسسات، و كانت زانية هناك فقالت لهم انا افتن جريح حتى يزني فاتته فلم تقدر على شئ و كان هناك راع يا وئ بالليل الي اصل صومعته فلما اعيها راودت الراعي عن نفسها فاتاها فولدت، ثم قالت ولدي هذا من جريح، فاتاه بنو اسرائيل و كسروا صومعته و شتموه فصلى و دعا ثم نحس الغلام، فقال ابو هريرة كاني انظر الى النبي صلى الله تعالى عليه وسلم حين قال بيده يا غلام من ابوك؟ فقال الراعي، فندم القوم على ما كان منهم و اعتذر اليه و قالوا بنبي صومعتك من ذهب او فضة فابى عليهم و بناها كما كانت، و اما الصبي لاخر فان امرأة كانت معها صبي لها ترضعه اذا مر بها شاب جميل ذو شارة حسنة فقالت اللهم اجعل بنى مثل هذا فقال الصبي لا تجعلني مثله ثم مرت بها امرأة ذكروا انها سرقت وزنت و عوقبت، و فقالت اللهم لا تجعل ابني مثل هذا فقال الصبي اللهم اجعلني مثلها فقالت له امه في ذلك فقال ان الشاب كان جبارة من الجبائرة فكرهت ان اكون مثله و ان هذا قيل انها زنت و لم تزني و

قيل انها سرقت ولم تسرق وهي تقول حسبى الله.

बुखारी व मुस्लिम में हज़रत अबूहुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि नबी अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, फ़न घोड़े में सिर्फ़ तीन बच्चों, ईसा बिन मरयम अलैहिस्सलाम, ज़ाहिद जरीह के दौर में एक बच्चे और एक और बच्चे ने गुफ़्तगु की है, ईसा अलैहिस्सलाम का मुआमला तो तुम्हें (सहाबा) मालूम है।

अब रहा जरीह तो वह इस्राईलों में एक आबिद शख़्स था, उसकी वालिदा थीं, वह एक दिन नमाज़ पढ़ रहा था कि वालिदा को उस का प्यारा आया, उस ने पुकारा जरीह! जरीह कहने लगा, मौला करीम! नमाज़ बेहतर है या माँ की ज़्यारत? फिर नमाज़ पढ़ने लग गया, माँ ने दो बारा पुकारा, जरीह ने फिर पहला अमल दोहराया, तीन दफ़आ ऐसा ही हुआ, कि वह नमाज़ में मसरूफ़ रहा और माँ का ख़्याल न किया, माँ को बात नागवार गुज़री, उस ने बतौर बद दुआ कहा अल्लाह! बदकार औरतों के फ़ितने में मुब्तला करने से पहले उसे मौत न देना, वहाँ एक बदकार औरत रहती थी, इस्राईलों से कहने लगी, मैं जरीह को फ़ितनाए ज़ना में मुब्तला कर दूँगी, वह उस के पास आई मगर वह उस के हथ्थे न चढ़ सका, एक चरवाहा जरीह के गिरजे के पास रात गुज़ार रहा था, जब जरीह आमादए गुनाह न हुआ तो चरवाहा से बदी की और बच्चा जन दिया, फिर ऐअलान करने लगी कि बच्चा जरीह का है, इस्राईलों ने जरीह का गिरजा गिराया और उसे



गालियाँ दीं, जरीह ने नमाज़ पढ़ी दुआ मांगी फिर बच्चे को हाथ से चुका दिया, अबूहुरैरा कहते हैं गोया मैं अब भी हुजूर अलैहिस्सलात वरसलाम को देख रहा हूँ, जब आप ने हाथ से इशारा फरमाया, (जरीह के इशारे की नकल फरमाते हुये) लड़के, तेरा बाप कौन है? बच्चे ने कहा चरवाहा लोग शरमिन्दा हो कर जरीह से मअज़रत ख्वाह हुये कहने लगे, हम सोने चाँदी का गिरजा बना देते हैं, जरीह न माना और फिर पहले की तरह गिरजा बना लिया।

एक दूसरे बच्चे की गुप्तगु यूँ है, कि एक औरत शीर ख्वाह बच्चे को दूध पिला रही थी कि एक खुबसूरत खुश मंज़र जवान गिरजा के पास से गुज़रा, औरत ने कहा, अल्लाह! मेरे बच्चे को भी ऐसा ही बना दे, बच्चे ने कहा अल्लाह! मुझे उस जैसा न करना, फिर एक औरत गुज़री, जिस पर चोरी और ज़िना का इल्ज़ाम था और वह सज़ा पा चुकी थी, दुध देने वाली औरत कहने लगी अल्लाह! मेरे बच्चे को इस जैसा न बनाना बच्चे ने कहा अल्लाह! मुझे इस जैसा बना दे, जब माँ ने पूछा तो बच्चे ने जवाब दिया, कि नौ जवान तो एक ज़ालिम व जाबिर था, मैं इस जैसा नहीं बनना चाहता, इस औरत पर ज़िना का इल्ज़ाम था मगर वह ज़ानिया न थी, इल्ज़ाम चोरी का था मगर वह चोर न थी बल्कि हस्बियल्लाह कहती जा रही थी।

وهو خبر الغار وهو مشهور في الصحاح عن الزهري عن  
سالم عن ابن عمر قال قال رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم  
ثلاث رمط ممن كان قبلكم فأوهم المبيت الى غار فدخلوه فان  
حدرت خصرة من الحبل وسدت عليهم باب الغار، فقالوا والله لا

ينجيككم من هذه الصخرة الا تدعوا الله بصالح اعمالكم، فقال رجل منهم كان لى ابو ان شيخان كبيران و كنت لا اعقب قبلهما فنامافى ظل شجرة، يومافلم ابرح عنهما و حلبت لهما عموقهما فحتهما به فوجد تهما نائمين، فكرهت ان اوقظهما و كرهت ان اعقب قبلهما فقمت والقدح فى يدي انتظر استيقاظهما حتى ظهر الفجر فاستيقظا فشربا عبوقهما" اللهم ان كنت فعلت هذا ابتغاء وجهك فافرج عنا مانحن فيه هذه الصخرة" فانفرجت انفر اجالا يستطيعون الخروج منه، ثم قال الاخر، كانت لى ابنة عم و كانت احب الناس الى فراودتها عن نفسها فامتنعت حتى المت بها سنة من السنين فجاءتنى، فاعطيتها مالا عظيما على ان تخلى بينى و بين نفسها فلما قدرت عليها قالت لا يجوز لك ان تفك الخاتم الا بحقه فانفرجت من ذلك العمل و تركتها و تركت المال معها، "اللهم ان كنت فعلت ذلك ابتغاء وجهك فافرج عنها ما نحن فيه" فانفرجت الصخرة غير انهم لا يستطيعون الخروج منها۔ قال رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم، ثم قال الثالث، لهم انى استجرت اجراء فاعطيتهم اجورهم غير رجل واحل ترك الذى له، وذهب فثمرت اجرته حتى كثرت منه الاموال، فجاءتنى بعد حين و قال يا عبد الله، اذ الى اجرتنى فقلت له، كل ماترى من اجرتك من الابل والغنم والرقيق، فقال يا عبد الله استهزء بى، فقلت انى لا استهزء بك فاخذ ذلك كله "اللهم ان كنت فعلت ذلك ابتغاء وجهك فافرج عنا ما نحن فيه" فانفرجت الصخرة عن الغار فخرجوا يمشون وهذا حديث حسن صحيح متفق عليه۔

(جامع كرامات اولياء اعلامه يوسف بهانى، ص ۸۷۸-۹۵)

तर्जमा :- दूसरी हदीस गार वाली, जो कुतुबे सिहाह में मशहूर है, कि इमाम जहरी ने हज़रत सालिम से रिवायत की है, उन्होंने यह रिवायत हज़रत अब्दुल्लाह बिन

उमर रजियल्लाहु तअला अन्हुमा से ली है,इन्ने उमर कहते हैं,कि सरकारे रिसालत म आब सल्लल्लाहु तअला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया,कि गुजशता दौर में तीन अफराद मिलकर आ रहे थे,उन्हें एक गार के करीब पहुँच कर रात आ गई,वह गार में चले गये,अचानक एक पहाड़ी चटान ने गिर कर गार का दरवाजा बन्द कर दिया,वह एक दूसरे को कहने लगे,बाखुदा अब इस बलाये नागेहानी से उसी सूरत में निजात पा सकते हो कि अपने नेक अमल का वास्ता दे कर अल्लाह तअला से दुआ करो।

उन में से एक ने यूँ वाकिआ सुनाया कि मेरे वालिदैन बहुत ज़्यादा बूढ़े थे और मैं उन से पहले शाम को दूध नहीं पिया करता था,वह दोनों एक दिन दरख्त के साये में सो गये,मैं भी उन के पास ही रहा उन के लिए शाम का दूध लाया,जब उन के पास पहुँचा तो वह सोये हुये थे,मैं ने जगाना मुनासिब न समझा और उन से पहले खुद शाम का दूध पीना ना मुनासिब जाना,प्याला हाथ में लिए खड़ा रहा,उन के जागने का इन्तिज़ार करते करते सुबह हो गई, जागे तो अपना रात का दूध पिया(अब वह यह बयान कर के दुआ करने लगा)ऐ अल्लाह!अगर मैंने यह सब कुछ सिर्फ तेरी रज़ा के लिए किया था तो हमारी इस चटान वाली मुसीबत से हमें निजात अता फरमा(उसकी इस दुआ से)वह चटान थोड़ी सिरक गई,मगर अभी वह बाहर नहीं निकल सकते थे।

फिर दूसरे ने अपना वाकिआ यूँ सुनाया। मेरी एक



चचाजाद बहन थी, वह काइनात भर से प्यारी थी, मैंने उसे बुलाया मगर वह बे एअतेनाई बरत गई, फिर उसे कहत से एक साल दो चार होना पड़ा, मेरे पास मदद के लिए आई, मैंने उसे उस शर्त पर बहुत सा माल दे दिया कि वह मुझे अपनी तन्हाई से सरफराज करेगी, (जब तन्हाई में आई) और मुझे उस पर कुदरत हासिल हो गई तो कहने लगी तो इस खातिम को बिला हक न खोल (उसका यह कहना था) कि मैं अलग हो गया, उसे छोड़ दिया और माल भी उसी के पास रहने दिया (फिर यूँ दस्त बा दुआ हुआ) अल्लाह! अगर मैं ने यह सब तेरी रज़ा की खातिर किया था तो हमें कशाइश अता फरमा दे और उस मुसीबत को दूर कर, चटान कुछ और हटी, मगर अभी निकलने के लिए रास्ता तंग था।

हुज़ूर सल्लल्लाहु तअाला अलैहि वसल्लम ने फरमाया, फिर तीसरा यूँ गोया हुआ ऐ अल्लाह! मैंने कुछ मजदूर रखे थे, मैंने उन्हें मजदूरी दे दी थी, सर्फ एक मजदूर मजदूरी छोड़ कर चला गया मैंने उस की मजदूरी वाली उजरत को फलदार बना दिया और बहुत माल पैदा किया। वह मजदूर कुछ वक्त के बाद आया और मुझे कहने लगा ऐ बन्दे खुदा! मुझे मेरी मजदूरी दे दे मैंने उसे जवाब दिया कि यह ऊँट, भेड़, बकरियाँ और गुलाम तेरा ही माल हैं यह सुन कर वह कहने लगा ऐ अल्लाह के बन्दे! मेरा मजाक न उड़ा? मैंने उस से कहा कि मैं जनाब का मजाक नहीं उड़ा रहा हूँ (यह सब आप का है ले लें) उस ने वह सारा माल समेट लिया। फिर यूँ दुआ

की। मेरे अल्लाह! अगर यह सब कुछ मैंने तेरी चाहत के लिए किया था, तो हमारी मुसीबत को रफ़ा फ़रमा। अब क्या था चटान गार के मुंह से हट गई और वह अपने सफ़र के लिए चल निकले। यह इदीस हुस्ने सहीह और मुत्तफ़िक़ अलैहि है।

करामत किसे कहते हैं :

अल्लाह रऊफ़ व रहीम और करीम है वह अपने बन्दों की इज़्ज़त अफ़ज़ाई के लिए अपनी खुसूसी अतयात और नवाज़िशात से नवाज़ता है तो उन से कुछ उमूर ख़र्क़ आदत सादिर होते हैं जिसे करामत से ताबीर किया जाता है।

इस्तिदराज किसे कहते हैं :

कुछ गुनेहगार फ़ासिक़ व फ़ाजिर बन्दों को उन के कुफ़्र, सरकशी, और इस्त्यान पर मज़ीद मोहलत व बढ़ावा देने के लिए ढील दे देता है, और उन से भी कुछ बातें ख़र्क़ आदत सादिर हो जाती हैं, जिसे इस्तिदराज कहते हैं। अगर किसी फ़ासिक़ फ़ाजिर और काफ़िर बन्दे से इस्तिदराजन, ख़र्क़ आदत कोई बात जाहिर हो जाये तो उस का यह मतलब हरगिज़ नहीं लिया जायेगा कि बल अल्लाह का बली और नेक बन्दा है।

इस्तिदराज को कुरआने अज़ीम में कई नामों से ज़िक्र किया गया है। जिसे अल्लामा यूसुफ़ नब्हानी अलैहिर्हरमा ने तफ़सील से ज़िक्र किया है।

इस्तिदराज की हकीकत :

إستدرجهم من حيث لا يعلمون है।

(पारा 9 आयत 182)

करीब है कि हम आहिस्ता आहिस्ता ले जायेंगे जहाँ से उन्हें खबर न होगी।

इस्तिदराज का मअना यह है कि बन्दे को दुनिया में अल्लाह करीम हर वह चीज़ अता फ़रमा दे, जो इस बन्दे की कजरवी, गुम्राही और जिहालत में इज़ाफ़ा का सबब बन जाये। यह अशया उस के लिए अल्लाह करीम से दूरी बढ़ाती चली जाती हैं, उलूम अक़लिया में तहकीक़न यह बात साबित हो चुकी है कि अगर काम को बार बार दोहराया जाये तो एक रासिख़ मलका उस काम के करने पर पैदा हो जाता है।

अब असल मसअला की तरफ़ आइये। जब इंसान का दिल दुनिया की तरफ़ माइल हो जाता है और अल्लाह करीम उस बन्दे की मुराद पूरी भी फ़रमा देता है और वह अपने मतलूब को पा लेता है तो उसे एक लज़्ज़त सी हासिल हो जाती है। इस लज़्ज़त का हुसूल उसे मज़ीद दुनिया की तरफ़ माइल कर देता है। यह मैलान उसे मज़ीद कोशिश व जहद पर आमादा करता है। अब यह मैलान व कोशिश इस आदमी को एक से दूसरे की तरफ़ बढ़ाते चले जाते हैं और यह दोनों हालतें दर्जा बदर्जा क़वी होती जाती हैं। अब वह उन लज़्ज़तों में खो जाता है तो लाज़िमी नतीजा यह होगा कि वह मक़ामात, मकाशिफ़ात और दरजात मुआरिफ़ से गिरता चला जाता है। अब जितना मैलान दुनिया की तरफ़ बढ़ता चला जायेगा उतना ही अल्लाह तआला से दूर



होता चला जायेगा और विराले खुदाबन्द और तकरूबे इलाही खत्म हो जायेगा। यही इरितदराज है।

मकर :

فلا يامن مكر الله الا  
القوم الخاسرون (प १, ११)

(अल्लाह की खुफिया तदबीर से निडर नहीं होते, मगर तबाही वाले)

ومكروا مكروا ومكرنا مكروا هم لا  
يشعرون (प ११, ५०)

(उन्होंने अपना सा मकर किया और हम ने अपनी खुफिया तदबीर फरमाई और वह गाफिल रहे)

ومكروا ومكر الله والله خير  
الماكرين (प ३, ५३)

(और काफिरों ने मकर किया और अल्लाह ने उन के हलाक की खुफिया तदबीर फरमाई और अल्लाह सब से बेहतर छुपी तदबीर वाला है।)

कैद :

يخادعون الله وهو خادعهم

(वह अपने गुमान में अल्लाह तअाला को फरेब दिया चाहते हैं और वही उन्हें गाफिल कर के मारेगा)

يخادعون الله والذين آمنوا  
ما يخلعون الا انفسهم (प १, ११)

(वह फरेब दिया चाहते हैं अल्लाह और ईमान वालों को और हकीकत में फरेब नहीं देते मगर अपनी जानों को।)

इस्ला :

ولا تحسن الذين كفروا انما نملى لهم خيرا لانفسهم انما

نملى لهم ليزدادوا اثما (آية १७८)

(और हरगिज काफिर इस गुमान में न रहें कि वह जो हम उन्हें ढील देते हैं कुछ उनके लिए भला है, हम तो इसी लिए उन्हें ढील देते हैं कि गुनाह में बढ़ें)

अहलाक :

حتى اذا فرحوا بما اوتوا اخذناهم (प ११, आ ११)

यहाँ तक कि जब खुश हुये उस पर जो उन्हें मिला हम ने अचानक उन्हें पकड़ लिया) फिर और के बारे में इरशाद हुआ।

واستكبروا هو وجنوده فى الارض بغير الحق وظنوا انهم الينا لا يرجعون فاخذناهم و جنوده فنبذناهم فى اليم (प १०, आ ३८)  
(और उस ने और उस के लशकरियों ने, ज़मीन में बेजा बढ़ाई चाही और समझे कि उन्हें हमारी तरफ़ फिरना नहीं तो हम ने उसे और उस के लशकर को पकड़ कर दरिया में फैंक दिया)

इन आयाते इलाहिया से साबित हुआ कि मुरादों तक पहुँचना, इस बात की दलील नहीं कि ऐसा आदमी दरजात कमालात को पा चुका है या वह नेकियों और खुरात को हासिल कर चुका है।

करामत व इस्तिदराज में फ़र्क :

अब रही यह बात कि करामत व इस्तिदराज में क्या फ़र्क है ? तो आइये हम इस की वज़ाहत करते हैं, साहिबे करामत को ज़ुहूर करामत के वक़्त खुशी

मयस्सर नहीं होती बल्कि उसे अल्लाह का खौफ होता है और कहरे खुदावन्दी से वह ज्यादा डरने लगता है, क्योंकि उसे खौफ होता कि जिसे वह करामत समझ रहा है कहीं इस्तिदराज न हो।

लेकिन साहिबे इस्तिदराज का मुआमला बिल्कुल दूसरा होता है। वह अपने इस्तिदराज को देख कर मुसरत व खुशी महसूस करता है, और समझता है कि उसे यह करामत (यानी इस्तिदराज) बतौर इस्तिहकाक मिला है अब वह अपनी अज़मत को पा कर दूसरों को हकीर समझने लग जाता है, उस में गुरुर पैदा होता है, अल्लाह करीम के ऐताब व गिरफ्त से वह खुद को मामून समझने लग जाता है, सुये आक़िबत से निडर हो जाता है। अब अगर देखने वाला ऐसे हालात मुलाहिज़ा करता है तो उसे यकीन कर लेना चाहिए कि यह साहिब करामत नहीं बल्कि साहिब इस्तिदराज है।

इसी बिना पर हमारे मुहक्किकीन फ़रमाते हैं कि हुज़ूर खुदावन्दी से उमूमन इन्किताअ करामत के कियाम पर ही आ कर होता है इसी लिए मुहक्किक् औलिया किराम करामत के इज़हार से इस तरह खौफ़ खाते हैं जिस तरह मुसीबत व बला से खौफ़ खाया जाता है।

(जामेअ करामात औलिया, स 14 मतबूआ देहली)

**औलिया अल्लाह का इल्म व क़ुदरत :**

औलिया अल्लाह का इल्म निहायत वसीअ होता है हत्ता कि बाज़ों को मा काना व मा यकून (जो कुछ हुआ और जो कुछ होगा) लौहे महफूज़ पर इत्तिलाअ देते हैं



और मरने के बाद उन के कमालात और कुब्बते और ज़ादा हो जाती हैं, जैसा कि शैख अब्दुलहक मुहदिदस देहलवी कुदिदसा सिरुहु ने "तकमीलुलईमान" में मशाइख सुफिया के अकवाल को नकल फरमाया है। कि "मुशाइखे सुफिया कुदिदसा अल्लाह सर हम गोयन्द कि तसरुफ बाज़ औलिया दर आलमे बरज़ख दाइम व बाकी अस्त व तवरसुल व इस्तिमदाद बेअरवाहे मुकददमा ईशा साबित व मुअस्सिर अस्त(कानून शरीअत अल्लामा शम्सुददीन जौनपुरी)यानी "औलिया इन्तिकाल के बाद भी तसरुफ करते हैं उन को वसीला बनाना और उन से मदद मांगना साबित व मुअस्सिर है।"

अहले सुन्नत के नज़दीक इल्म व इदराक मौती है मरदों की तहकीक कर के फरमाया :

وهذا يتفجع بزيارة قبور الأبرار والاستعانة من نفوس الأحياء

यानी इसी लिए औलिया की कब्रों की ज़्यारत और बुजुर्गों की रूहों से मदद मांगना नफ़अ देता है।

इमाम गिज़ाली अलैहिर्रहमा फरमाते हैं : हर कि इस्तिमदाद कर्दा मीशवद बुये हयात इस्तिमदाद कर्दा मीशवद बुये बाद अज़ वफ़ात यानी जिस से ज़िन्दगी में मदद मांग सकते हैं, उस से मरने के बाद भी मांग सकते हैं।

इमाम ग़ज़ाली अलैहिर्रहमा ने तहरीर फरमाया है :

قال رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم ما من عبد الا ولقاه عينا  
ن يدرك بها الغيب فاذا اراد الله تعالى بعبد غير افتح عيني قلبه ليرى  
ما هو غالب من بصره وهذا الروح لا يموت لموت البدن

यानी जब अल्लाह तआला बन्दे के दिल की आँखें खोल देता है तो वह गैब की बातें जान लेता है और यह रूह बदन के मरने से नहीं मरती है।

मशाइख सुफिया कहते हैं, कि बाज औलिया अल्लाह का तसरूफ आलमे बरज़ख में भी बाकी रहता है, और उन की अरवाह मुकद्दसा से इस्तिमदाद व इस्तिआनत फायदा मन्द होता है।

हुज्जतुलइस्लाम इमाम गज़ाली रहमतुल्लाहि अलैहि फरमाते हैं, कि जो हज़रात बहालते ज़िन्दगी बरक़ात दिया करते थे, वह बाद अज़ वफ़ात तवस्सुल व बरक़ात देने की अहलियत रखते हैं क्योंकि मरने के बाद रूह का बाकी रहना हदीसों और इजमाअे उम्मत से साबित है और बहालते हयात और बादे वफ़ात हर हालत में रूह काम करती रहती है, बदन को तसरूफ़ से कोई तअल्लुक नहीं और मुतसररिफ़ हकीकी तो अल्लाह तआला ही है।

(तकमीलुलईमान अज़ अल्लामा अब्दुलहक़ मुहदिदसे देहलवी स 123 मतबूआ नूरिया बुकडिपो बराऊ शरीफ़)

**मज़ाराते औलिया पर हाज़िरी और मदद मांगना :**

मज़ाराते औलिया पर हाज़िरी दे कर मदद मांगने और उन से फ़ैज़ व बरक़ात हासिल करने को आलमे इस्लाम का एक बड़ा तबका सिर्फ़ जाइज़ ही नहीं मानता है बल्कि उसे मुस्तहसन समझ कर हाज़िरी देता और साहिबाने मज़ार से औलिया पर हाज़िरी दे कर मदद मांगने मज़ार से अपनी परेशानियाँ और मुश्किलात के दूर होने के लिए बारगाहे रब्बुलइज़ज़त में दुआ करने की दरख़वास्त करता है। इस्तिमदाद व इस्तिआनत

औलिया, पर बड़ी तवील बहसे उलमाए किराम ने की है, उस के लिए आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी अलैहिर्रहमा और दीगर उलमाए किराम की किताबें मुलाहिज़ा करें।

इस्तिआनत के तअल्लुक से आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी कुदिदसा सिर्रुहु ने लिखा है "इस्तिआनत हकीकतन यह है कि उसे कादिर बिज़्जात बे नियाज़ जाने कि बे अताए इलाही वह खुद अपनी ज़ात से उस काम की कुदरत रखता हो, इस मअना का ग़ैरे खुदा के साथ ऐअतिक़ाद हर मुसलमान के नज़दीक शिर्क है, न हर गिज़ कोई मुसलमान ग़ैर के साथ उस मअना का क़स्द करता है, बल्कि वासिता वसूल फ़ैज़ व ज़रीआ वसीला क़ज़ाए हाजात जानते हैं और यह क़तअन हक़ है। खुद रब्बुल इज़्ज़त तबारक व तआला ने कुरआन में हुक्म फ़रमाया। *وابتغوا اليه الوسيلة* यानी अल्लाह की तरफ़ वसीला ढूँडो। बा ई मअना *استعانت بالغير* हर गिज़ इस हज़्र के मनाफ़ी नहीं, "ایک نستعين" जिस तरह वजूदे हकीक़ कि खुद अपनी ज़ात से बे किसी के पैदा किए मौजूद होना, ख़ास बजनाब इलाही तआला व तक्ददुस है, फिर उस के सबब दूसरे को मौजूद कहना शिर्क हो गया, जब तक वही मौजूदे हकीकी मुराद न ले।

(ईमान कामिल, स 117 मतबूआ नूरिया बुकडिपो बराऊशरीफ़)

(माखूज मज़मून मौलाना जमाल अहमद रज़वी मुदीरे माहनामा फ़ैज़ुरसूल बराऊशरीफ़ शरीफ़ स.19ता23 बाबत मार्च 2015 ई / जमादिलऊला 1436 हिजरी)



## जीप का पलट जाना

मौलाना हबीबुन्नबी रज़वी नूरी जमाली शाहिदी मुदर्रिस अलजामिअतुलइस्लामिया रामपुर ने अपना एक ऐनी मुशाहिदा तहरीर किया है, लिखते हैं कि यह ईमान अफ़रोज़ वाकिआ 1989 ई के अवाइल का है, जब मुहक्किके अस्त्र मुबल्लिगे मसलके रज़ा चशम व चिराग़ सादात पीलीभीत शरीफ़ खलीफ़े हुज़ूर मुफ़्तीए आज़म हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती अल हाज सय्यद शाहिद अली हसनी रज़वी नूरी जमाली शैख़ुलहदीस व नाज़िमे आला मरकज़ी दर्सगाह अहले सुन्नत जामिअतुल इस्लामिया व काज़िए शरअ व मुफ़्ती ज़िला रामपुर की दअवत पर काज़ियुलकुज़्ज़ात, ताजुशशरीआ जानशीने मुफ़्तीए आज़म हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अलहाज मुहम्मद अख़तर रज़ा खाँ साहब अज़हरी दामत बरकातुहुमुल कुदसिया, मरकज़ी दर्सगाह अहले सुन्नत अलजामिअतुल इस्लामिया पुराना गंज रामपुर तशरीफ़ लाये, जहाँ अराकीन असातिज़ा व तलबा जामिआ ने मौसूफ़ का शायाने शान ख़ैर मक़दम किया।

मौजूवज़ा प्रोग्राम के तेहत इसी दिन हज़रत ताजुशशरीआ मौज़ा उस्मान नगर ज़िला रामपुर तशरीफ़ ले गये, जहाँ कसीर तादाद में लोगों ने हज़रत के दस्त हक़ परस्त पर शर्फ़ बैअत हासिल किया, उस्मान नगर में कुछ देर कियाम के बाद हज़रत ताजुशशरीआ वहाँ से रुख़्सत हो कर एक खुली हुई जीप में रवाना हुये। जीप

में हज़रत ताजुशरीआ के साथ, हज़रत अल्लामा मुफ्ती सय्यद शाहिद अली रज़वी और ड्राइवर समीत छःअफ़राद सवार थे। जीप में सवार यह काफ़िला रामपुर बिलासपुर शाहिराह पर "पीला खार नदी" के किनारे बांध पर से गुज़र रहा था। चलती हुई जीप जब बांध के खड़जे के ऊपर से गुज़री तो अचानक खड़जे के किनारे की ईंटें उखड़ गई, जिस से जीप का तवाजुन बिगड़ गया और जीप ने तीन पलटे खायीं और हैरत अंगेज़ तौर पर तकरीबन पचास साठ फिट गहराई में, बांध के नीचे एक गड्ढे में पहुँच कर, सीधी खड़ी हो गई। जीप में मौजूद दूसरे लोग हवास बाख़ता थे। जीप जैसे ही ज़मीन पर रुकी तो लोगों ने देखा कि हज़रत ताजुशरीआ सीट पर सजदा की हालत में पुर सुकून बैठे हैं। चन्द लमहों बाद ही आप ने पूछा? सय्यद साहब आप ठीक हैं, आप को चोट तो नहीं आई? नहीं हुआ, मैं ठीक हूँ कोई चोट नहीं आई हज़रत अल्लामा सय्यद शाहिद अली रज़वी ने फ़ौरन जवाब दिया, और दरयाफ़्त किया हज़रत आप तो ख़ैरियत से हैं, हज़रत ने फ़रमाया बेहम्देही तआला बख़ैरियत हूँ। इस हादसा में किसी एक फ़र्द के भी कोई काबिल ज़िक्र चोट नहीं आई सब लोग बहिफ़ाज़त रहे, अलबत्ता जीप की छत का पिछला हिस्सा टूट गया और पहचानने में नहीं आ रही थी कि यह जीप है।

हज़रत ताजुशरीआ की जीप के पीछे पीछे मोटर साइकिलों पर सवार अकीदतमन्दों और वाबस्तगाने सिलसिला आलिया कादरिया रज़विया का एक अज़ीम

काफ़ला साथ चल रहा था,जिस ने खुली आँखों से यह अंदोहनाक हादसा देखा और मैं बचाओ के नुक़्ता नज़र से घबराये हुये अन्दाज़ में फ़ौरन ही एक महफूज़ रास्ते से नीचे जाये हादसा तक पहुँचा और जीप में सवार सब हज़रत को बाख़ैर व आफ़ियत देख कर मैं हैरतज़दा रह गया। यह वाकिआ यकीनन ख़र्क़ आदत था,इसलिए कि तमाम तौर पर इस किस्म के हादसात में जानें नहीं बचतीं चेह जाइकि किसी के चोट तक न आये। यह हज़रत ताजुशरीआ दामत बरकातुहुमुल कुदसिया की खुली हुई करामत थी।

हज़रत अल्लामा मुफ़्ती सय्यद शाहिद अली साहब रज़वी का बयान है कि जैसे ही जीप ने पलटा खाया तो हज़रत ताजुशरीआ ने "या अल्लाह या रहमान या रहीम" का विर्द करना शुरू कर दिया था,और जब जीप ठहरी तो आप सजदा की हालत में थे।

यहाँ यह बात भी काबिले ज़िक्र है,कि हज़रत सय्यद साहिब किब्ला भी इस हादसा जांकाह के वक़्त कुछ कलमाते ख़ैर विर्द ज़बान किए हुये थे,इस वाकिआ के ऐने शाहिदीन आज भी सैकड़ों की तादाद में मौजूद हैं,क्योंकि जब यह हादसा हुआ,चश्मे ज़दन में लोगों की एक भीड़ वहाँ इकठ्ठी हो गई थी।

अल्लाह अल्लाह इस दौरे कहतुरिजाल में,अल्लाह के कैसे कैसे बरगुज़ीदा बन्दे इस जूद हैं जिन की बरकतों से बड़े बड़े हादसे टल जाते हैं। यह ऐसे ही नुफ़ूसे कुदसिया हैं जिन के लिए कहा गया है।



औलिया रा हस्त कुदरत इलाह

तीर जस्ता बाज गर्दान्द ज राह

इस हादसा के बाद गाड़ी वहीं छोड़ कर, तकरीबन साठ फिट की चढ़ाई चढ़ कर हज़रत ताजुशरीआ और सारे रफ़काए सफ़र वहाँ से पैदल चल कर बांध के ढहलवान को पार कर के ऊपर सड़क पर आ गये, और वहाँ से पैदल चलते हुये तकरीबन एक मील का फ़ासला तै कर के "शंकर चौराहे" पर पहुँचे और वहाँ बाग़ वाली मस्जिद में नमाज़े जोहर अदा फ़रमाई, इसी दौरान शहर से राबता कर के दूसरी गाड़ी मंगवाली गई थी। नमाज़े जोहर से फ़रागत पा कर यह काफ़ला दो बारा मरकज़ी दर्सगाह अहले सुन्नत अलजामिआतुलइस्लामिया पुराना गंज रामपुर पहुँचा, और मस्जिद जामिआ में हज़रत ताजुशरीआ की इक्तिदा में सब ने नमाज़े अस्त्र अदा की फिर कुल शरीफ़ हुआ, इस के बाद कसीर तादाद में लोग हज़रत ताजुशरीआ के दस्ते हक़ परस्त पर बैअत हुये। नमाज़े मगरिब भी हज़रत ही की इक्तिदा में अदा की गई।

नमाज़े मगरिब के बाद यह अज़ीमुशशान काफ़ला, हज़रत ताजुशरीआ और हज़रत मुफ़ती सय्यद शाहिद अली रज़वी की मुईत में, एक जुलूस की शक़ल में रामपुर के क़स्बा नगलिया आकिल के लिए रवाना हुआ। जैसे ही यह काफ़ला नगलिया आकिल पहुँचा, तो वालियाने क़स्बा ने नअरा हाए तकबीर व रिसालत व ग़ौसियत से पुर जोश ख़ैरमक़दम किया। उलमाए अहले सुन्नत जिन्दा

बाद, हुजूर ताजुशरीआ जिन्दाबाद के फ़लक शिगाफ़ नअरों से सारी बस्ती गूँज उठी। सब लोग जोश व बलवला और निहायत अकीदत व ऐहतिराम के साथ हुजूर ताजुशरीआ को मुतअय्यना नशिस्त गाह मदरसा सिराजुल उलूम ले गये।

राकिमुलहरूफ़ अपने मुतअल्लिकीन रिश्तेदारों और मुहिब्बीन के साथ हज़रत के इस्तिक़बाल करने वालों में पेश पेश रहा। खुसूसन मौलाना अतीकुर्रहमान अज़हरी ललवारी सदरुलमुदर्रिसीन मदरसा सिराजुल उलूम ने हज़रत की पज़ीराई की।

इस वक़्त वहाँ मौजूद लोगों का जो वालिहाना अन्दाज़ व वारफ़्तगी का आलम था, उसे लफ़्ज़ों में समेटना बड़ा मुश्किल है। गर्ज़ यह कि सैकड़ों मुतलाशियाने हिदायत आप के इर्द गिर्द हल्का बांधे खड़े थे। आप ने सब को तौबा कराई, और सब को सिलसिलाए आलिया कादरिया रज़विया नूरिया में बैअत फ़रमा कर सरकारे गौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की गुलामी और पनाह में दे दिया। आप ने इशा की नमाज़ "नगलिया आकिल" में ही अदा फ़रमाई, और कुछ देर नगलिया आकिल ही में कियाम फ़रमा कर हुजूर ताजुशरीआ वहाँ से रुख़सत हुये और फिर रामपुर के लिए अज़मे सफ़र किया, क्योंकि हज़रत ताजुशरीआ ने अलहाज़ ज़हूर अहमद रज़वी रुक्न जामिआ के बेहद इसरार पर उन की दअवत इस शर्त पर कबूल फ़रमाई थी कि वह दअवत के लवाज़िमात के बेजा मसारिफ़ से गुरेज़ कर के

सिर्फ मूंग की खिचड़ी पकवायेंगे।

चुनांचि हज़रत ताजुशरीआ मददज़िल्लाहुल आली हस्बे वअदा तकरीबन 11 बजे शब मौसूफ़ के मकान वाकैअ पुराना गंज पहुँचे, दस्तरख्वान को जीनत बख़्शी और दअवत दहिन्दा की खातिर बुज़ुर्गों की आदत मुबारका के मुवाफ़िक़ चन्द लुक्मों पर इक्तिफ़ा किया मगर अहले ख़ाना और दीगर हाज़िरीन को ख़ुब खिलाया।

इस मौक़े पर मन्ज़ूर अहमद रज़वी, नबी अहमद कादरी ख़ाज़िन ज़ामिआ, सगीर अहमद अज़हरी मुहासिबे ज़ामिआ, अमीर अहमद सैफ़ी रज़वी, अलहाज शब्बीर अहमद रज़वी, ज़मील अहमद ख़ाँ रज़वी के ऐलावा बहुत से मुहिब्बीन व मुख़्लिसीन और अराकीन ज़ामिआ मौजूद रहे। ख़ाने से फ़रागत पा कर हज़रत ताजुशरीआ दामत बरकातुहुमुल कुदसिया अपने ख़ादिम मौलाना शकील अहमद ख़ाँ साहब रज़वी, जो इस पूरे सफ़र में हज़रत के साथ रहे थे, को अपने साथ ले कर बज़रीआ कार शब को ही बरेली शरीफ़ के लिए रुख़सत हो गये।

### नमाज़ के लिए ट्रेन का रुकना

11 / मार्च 2015 ई को हज़रत ताजुशरीआ, बनारस के लिए काशी विशनाथ एक्सप्रेस से रवाना हुये। अस्स की नमाज़ बरेली जंक्शन पर अदा फ़रमाई। मग़िब शाहजहानपुर में अदा की और इशा के वक़्त ट्रेन लखनऊ पहुँच गई। स्टेशन पहुँचने से पहले हज़रत बैतुलख़ुला गये, जब हाज़त से फ़ारिग़ हुये, तो ट्रेन के छूटने का वक़्त हो गया, हज़रत जब बैतुलख़ुला से बाहर तशरीफ़ लाये



उस वक्त तक ट्रेन रवाना नहीं हुई थी, मगर चन्द लमहा में ट्रेन चलने लगी, हज़रत नमाज़ इशा अदा करने के लिए जाये नमाज़ निकालने का हुक्म दे रहे थे, बरादरम मुहम्मद यूसुफ़ अख़्तर रज़वी ने बैग से जाये नमाज़ निकाली, हज़रत ने फ़रमाया मुसल्ला बिछा दो तो यूसुफ़ रज़वी ने कहा कि हुज़ूर ट्रेन चलने लगी है, हज़रत के हुक्म पर मुसल्ला बिछा दिया गया, जैसे ही मुसल्ला पर हज़रत ने कदम रखा फ़ौरन ट्रेन रुक गई, हज़रत नमाज़ के लिए खड़े हो गये, ट्रेन में जगह तंग और हज़रत की नकाहत को देखते हुये, एक तरफ़ मुहिब्ब मोहतरम मुफ़्ती मुहम्मद शुऐब रज़ा कादरी और दूसरी तरफ़ यह राकिमुस्सुतूर मामूली सहारा देते रहे। हज़रत ने इत्मीनान के साथ खड़े हो कर नमाज़ इशा अदा फ़रमाई बस सलाम फेरते ही ट्रेन चलने लगी, हज़रत ने सलाम फ़ेरा, फिर फ़रमाया कि ट्रेन कहाँ पर है, राकिम ने अर्ज किया हुज़ूर ट्रेन अभी प्लैट फ़ारम पर ही है। हज़रत ने फ़रमाया कि चलो अलहम्दु लिल्लाह नमाज़ अपने वक्त पर अदा हो गई। इस करामत के ज़हूर के वक्त मौलाना आशिक़ हुसैन कशमीरी, अलहाज मुहम्मद यूसुफ़ नूरी पोरबन्दर, अलहाज शाहनवाज़ हुसैन रज़वी (दुबई) मौजूद थे। (मुहर्ररा 14/मार्च 2015 ई बरोज़ हफ़्ता बवक्त इशा बरेली)

### आँख का आपरेशन बग़ैर इंजक्शन

हज़रत ताजुशरीआ साउथ अफ़्रीका मारीशश हरारे, जिम्बावे तनज़ानिया बग़ैरा के तक़रीबन एक दर्जन ममालिक के तब्लीगी सफ़र पर 14/मार्च 2015 को बरेली

शरीफ से रवाना हुये,कियाम दौलत कदा बरेली से ही आँख से कभी कभी खून निकल रहा था,सभी लोगों ने हज़रत से इतना तवील सफर करने से मना किया,मगर तारीख दे चुके थे,इस लिए वअ़दा ख़िलाफ़ी न हो,तशरीफ़ ले गये। आप के हमराह आप के साहिबज़ादा गिरामी मौलाना अस्जद रज़ा कादरी भी थे। डरबन(साउथ अफ़्रीका) पहुँचने पर आँख में तकलीफ़ ज़्यादा बढ़ गई,22/अप्रैल 2015 ई को अस्पताल ले जा कर आँख के मशहूर और तजर्बाकार डाक्टर को दिखाया। उन्होंने कुछ दवायें तजवीज़ कीं और आप्रेशन का मशवरा दिया।

यह वह आँख है जिस का तक़रीबन 20 साल कब्ल बम्बई में आप्रेशन हो चुका था,उसी दौरान आँख के तहफ़्फ़ुज़ के पेशे नज़र प्लास्टिक के दो टुकड़े डाक्टर ने लगा दिए थे,वह टुकड़े उभर कर आ गये थे,इसलिए आँख से खून बहने लगता था। डरबन के डाक्टर ने कहा कि इस आँख के आप्रेशन के ऐलावा कोई और तरीका नहीं है,जिस से इस पर कन्ट्रोल पाया जा सके। 24 अप्रैल 2015 को आप्रेशन की तारीख़ मुक़र्रर कर दी, हज़रत को मुरीदीन व अकीदत मन्द अस्पताल लेकर पहुँचे,आप्रेशन की तैयारियाँ मुकम्मल हो गई।

डाक्टर ने हज़रत को आप्रेशन से कब्ल बेहोशी का इंजक्शन लगाना चाहा जैसा कि डाक्टरों का मामूल है मगर आप ने सख़्ती से मना फ़रमा दिया,कि इस तरह के इंजक्शन में नाजाइज़ चीज़ों की अमीज़िश होती है और दूसरी नशीली अशया होती हैं,इसलिए मैं इंजक्शन नहीं

लगवा सकता। डाक्टर साहब ने हज़रत को बहुत मुतमइन करने की कोशिश की मगर हज़रत ने इनकार फ़रमाया, फिर डाक्टर साहब ने हज़रत से दूसरी गुज़ारिश की कि इतना हिस्सा सुन कर देता हूँ, हज़रत इस पर भी तैयार नहीं हुये। और सुन करने से भी मना कर दिया। ऐन आप्रेशन के वक़्त डाक्टर साहब के साथ डाक्टरों का पूरा पैनल हज़रत को समझाने की कोशिश करता रहा, कि आप्रेशन बग़ैर सुन किए या बग़ैर इंजक्शन लगाये नहीं होता है, हज़रत ने बड़े इत्मीनान के साथ उन डाक्टरों के पूरे पैनल से फ़रमाया कि आप लोग बिल्कुल बे फ़िक्री के साथ मेरी आँख का अप्रेशन कीजिए, मैं किसी भी तरह की नाजाइज़ अशया का इस्तेमाल नहीं करता हूँ, और ना ही पसन्द करता हूँ, इन्शाअल्लाह तआला मुझे कोई तकलीफ़ नहीं होगी, मेरे ज़ददे अमजद ने भी बग़ैर इंजक्शन के आप्रेशन कराया था। आप लोग अपना काम करें। इस गुफ़्तगू के बाद डाक्टरों ने हिम्मत जुटाई और आप्रेशन का आगाज़ कर दिया। हज़रत बहुत मुतमइन और बिल्कुल साकित व ज़ामिद बैठे रहे, तकरीबन साढ़े तीन घन्टा आप्रेशन चला, और आँख में सात टांके लगे। आप्रेशन की तकमील तक आप की ज़ुबान मुबारक पर दुरुद शरीफ़ और क़सीदा बुर्दा शरीफ़ का विर्द जारी रहा। डाक्टर हज़रत यह नहीं समझ पा रहे थे कि आप क्या पढ़ रहे हैं मगर लबों की जुंबिश से महसूस होता था कि आप कुछ पढ़ रहे हैं।

आप्रेशन से फ़ारिग़ हो कर डाक्टर का तासिर हैरत



अंग्रेज था, उन्होंने सभी लोगों की मौजूदगी में कहा कि मैं दुनिया भर में जाता हूँ अब तक बगैर इंजेक्शन लगाये मैंने या किसी और डाक्टर ने आप्रेशन नहीं किया, मगर यह शर्खिसयत अपने आप में मुन्फिरद है। दुनिया का सब से नालाइक डाक्टर मैं हूँ कि मैंने बगैर इंजेक्शन लगाये आप्रेशन किया, और यह ज्ञात दुनिया की वाहिद ज्ञात है कि इतनी मजबूत, हिम्मत और रुहानी कुव्वत वाली है कि साढ़े तीन घन्टे तक बिल्कुल जिस तरह बैठाया गया था बैठे रहे, ज़रा सी भी जुंबिश नहीं की, जब कि इस तरह के बड़े आप्रेशन में तकलीफ़ से आदमी तड़प उठता है, एक ज़रा सा कांटा चुभ जाने से आदमी कराह उठता है मगर यह शर्खिसयत पूरी दुनिया में शायद वाहिद होगी, जिस के अन्दर मैं रुहानी और ईमानी कुव्वत देखता हूँ। डाक्टरों की पूरी टीम आप की इस्तिकामत पर हैरान थी।

हज़रत के दादा हुज्जतुलइस्लाम मौलाना हामिद रज़ा ख़ाँ बरेलवी कुदिदसा सिर्रुहु ने भी, अपने अंगूठे का आप्रेशन जयपुर में बगैर इंजेक्शन के कराया था और एक घन्टा तक आप्रेशन होता रहा, और आप सब्र व सुकून के साथ पंज गंज दुरुद शरीफ़ का विर्द करते रहे, यहाँ तक कि आप्रेशन मुकम्मल हो गया। (4 मई 2015 बरोज पीर)

### डाक्टर झूटा रिपोर्ट झूटी

हज़रत ताजुशशरीआ की तकरीबन एक माह के सफ़र से बरेली शरीफ़ वापसी हुई। ईदुल फ़ित्र की नमाज़ ईद गाह बाक़रगंज में पढ़ाई। चन्द अय्याम गुज़रे थे कि 25/ जुलाई 2015 ई को बाद नमाज़ मगरिब लगातार

चार उल्टियाँ हुई उल्टी बिल्कुल काली थी फौरन साहबजादा गिरामी मौलाना अस्जद रजा खाँ साहब ने डाक्टर परवेज़ नूरी सिद्दीकी को फोन कर के बुला लिया, उन्होंने चेकप किया, खून की जांच की रिपोर्ट हासिल करने के लिए सेन्टर भेज दी, दवा तजवीज़ की और दवा खाने पर उल्टियाँ बन्द हो गई। बाद नमाज़े इशा तकरीबन रात के दस बजे होंगे, कि डाक्टर साहब तशरीफ़ लाये, कहने लगे कि फ़िक्र मन्द की बात यह है कि हज़रत ने सुबह सिर्फ़ आधी रोटी तनावुल की थी उस के बाद पूरा दिन गुज़र चुका है कुछ भी नहीं खाया और काली उल्टी हो गई, इस लिए मेरा मशवरा है कि आप देहली ले जाइये। मौलाना अस्जद मियाँ ने हज़रत से देहली चलने के लिए कहा फ़रमाया कि नमाज़ पढ़ूंगा। हज़रत ने नमाज़ अदा फ़रमाई दूर दराज़ से आये हुये लोगों को मुरीद किया, मुलाकातें फ़रमाई फिर अन्दरून खाना तशरीफ़ ले गये और आराम करने लगे। अस्जद मियाँ फिर हज़रत के पास पहुँचे, देहली चलने के लिए कहा, तो हज़रत ने फ़रमाया कि मेरी तबीअत बेहतर है और मैं अब आराम करूँगा, डाक्टर की रिपोर्ट झूटी है।

मौलाना अस्जद मियाँ बरादरम दानिश रजा और राकिमुस्सुतूर(लेखक) रात भर नहीं सोये फ़िक्र दामन गीर रही रात तकरीबन डेढ़ बजे डाक्टर अनीस बेग और डाक्टर शर्दअग्रवाल से मौलाना अस्जद मियाँ ने बात की 2015 ई सुबह 6 बजे जांच करने के लिए राम पुर गार्डन से दो साहिबान आ गये, चेक करने के लिए खून ले गये।

दस बजे बरादरम दानिश रज़ा रिपोर्ट लेने के लिए पहुँचे रिपोर्ट में कुछ वाजेह नहीं हो रहा था, फिर डाक्टर अनीस बैग आ गये और अपने हास्पिटल में चलने का मशवरा दिया, 11 बजकर 45 मिनट पर हज़रत सौदागरान से "बैग हास्पिटल" के लिए रवाना हुये, हास्पिटल में हज़रत के पहुँचने की ख़बर ने शहर में हल चल मचा दी, गली कूचे हास्पिटल के दरो दीवार इंसानी सैलाब से भर गये थे। हज़रत के गुर्दा का एक्सरे हुआ। शुगर, ब्लड प्रेशर वगैरा की जांच हुई, एक दिन और एक रात हास्पिटल में गुज़ार कर 27/जुलाई को 12 बजे घर वापस तशरीफ़ लाये। डाक्टर शरद अग्रवाल ने नब्ज़ की तशखीस और जांच रिपोर्टों के बाद बताया कि हज़रत की तबीअत में काफी सुधार हुआ है और तबीअत बेहतर है।

दौराने इलाज शदीद बीमारी में हज़रत ने तमाम नमाज़ें खड़े हो कर पढ़ीं, फ़राइज़ तो फ़राइज़ सुन्नत भी खड़े हो कर अदा की, कभी कभी कमज़ोरी की वजह से खड़े होने में दिक्कत हो जाती थी, तो बरादरम यूसुफ़ अख़्तर हलका सा सहारा दे दिया करते थे। रोज़ाना के मामूलात औराद व वज़ाइफ़ में बिल्कुल फ़र्क़ नहीं आने दिया, मौलाना आशिक़ हुसैन कश्मीरी और मुफ़्ती शुऐब रज़ा कादरी को बराबर इल्मी मौजूआत पर इमला कराते रहे और मुसलसल तस्नीफ़ व तालीफ़ व दीगर फ़तवाजात व तर्जमा पर तहरीरी काम भी जारी रहा।

जाहिरी हालत में दूर रह कर दीदार और जिन्नात से हिफ़ाज़त

27/जुलाई 2015 ई को मैं अपने आफिस में बैठा हुआ था, हज़रत से मिलने वालों का बे पनाह हुजूम



था, इसी दरमियान तीन या चार शख्स काफी लम्बे तड़ंगे आफिस में दाखिल हुये, सलाम व दुआ के बाद कहने लगे, कि आप ने मुझे पहचाना, मैंने कहा कि हाँ चेहरा पहचान रहा हूँ मगर नाम याद नहीं आ रहा है, उन में एक बुजुर्ग शख्सियत थी, सफेद दाढ़ी थी, नूरानी चेहरा और इस पर सफेद कपड़े और सर पर सफेद रूमाल व टोपी ने चेहरा को निहायत बा रौनक बना दिया था। उन्होंने जेब से मुजल्लद एक छोटी सी पाकिट साइज की किताब को मेरी तरफ बढ़ाते हुये कहा कि देखिये यह क्या है। मैं ने देखा तो वह शजरा शरीफ था, अन्दर खोला तो मौसूफ का नाम मेरे हाथों से हाजी अहमद अली कादरी रजवी जम्मू व कश्मीर लिखा हुआ था, वह 2 फरवरी 2007 को हज़रत से दाखिले सिलसिला हुये थे।

हाजी अहमद अली रजवी के हमराह मौलाना दिल मुहम्मद रजवी मरहूम के साहिबज़ादे महमूद अहमद रजवी, एडवोकेट हाई कोर्ट जम्मू कश्मीर भी थे। हाजी साहब ने अपने साहबज़ादे आफताब अहमद का तआरुफ कराते हुये बताया कि उन को मुरीद कराने के लिए लाया हूँ, बोले कि वाकिआ यह हुआ कि उस के ऊपर जिन्नात के असरात हैं, अकसर हाज़िरी हो जाती है।

एक बार जिन्नात इस के ऊपर हमला आवर हो गये, मैं घबरा गया कि अब क्या करूँ, कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि दफअतन मेरी ज़बान से यह आवाज़ निकली कि "तुम जानते हो सर परस्ती कौन कर रहे हैं और मैं किस बुजुर्ग का मुरीद हूँ" कि इतने में हज़रत

ताजुशरीआ मेरी पुश्त की तरफ खड़े थे कि आफ़ताब अहमद ने देखा और घबरा गया, उस के ऊपर जो जिन्नात के असरात थे, वह काफ़ूर होते नज़र आये, उस के मुँह से यह आवाज़ सुनाई देती रही कि अब मैं नहीं आऊँगा, अब मैं नहीं आऊँगा आफ़ताब अहमद की ख़्वाहिश हुई कि जिस पीर से आप मुरीद हैं उन के पास मुझे ले चलिए, मैं भी उन्हीं से मुरीद होना चाहता हूँ, पहले में ज़्यारत करूँगा फिर मुरीद हूँगा। हाजी साहब हज़रत कि नशिस्त गाह में गये बग़ैर कुछ कहे आफ़ताब अहमद कहने लगे कि यही शख़्सियत है, जिन को मैंने देखा तो उन्हीं की हैबत और रूहानी फ़ैज़ान ने जिन को भागने पर मजबूर कर दिया था। फिर आफ़ताब अहमद हज़रत के दस्ते हक परस्त पर मुरीद हो गये, चार लोगों को राकिम ने शजरा शरीफ़ दिया और बहुत ख़ुश हो कर, जम्मु कश्मीर के लिए रवाना हो गये, अल्लाह तआला उन को इसी तरह से पीर व मुरशिद का फ़ैज़ान नसीब फ़रमाये। (आमीन सुम्मा अमीन)

### प्लेन का लेट हो जाना

आवाइल 1992 ई की बात है कि राकिमुस्सुतूर हज़रत के हमराह बतौर ख़ादिम पहली बार लम्बे सफ़र कलकत्ता गया, हज़रत का कियाम जनाब मुहम्मद अय्यूब ख़ाँ रजवी मरहूम के दौलतकदा पर था, दो दिन के कियाम और मुख़्तलफ़ जगहों पर इजलास व दअ्वत व तब्लीग़ के प्रोग्राम में शिरकत करने के बाद, शब 3 बजे कियाम गाह पर वापसी हुई, हज़रत ने फ़रमाया अब

मुख्तसर सा वक्त बचा है, नमाज़ फजिर पढ़ कर सोया जाये, अय्यूब साहब चाये लेकर हाज़िर हुये, इसी वक्फा में हज़रत ने मुझे कुछ लिखने का हुक्म फरमाया, मैंने वह मरासिला तैयार किया। इतने में फजिर की अज़ान होने लगी। नमाज़ जमाअत से पढ़ी गई, फिर मुसलसल सफ़र की थकावट की वहज से नींद फ़ौरन ही आ गई, 11 बजे बेदार हुये, फिर चलने की तैयार होने लगी, शाम को चार बजे की फ्लाइट दमदम एयरपोर्ट से देहली के लिए थी। नाश्ता और खाना एक साथ किया, नमाज़ ज़ोहर घर पर अदा हुई शब ही में फ्लाइट के दो टिकट अय्यूब मरहूम ने ला कर मुझे दिए थे, वह टिकट मैंने हज़रत की तकिया के नीचे रख दिए थे। इस ख़याल से कि चलते वक्त 'सदरी' की जेब में रख लूंगा मगर मैं भूल गया। एयरपोर्ट चलने की तैयारी होने लगी, हज़रत ने अपनी सदरी मुझे ऐनायत फ़रमाते हुये कहा कि उस को पहन लो मैंने हज़रत की सदरी पहन ली, और अकसर दौराने सफ़र हज़रत की सदरी में ही पहन लिया करता था, हज़रत बहुत कम सदरी पहनते थे, मगर सदरी साथ में ज़रूर रखते थे, उस की वजह यह थी कि उस में ज़रूरी कागज़ात, पासपोर्ट, टिकट, कलम और दवा वगैरा रखे जाते थे, जब एयरपोर्ट के लिए चलने लगे तो हज़रत ने फ़रमाया कि सब सामान रख लिया है, मैंने अर्ज़ किया हुआ सारा सामान रख लिया है। हज़रत मुतमइन हुये, गाड़ी में बैठे कुछ ही दूर चले थे, कि फिर फ़रमाया कि सामान चेक कर लिया है, मैंने फिर वही जवाब दिया कि



सब चेक कर लिया है। जब एयरपोर्ट के करीब पहुँचे फ़रमाया कि एक एक सामान चेक किया है मैंने अज़ किया कि हुज़ूर हाँ, फिर फ़रमाया कि टिकट कहा है, बस इतना कहना था कि फ़ौरन याद आया कि टिकट तो तकिया के नीचे ही रह गया। सदरी के चारों जेब चेक किए मगर टिकट तो मैंने रखा ही नहीं था। वह भूल गया था। एयरपोर्ट बिल्कुल करीब था प्लेन का वक़्त बिल्कुल आधा घन्टा बचा था, मैं फ़ौरन अय्यूब रज़वी के साथ घर वापस आया, यह वक़्त बहुत ट्रेफ़िक के रश का होता है घर गया एक घन्टा लगा, इधर लोग हज़रत से प्लेन के ताख़ीर से उड़ने के लिए दुआ कराने लगे। जब मैं टिकट लेकर वापस पहुँचा तो मालूम हुआ कि दो घन्टा प्लेन लेट है, बहुत आराम से बोर्डिंग कराया। तब पता चला कि हज़रत शुरू ही से याद दिहानी कर रहे थे, और यह हज़रत की जिन्दा करामत है कि मैं टिकट भी ले आया पिलेन लेट हो गया, बहुत सारे लोग ताख़ीर की वजह से दाख़िले सिलसिला भी हो गये। यह है औलिया किराम का मर्तबा यह है अहलुल्लाह की शान।

(9 अगस्त 2015 ई बरोज़ हफ़्ता)

### मस्जिद में चन्दा

1997 ई की बात है कि सूबाए बिहार का राकिमुस्सुतूर ने हज़रत की तरफ़ से प्रोग्राम दे दिया था यह तारीख़ों तकरीबन दस दिन की थीं, हर एक दिन हज़रत के तीन से चार इजलास हुआ करते थे। और ऐसा खाका तैयार किया था कि जिस जगह से हज़रत

चलेंगे और जहाँ तक जाना है तो लंबे सड़क से मुत्तसिल जितने भी गाँव और कस्बे होंगे सभी जगह 15 मिनट हज़रत रुक कर बैअत व इरशाद फ़रमायेंगे, इस तरह उन दस दिनों में दरजनों प्रोग्राम हो गये। और दरजनों गाँव व देहात के इलाकों में हज़रत के कुदूम मैमनत लुज़ूम पहुँच गये तकरीबन आधा सूबाए बिहार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी और ताजदारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ़्तीए आज़म कुदिदसा सिरुहु के फ़ैज़ान से माला माल हो गया था।

हज़रत शहरे किशन गंज से बहादुर गंज जाते हुये मुफ़्ती मतीउर्रहमान मुज़तर रज़वी और ख़्वाजए इल्म व फन हज़रत ख़्वाजा मुज़फ़्फ़र हुसैन रज़वी मरहूम के गाँव तशरीफ़ ले गये। रास्ते में एक साहब ग़ालिबन मौलाना मुफ़्ती अय्यूब मज़हर कादरी के भाई या करीबी रिश्तेदार मिले, वहाँ से आगे बढ़े होंगे कि एक मस्जिद या मदरसा की तामीर हो रही थी। चन्दा की अपील का बैनर लगा हुआ था मअन मुझे ख़याला आया कि यह ग़रीब मुसलमानों का इलाका है, यहाँ मदद होना चाहिए, मेरे पास इतने रुपये भी नहीं हैं कि मैं फिलहाल उनकी मदद कर दूँ मैं अपने ज़हन व ख़याल में सोचता हुआ जा रहा था, गाड़ी तेज़ रफ़्तारी के साथ बढ़ रही थी, आगे ही कुछ फ़ासले पर कियाम गाह थी। कियाम गाह पर पहुँचे सामान गाड़ी से ला कर कमरा में रखा, हज़रत कुछ देर के लिए आराम करने लगे, जब बेदार हुये फ़रमाया कि तुम इस वक़्त क्या सौच रहे थे, बैग में फ़लाँ जगह का

नज़राना रखा होगा, उस को ले लो और जा कर उस मस्जिद या मदरसा में तआउन कर दो, यह निहायत ही अच्छा अमल है। अल्लाह ऐसे लोगों को बेतरीन जज़ा देता है।

मैं ने अर्ज़ किया हुज़ूर मैं वाकई यही सोच रहा था कि उन की मदद होनी चाहिए। आप ने कश्फ़ के ज़रीअे मेरे दिल का हाल जान लिया है। अब मैं वहाँ के जो ज़िम्मेदार होंगे उन से मिलकर आप की तरफ़ से तामीर मस्जिद में चन्दा दूँगा। फिर फ़रमाया कि जा कर तआउन करो मगर नाम के इज़हार की ज़रूरत नहीं है। मैंने एक मोटरसाइकिल वाले को साथ में लिया और अकेले ही चला गया। मुतवल्ली साहब से मुलाकात हुई मैं ने सिर्फ़ अपना इतना तआरुफ़ कराया कि मैं बरेली शरीफ़ से हाज़िर हुआ हूँ, फ़लाँ जलसा में आया हूँ, यह दस हजार रुपये मस्जिद की तामीर में बतौर तआउन हाज़िर हैं। वह बहुत खुश हुये।

हज़रत दिलों का हाल जानते हैं। अपने मुरीदीन व खुददाम के जज़बात व एहसासात की कद्र करते हैं। यही औलियाए किराम व मुक़र्रिबाने बारगाहे इलाही की पहचान है। (17 अगस्त 2015 ई )

### कैंसर से निजात

अजीजम अब्दुल्लाह रजवी साकिन महल्ला मलूकपुर बरेली किसी कम्प्यूटर कम्पनी में मुलाजिमत करते हैं। डाक्टर ने आप को कैंसर का मर्ज़ बता दिया। बरेली से देहली पहुँचे यहाँ जांच करा कर टाटा कैंसर



हास्पिटल में जांच के लिए पहुँचे सभी ने कैंसर जैसे महलक मर्ज के होने की बात कह दी। मौसूफ़ फ़ौरन अपने पीर व मुरशिद हज़रत ताजुशरीआ की ख़िदमत में हाज़िर हुये और ज़ार व क़तार रोन लगे, हज़रत ने दरयाफ़्त किया कि क्यों रो रहे हो, ख़ादिम ने कहा कि हुज़ूर डाक्टरों ने कैंसर बता दिया है, जांच रिपोर्ट में भी कैंसर के नुमाया निशानात बताये हैं। हज़रत ने डाक्टर पर गुस्सा होते हुये फ़रमाया कि डाक्टर झूटा और डाक्टर की रिपोर्ट झूटी, फिर क़रीब आने का इशारा फ़रमाया। हज़रत बहुत देर तक अब्दुल्लाह रज़वी पर पढ़ पढ़ कर दम करते रहे। अभी चन्द माह क़ब्ल राकिम को घर जाते हुये रास्ते में मिल गये, मैंने मालूम किया कि आप की तबीअत कैसी है, कहने लगे कि जिस दिन से हज़रत ने दम फ़रमाया है उसी दिन से मुझे बड़ी राहत मिली और कैंसर का मर्ज काफ़ूर हो गया। अब जांच रिपोर्ट में बिल्कुल ही कैंसर का कहीं नाम व निशान नहीं है। यह सब पीर व मुरशिद की दुआ का असर है वरना मेरे घरवाले यह समझ रहे थे कि अब मेरी ज़िन्दगी के चन्द ही अय्याम रह गये हैं, मगर मेरे पीर व मुरशिद की यह ज़िंदा करामत है कि मैं आप के सामने सही व सालिम खड़ा हूँ। और कम्पनी भी जवाइन कर ली है और मैं बहुत अच्छी तरह से काम कर रहा हूँ। (22/सितम्बर 2015 ई)

नमाज़े जनाज़ा के बाद बारिश

शैरे बेशाए अहले सुन्नत मौलाना इशमत अली ख़ाँ  
पीली भीती अलैहिरहमा के साहबज़ादे मौलाना अहमद

मशहूद रज़ा का 19 सितम्बर 2015 ई को इन्तिकाल हो गया। इन्तिकाल की इत्तिलाअ हज़रत ताजुशशरीआ को कराई कि मौलाना अहमद मशहूद रज़ा साहब ने नमाज़ जनाज़ा पढ़ाने के लिए हज़रत के नाम वसीयत की है। मौजूदा वक़्त में बरेली शहर से पीलीभीत का रास्ता वाया नवाबगंज बहुत ख़राब है रोड पर ईंट पत्थर का काम चल रहा है। निहायत ख़राब रास्ता होने के बावजूद भी हज़रत ने नमाज़ जनाज़ा पढ़ाने की मन्ज़ूरी अता फ़रमा दी।

इसी ख़ानवादा के जवाँ साल बरादरम बरकात रज़ा कादरी बरकाती बिन मौलाना मुहम्मद मियाँ रज़वी बिन मुल्लाह लियाक़त हुसैन ख़ाँ रज़वी मरहूम महल्ला सुर्खा बरेली शरीफ़ शरीक नमाज़ जनाज़ा थे। बरेली वापसी पर बयान किया कि मैंने किसी हदीस की किताब में पढ़ा था कि नमाज़ जनाज़ा के बाद अगर बारिश हो जाती है तो साहिब-ए-मय्यत की बख़्शिश हो जाती है। मैंने हज़रत ताजुशशरीआ से अर्ज़ किया हुज़ूर आप नमाज़ पढ़ायेंगे साथ ही बारिश की दुआ भी फ़रमा दें ताकि यह रहमत की बरकत से मेरे मामूँ अहमद मशहूद रज़ा साहब मरहूम की बख़्शिश का सामान फ़राहम हो जाये। हज़रत ने 25 हज़ार पर मुश्तमिल अफ़राद की इमामत फ़रमाई और देखते ही देखते आस्मान पर बारिश के आसार नुमाया हो गये। और फ़ौरन बारिश होने लगी। यह है हज़रत की दुआ की मुस्तजाबियत और साहिब-ए-मय्यत की नेकी की दलील। अल्लाह तआला मरहूम को ग़रीक़ रहमत फ़रमाये अमीन। (22/सितम्बर 2015 ई)

## ऐसी कैफियत कभी नहीं देखी

गालिबन जनवरी 1996 ई की बात है कि राकिमुस्सुतूर(लेखक) हज़रत ताजुशरीफ़ा के हमराह लुधियाना (पंजाब)के तब्लीगी सफ़र पर था। जनाव ऐनुलहक रज़वी की दअवत पर लुधियाना पहली बार हज़रत का जाना हुआ। दिन में महल्ला गयासपुरा में एक मदरसा का संगे बुनियाद रखा कि शब में जलसा का एहतिमाम था। जलसा में तक़रीबन दो लाख इंसानों का हुजूम था,ऐसा लगता था कि जैसे पूरा सूबा पंजाब आज लुधियाना में जमा हो गया है। हज़रत तक़रीबन एक बजकर कुछ मिनट पर जलसा गाह में तशरीफ़ ले गये। नअरों के पुर हुजूम शोर ने हज़रत के मिज़ाज को बरहम कर दिया, फिर मैंने हज़रत का मिज़ाज बनाया और अ़वाम को ख़ामोश किया। हर मुक़र्रिर व शाइर हज़रत की शान में मन्क़बत पढ़ता था। हज़रत ने मना फ़रमाया कि मेरी कसीदा ख़्वानी के बजाये इस्लाम व सुन्नियत पर तक़रीर करें और शोअरा नअते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पढ़ें। इख़िततामे इज्लास से क़ब्ल तक़रीबन 75 हज़ार फ़रज़न्दाने तौहीद ने हज़रत के हाथ में अपना हाथ दे कर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की गुलामी का पट्टा डालने का ओहद व पैमान किया।

वहीं पर चन्द वहाबी देवबन्दी भी जलसा सुनने और हज़रत का दीदार करने आये थे। हज़रत को देखते ही मिम्बर पर आ गये। किसी ने मुझ से कहा कि यह



लोग आप से बात करना चाहते हैं। मैं उन की तरफ मुतवज्जोह हुआ, कहने लगे कि हम लोग मौलवी कासिम नानौतवी के कस्बा नानोतन के रहने वाले हैं, यहाँ एक फैक्ट्री में काम करते हैं। हज़रत जैसी नूरानी शख्सियत आज तक हम ने नहीं देखी है। और आज हम ने सुन्नी और देवबन्दी का फर्क समझा है, इसलिए अब हम हज़रत के हाथ पर तौबा व रजुअ इलल्लाह करना चाहते हैं। मैं फौरन हज़रत के पास ले गया, पूरा वाकिआ बयान किया। हज़रत ने तौबा व तजदीदे ईमान कराया। दाखिले इस्लाम व सुन्नियत फ़रमा कर मुरीद किया। ग़ालिबन पाँच लोग थे। यह है हज़रत के चेहरए जेबा की जुफ़ेशनियाँ जिन की नूरानी शुआओं से नज़रें ख़ैरा हो जाती हैं, और दिल व दिमाग़ की सलतनत बदल जाया करती है।

दूसरे दिन लुधियाना से सहारनपुर जाना था, हकीम मुहम्मद अहमद कादरी मोहतमिम दारुलइलूम ग़ौसिया रज़विया बरकात साबिर सहारनपुर से हज़रत मुलाकात करना चाहते थे। मुझे रास्ता मालूम नहीं था, सहारनपुर दो पहर 12 बचे पहुँचे, एक जगह रास्ता मालूम किया तो बताया गया कि बरेलवी मस्जिद पूछिये तो हर आदमी बतादेगा। फिर हर जगह मैं "बरेलवी मस्जिद" की जगह का पता मालूम करता रहा, कहीं कोई दिक्कत नहीं आई और मुहम्मद अहमद साहब की ख़ानकाह में पहुँच गये, हकीम साहब और अहबाब की मुसर्तों की इन्तिहा न थी। दो घन्टा कियाम कर के वापस लुधियाना आये, और

ट्रेन का इन्तिज़ार करने लगे। मुझ से बेवकूफी यह हुई कि स्टेशन से गाड़ी वाले को वापस भेज दिया, इस ख़याल से कि अब ट्रेन का वक़्त हो गया। कहाँ यह परेशान होंगे और इन्तिज़ार करेंगे। मगर प्लेटफ़ॉर्म पर पहुँच कर मुझे अपनी ग़लती का एहसास हुआ कि ट्रेन तो दो घन्टा लेट है। सामान प्लेटफ़ॉर्म पर रखा और कुर्सी पर हज़रत बैठ गये। कुछ देर बाद टहलने लगे, नमाज़ का वक़्त हुआ जोहर और अस्त्र की नमाज़ एक ही वज़ू से प्लेटफ़ॉर्म पर पढ़ी, ट्रेन का ऐलान हुआ कि पंजाब मील आधा घन्टा और लेट हो गई है। मैं दिल ही दिल में यह महसूस कर रहा था कि हज़रत नाराज़ होंगे, मगर हज़रत उस दिन बहुत खुश थे। इस दिन प्लेटफ़ॉर्म पर कम ही आदमी थे, मैं हज़रत के साथ पूरे प्लेटफ़ॉर्म पर टहलता रहा, हज़रत छड़ी लिए टहलते हुये बहुत खुश नज़र आ रहे थे, हज़रत के चेहरे मुबारका पर इतनी ज़्यादा खुशी के आसार लबों पर मुसकुराहटें, और गुफ़्तगु में लताफ़त बर्क़ रफ़्तारी, मुतानत व संजीदगी मैंने कभी नहीं देखी। उस दिन का नुक्शा आज भी मेरे क़ल्ब व ज़हन पर नक्श है। जब याद करता हूँ तो हर चीज़ ज़हन के पर्दे पर उतर कर मेरी नज़रों के सामने आ जाती है, कि आज हज़रत की खुशी व मसरत का राज़ क्या है। मैंने सालहा साल के तवील सफ़र के दौरान ऐसी तमानियत व रुहानियत नहीं देखी। तक़रीबन 3 घन्टा का लम्बा इन्तिज़ार मालूम ही नहीं हो सका कि कब शुरू हुआ और कब जाकर ख़त्म हो गया।

कंजुलईमान तस्ही शुदा की इशाअत का ईमान अफरोज वाकिआ गुजस्ता दिनों गालिबन ईदुलअज़हा के दूसरे दिन 11 जिलहिज्जा 1436 हिजरी 26 सितम्बर 2015 ई को राकिमुस्सुतूर से मुलाकात के लिए हज़रत मौलाना मुहम्मद यामीन नईमी साहिब उस्ताज़ जामिआ नईमिया मुरादआबाद व मालिक नईमिया बुकडिपो देहली दफ़तर में तशरीफ़ लाये। आप से राकिम के कदीमी मरासिम हैं। पुराने कुतुब ख़ाना का हाल दरयाफ़्त करने पर उसकी पूरी तारीख़ बयान कर दी। फिर मैंने मालूम किया कि आप की तहरीक पर हज़रत ताजुशशरीआ ने "तर्जमा कुरआन कंजुलईमान" की तस्हीह फ़रमाई थी, उस की तफ़सीलात ज़हन में मौजूद हो तो गी बयान कर दें।

हज़रत मौलाना यामीन नईमी साहिब किब्ला ने बताया कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाजिले बरेलवी की हयात में सदरुलअफ़ज़िल हज़रत मौलाना सय्यद नईमुद्दीन मुरादआबादी ने "कंजुलईमान मअ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" की किताबत करा कर सब से पहले मुरादआबाद से तबअ कराया। और तबाअत का काम बड़े ऐहतिमाम से किया था। उस के बाद एक तवील अर्सि गुज़र गया कि "कंजुलईमान" की इशाअत नहीं हुई, जब कि मौलवी अशरफ़ अली थानवी और मौलवी अबूलउला मौदूदी के तर्जमा कुरआन की बराबर इशाअत हो रही थी उसी दरमियान चितली कब्र चूड़ी वालान देहली में एक पंजाबी सिख को उर्दू की मज़हबी किताबों की इशाअत का शौक पैदा हुआ। उस ने "कुतुब ख़ाना इशाअतुलइस्लाम"



के नाम से एक मकतबा काइम किया, देहली की सार जमीन से पहली बार और हिन्दुस्तान में दूसरी बार इस पंजाबी सिख ने कंजुलईमान शाइअ किया। कंजुलईमान की इशाअत पर जमाअते अहले सुन्नत में बहुत खुशी व मसररत महसूस की गई। यह सिलसिला सालों चलता रहा, 1990 ई में मौलाना यामीन नईमी का कुतुबखाना इशाअतुलइस्लाम देहली जाने का इत्तिफाक हुआ, कुतुबखाना ने जमीर को झंझौड़कर रख दिया। देहली से आकर आप ने सब से पहले यह पूरा माजरा हज़रत मौलाना मुबीनुद्दीन अमरोहवी अलैहिर्रहमा को सुनाया, आप ने यह अज़म मुसम्म कर लिया था कि कंजुलईमान की इशाअत हम करेंगे। हज़रत मुहदिदस अमरोहवी ने आप की हौसला अफ़जाई की और रहनुमाई करते हुये फ़रमाया कि मौलाना बरेली शरीफ़ चले जाइये, और खान्वादाए आला हज़रत की बुजुर्ग शख़्सियात से पूरा वाकिआ बयान करिये इंशाअल्लाह तआला कोई न कोई सबील ज़ारूर निकलेगी। आप दो साल तक ग़ौर व फ़िक्क करते रहे और दर्द व कुर्ब बढ़ता रहा, 1993 ई में आस्तानाए आलिया रज़विया पर हाज़िर हुये। हाज़िरी से क़ब्ल की शब में आप ने ख्वाब देखा कि मैं किसी तकलीफ़ में कुछ बयान कर रहा हूँ, कुरआन शरीफ़ की तिलावत कर रहा हूँ कि इतने में हज़रत ताजुशशरीआ तशरीफ़ ले आये मुलाक़ात हुई, ख्वाब में मज़ीद और क्या बात हुई यह याद नहीं रहा। इस ख्वाब की ताबीर आप ने यह समझी कि मुझे बरेली शरीफ़ फ़ौरन हाज़िर होना चाहिए। आप दूसरे दिन बरेली

पहुँचे, सब से पहले आस्तानाए आलिया रज़विया पर हाज़िरी देने के बाद आप ने इरादा किया कि अब हज़रत ताजुशरीआ और हज़रत मुफ़्ती काज़ी अब्दुरहीम बस्तवी साहब अलैहिर्रहमा सदर मरकज़ी दारुलइफ़ता बरेली शरीफ़ से शर्फ़ मुलाकात हासिल कर के अर्ज़ मुददआ करूँ।

आप का बयान है कि मैं जैसे ही आस्ताना शरीफ़ से हाज़िरी देकर चौखट पर पहुँचा ही था कि पीछे से हज़रत ताजुशरीआ तशरीफ़ ले आये। मअन हज़रत ने फ़रमाया कि कई दिनों से आप का ख़्याल ज़हन में आ रहा था कि ख़त लिख कर आप को बुलाऊँ, मगर प्रोग्राम की मसरूफ़ियात में मोहलत नहीं मिल पाती थी। बहुत अच्छा हुआ कि आप से यहाँ मुलाकात हो गई, आप यहीं रुकें, मैं अन्दर जा कर सलाम अर्ज़ कर के आ रहा हूँ। आस्ताना शरीफ़ से बाहर निकलने पर हज़रत ताजुशरीआ ने मेरा हाथ अपने हाथ में पकड़ लिया और अपनी नशिस्तगाह में ले आये। फिर आप ने कंजुलईमान की इशाअत का एक ख़ाका हज़रत के सामने पेश किया, और पंजाबी सिख की इशाअत में ख़ामियाँ बताईं। हज़रत बहुत खुश हुये, फ़रमाया कि मैं खुद यही चाह रहा था कि उस की तस्हीह हो जाये फिर इशाअत की जाये। यह हज़रत की करामत ही है कि दिल का हाल मालूम कर लिया, एक अज़ीम इशाअती ख़ाका की ताईद व हिमायत फ़रमा कर मौलाना यामीन नईमी के इरादों को इस्तोहकाम अज़ा कर दिया।

आप ने बताया कि हज़रत ताजुशरीआ की सर बराही में 1993 ई में "कुरआन कम्पनी बरेली" के नाम से एक इशाअती इदारा का नाम दिया गया। इसी इदारा के नाम से कंजुलईमान की इशाअत हुई, तस्हीह की मुकम्मल ज़िम्मेदारी हज़रत ताजुशरीआ ने अंजाम दी, और वक़्तन फ़वक़्तन अल्लामा मुफ़ती काज़ी अब्दुर्रहीम बस्तवी मुआविनत करते थे, हज़रत ने पूरे कंजुलईमान में किताबत की तीन सौ ग्यारह गलतियाँ निकालीं। तस्हीह का तरीका यह था कि हज़रत मरकज़ी दारुलइफ़ता में रौनक अफ़रोज़ होते और सामने कंजुलईमान होता तस्हीह दर तस्हीह में गलतियों के इम्कान को ख़त्म करने के लिए हज़रत ने हिन्दुस्तान और पाकिस्तान से शाइअ शुदा 11 नुस्खे जमा किए, अलाहिदा अलाहिदा तबअ शुदा नुस्खों का तकाबुल करते और हर एक नुस्खे को दूसरे नुस्खे से मिलाते थे। हज़रत के सामने हज़रत सदरुलअफ़ाज़िल अलैहिर्रहमा का मतबूआ नुस्खा भी पेश नज़र रहा है। मुकम्मल एक साल की मेहनत शाक़ का के बाद कंजुलईमान की किताबत मुरादआबाद में हो कर मन्ज़रे आम पर आया। हज़रत ताजुशरीआ ने अपनी जेबे ख़ास से इशाअत के लिए चालीस हज़ार रुपये मौलाना यामीन नईमी साहब को दिए। यही तस्हीह शुदा नुस्खा अब मुतअदिद बार शाइअ हो चुका है। यह उस दौर की बात है जब एक छोटी सी किताब को छपवाने के लिए मुसन्निफ़ीन सरमायादारों के चक्कर लगाया करते थे, मगर अब हालात बदल चुके हैं, जमाअत अहले सुन्नत के पास



सरमाया की कोई कमी नहीं है, और न ही इंदारों के पास कोई कमी है।

मौलाना यामीन नईमी साहब का ख्वाब में हजरत ताजुशरीआ को देखना, हजरत मुहदिदसे अमरोहवी की रहनुमाई, फिर हाजिरी, दरे आस्ताना पर हजरत से अचानक मुलाकात, हजरत का इशाअत के लिए आप को बुलाने का अज्म, यह सब ऐसे हुआ जैसे कि बाहम दोनों गुफ्त व शुनीद कर चुके हों। आप का खुद कहना है कि यह तारीखी सफ़र मेरी जिन्दगी की मेअराज है, और मैं इसको हजरत ताजुशरीआ की करामत तसव्वुर करता हूँ। (3 अक्टूबर 2015 ई)

### बयक वक्त दो जगह मौजूदगी

2013 ई में हजरत ताजुशरीआ के हमराह साहबज़ादा मौलाना अस्जद रज़ा क़ादरी मोहतमिम जामिअतुर्ज़ा बरेली शरीफ़ साउथ अफ़रीका के अलावा दारुस्सलाम, तंज़ानिया, हरारे, ज़िम्बाब्वे और मलावी वगैरा के तब्लीगी सफ़र पर तशरीफ़ ले गये थे। वापसी पर मलावी का एक वाकिआ जो हजरत की ज़िन्दा व जावी करामत से मन्सूब है, राकिमुस्सुतूर से बयान किया। कि जुमा का दिन था मुहम्मद असलम मिर्ज़ा रज़वी मेरे पास बेताबाना आये और बग़लगीर हो गये और कहने लगे कि आप ने नमाज़ कहाँ पढ़ी। मैंने बताया कि फ़लाँ मस्जिद में पढ़ी, वहाँ हजरत ने नमाज़े जुमा अदा कराई, असलम मिर्ज़ा ने नमाज़े जुमा किसी दूसरी मस्जिद में पढ़ी थी, यहाँ ऐसे नमाज़ जुमा हजरत ताजुशरीआ की ज़्यारत और मुसाफ़ा

व दस्त बोसी भी की थी, असलम गिर्जा साहब का अपना मस्जिद में ज़्यादा करना और हज़रत का किसी दूसरी मस्जिद में नमाज़ पढ़ना, वाक़ेई किसी अज़ीम करामत से कम नहीं है। इसी मजलिस में किसी ने कहा कि हज़रत ग़ौसे अज़म शैख़ा अब्दुलकादिर जीलानी बग़दादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयक वक़्त 70 जगह जलया नुमाई कर सकते हैं, तो उन के जानशीन और खलीफ़ा बयक वक़्त दो जगह क्यों नहीं हो सकते। असलम गिर्जा साहब हज़रत की यह करामत देख कर फ़ौरन घर गये और अपने बीवी व बच्चों को ला कर हज़रत के दस्ते हक़ पर बैअत करा दिया। और उन्होंने यह अपना चशम दीद वाकिआ तमाम लोगों से बयान कर के हैरत में डाल दिया। वह कहते हैं कि उस दिन से मेरी अक़ीदत व मोहब्बत में हज़ार दर्जा इज़ाफ़ा हो गया। (5 अक्टूबर 2015 ई)

### हवाई जहाज़ का वापस आना

7/अक्टूबर 2015 ई बाद नमाज़े ज़ोहर कादरी राइस मील बेहड़ी ज़िला बरेली में बैअत व इरशाद का जलसा मौलाना मुख़्तार अहमद कादरी ने मुन्आकिद किया था। हज़रत ताजुशरीआ के हमराह राकिम(लेखक) के अलावा मौलाना मुहम्मद आशिक हुसैन कश्मीरी और मुफ़्ती शुऐब रज़ा कादरी भी थे। मोहतरम मुफ़्ती साहब ने अपनी तक़रीर में अपना ऐनी मुशाहिदा बयान किया कि गुज़श्ता साल हज़रत के हमराह जिम्बाब्वे के शहर हारारे के एयरपोर्ट पर हम लोग दूसरे शहर की फ़्लाइट पकड़ने के लिए पहुँचे, ताख़ीर हो जाने की वजह से एयरपोर्ट

इन्तिज़ामिया ने कहा कि प्लेन रनवे पर जा चुका है। अब आप का जाना मुम्किन नहीं है। हज़रत से मुख़ातब हो कर अफ़सोस का इज़हार करने लगे कि अब दूसरी प्लाइट भी नहीं है। प्रोग्राम मुतास्सिर हो जायेगा, काफी लोग जमा हुये होंगे। प्रोग्राम ऑर्गेनाइज़र का क्या हाल होगा। हज़रत ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला पर तवक्कुल करो, अल्लाह जो करेगा बेहतर होगा, परेशान होने की कोई बात नहीं है। चन्द मिनट ही गुज़रे थे कि इन्तिज़ामिया के अहले कार आये, कहने लगे कि आप लोग चलें नामालूम क्या वजह रही कि प्लेन रनवे पर जाने के बाद वापस आ गया है। शायद आप लोगों को ले जाना मक़सूद था।

मुफ़्ती शोएब रज़ा साहब ने तक़रीर में यह भी कहा कि उदयपुर में शहरी हवा बाज़ी वज़ीर के लिए सिर्फ़ एक बार प्लेन रनवे पर जा कर वापस आया है, और न आज तक की तारीख़ में मैंने कहीं सुना और न कभी देखा कि ऐसा हुआ हो, मगर यह हज़रत की करामत ही है कि हवाई जहाज़ उड़ने के बाद फिर दोबारा वापस आया। और हम लोग खुदा का शुक्र अदा करते हुये प्लेन में बैठ गये। (10/अक्तूबर 2015 ई.)

### बेटे की पैदाइश के लिए दुआ

हुज़ूर मुफ़्ति ए आज़म कुदिदसा सिरुहु के ख़लीफ़ा व नवासा हज़रत मौलाना अश्शाह ख़ालिद अली ख़ाँ बरेलवी के दामाद मौलाना अश्शाह मोहम्मद शिम रज़ा ख़ाँ कादरी साकिन मोहल्लाह सौदागिरान हर रोज़ हज़रत की



ख़िदमत में हाज़िर बाश हो कर फ़ैज़याब हुआ करते हैं। एक दिन मुझ से मेरे बच्चों के बारे में मालूमात हाशिल कर रहे थे कि पलट कर मैं ने भी मोहतरिम मियाँ से उन की औलाद के बारे में दरयाफ़्त कर लिया, कहने लगे कि तीन लड़कियाँ हैं और एक लड़का है, जो हज़रत ताजुशरीफ़ा की दुआओं का मरहून मिन्नत है। मैंने सवाल किया वह कैसे बताया कि मेरी अहलिया मोहतरमा ने कहा कि आप हज़रत की ख़िदमत में जाते हैं तो लड़के के तवल्लुद होने की दुआ करायेँ, इस पर मोहतरिम मियाँ ने कहा कि मुझे अपने ज़ाती मुआमलात में कुछ कहते हुये शरमिन्दगी महसूस होती है, इस पर मोहतरमा ने हौसला दिया कि बुजुर्गों से दुआयेँ कराई जाती हैं, उन की दुआओं में वह तासीर होती है जिस से तक्दीर व तदबीर बदल जाया करती है।

आप का बयान है कि उन जुमलों से हौसला मिला, हिम्मत बंधी, हज़रत से दुआ की गुज़ारिश की कि हज़रत मेरी अहलिया ने बेटे के लिए दरख़्वास्त की है, कि तीन लड़कियाँ हैं। हज़रत ने हाथ उठा कर दुआ कर के फ़रमाया कि इंशाअल्लाह तआला बेटा पैदा होगा, अलहम्दु लिल्लाह चन्द माह बाद बेटा ही पैदा हुआ, जिस का नाम हज़रत ने ज़क़वान रज़ा ख़ाँ (22/दिसम्बर 2013 ई) तजवीज़ फ़रमाया, उस के बाद फ़रमाया कि ज़क़वान हज़रत अबू हुदैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ख़ास शागिर्द का नाम है। (20/अक्तूबर 2015 ई 6/महरम 1437 हिजरी)

स्वाब में मुजाहिदे मिल्लत के साथ देखा

अल्लामा मौलाना मुहम्मद आशिकुर्रहमान हबीबी शैखुल हदीस जामिआ हबीबिया इलाहअबाद तहरीर करते हैं कि हज़रत हुज्जतुलइस्लाम मौलाना हामिद रजा ख़ाँ बरेलवी कुदिदसा सिरुहु बन्दा के शैख़ हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत कुदिदसा सिरुहु के शैख़ हैं। हज़रत ताजुश्शरीआ नबीरए हज़रत हुज्जतुलइस्लाम हैं। हुज़ूर मुजाहिद मिल्लत कुदिदसा सिरुहु ने हज़रत मुफ़्ती आज़म हिन्दु कुदिदसा सिरुहु के लिए "चचा पीर" के अल्फ़ाज़ इस्तिमाल किए, उन्हें हमेशा "चचा पीर" जाना और माना और हमेशा "चचा पीर" की तरह उनका एहतिराम फ़रमाया। हज़रत ताजुश्शरीआ जानशीन हज़रत मुफ़्ति ए आज़म हिन्द हैं।

एक तरफ़ मुतज्जकरा बाला निस्बतों का इदराक़ होता गया, दूसरी तरफ़ मौसूफ़ की दूसरी फ़ज़ीलतों को भी पहचाना। बन्दा ने फ़ज़ाइल को भी मुलाहिज़ा किया तस्नीफी कार नामों का भी मुशाहिदा किया। बन्दा हज़रत ममदूह की कई तसानीफ़ पर अपने तास्सुरात का इज़हार भी कर चुका है। इस तरह इस "अख़्तर आज़म" की तरफ़ के क़ल्ब का मैलान हो गया।

कुरआन को खुदा की बनाई किताब क़रार देने पर गिरफ़्त करने और तौबा करवा देने के बाद कुतुब "बशरा" पर तक़रीज़ लिखने की वजह से हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत कुदिदसा सिरुहु पर कुफ़्र का हुक्म किया गया और तौबा, तजदीदे ईमान व तजदीद निकाह का मुतालबा किया गया। इस पर मुसन्निफ़ "बशरा" की जानिब से

ऐबारत की तौजीह पर मुश्तमिल इस्तिफ़ता मुफ़ती आज़म हिन्द कुदिदसा की ख़िदमत में पेश किया गया,और हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत कुदिदसा सिरुहु ने यह फ़रमाया कि "मुसन्निफ़ की इस तौजीह के बाद अगर हज़रत मुफ़ती आज़म हिन्द हुक्म फ़रमायेंगे,मैं यह सब करूँगा। लेकिन उस ज़माने में जो साहिब हुज़ूर मुफ़ती आज़म हिन्द की बारगाह में रिसाई के लिए वास्ता उज़मा की हैसियत रखते थे,उन की मेहरबानी की बदौलत इस इस्तिफ़ता पर हज़रत मुफ़ती आज़म हिन्द की तस्दीक़ से मुज़य्यन फ़तवा एक तवील मुद्दत के गुज़र जाने के बावजूद नहीं हासिल हो सका,और इस बात का अन्देशा पैदा हो गया कि आगे चल कर उसका बड़ा भयानक नतीजा सामने आयेगा। उस वक़्त हज़रत शाहज़ादा आला हज़रत नबीरए हुज्जतुलइस्लाम जानशीन मुफ़ती आज़म हिन्द मुफ़ती मुहम्मद अख़तर रज़ा खाँ साहब दामत बरकातुहुमुल आलिया आगे बढ़े,फ़तवा लिखा,जिस पर हज़रत मुफ़ती आज़म हिन्द ने तस्दीक़ फ़रमाई,और हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत,नीज़ मुसन्निफ़ "बशरा"की बरात साबित हो गई। हज़रत मम्दूह की तरफ़ बन्दा के मैलाने क़ल्ब का यह एक बहुत बड़ा सबब है। यह वाकिआ 1978 हिजरी का है।

बन्दा बहुत कम ख़्वाब देखता है,देखे हुये उन्हीं कम ख़्वाबों में से 1995 ई का एक ख़्वाब है। बन्दा ने देखा कि हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत तशरीफ़ फ़रमा हैं,और आप के क़रीब हज़रत ताजुशरीआ भी हैं।



जब बन्दा ने हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत की कदम बोसी की, हज़रत मम्दूह ने चन्द कुतुब व रसाइल बन्दा को इनायत फ़रमाये। 1999 हिजरी में जामिआ हबीबिया इलाहआबाद के सालाना जलसा के मौका पर जब हज़रत मम्दूह तशरीफ़ लाये हुये थे, बन्दा ने आप की मौजूदगी में तक़रीर करते हुये इस वाकिआ को बयान किया था। हज़रत अल्लामा मुहम्मद अरबी अल मग़ि़बी कुदिदसा सिरुहु के मज़कूर को भी बन्दा ने इस मौका पर तक़रीर करते हुये सुनाया था, और सुबह नैनी जेल रोड इलाहाबाद में बीड़ी वाले शहन्शा साहब के मकान पर हज़रत मम्दूह को यह बताया था कि हज़रत अल्लामा मुहम्मद अल अरबी मौसूफ़ ही को मग़ि़बी भी कहा जाता है। तबानी भी कहा जाता है। हज़रत अल्लामा तबानी के कौल मज़कूर को बन्दा ने 10/शव्वाल 1424 हिजरी को शरई कौंसिल ऑफ़ इन्डिया, बरेली शरीफ़ के इफ़्तिताह के मौका पर जलसे में तक़रीर करते हुये भी सुनाया था। मौला तआला हज़रत की हयात ज़ाहिरा को दराज़ फ़रमाये और अख़्तर सतान बन्दा के इस नय्यरे आज़म के फ़ुयूज़ से मिल्लते इस्लामिया को बख़्शे, आमीन।

### वालिद माजिद की करामत

हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अब्दुलवाहिद कादरी अमीरे शरीअत हॉलैन्ड का बयान है कि साहबज़ादए मुफ़स्सिरे आज़म हिन्द हज़रत अल्लामा शाह मुफ़्ती अख़्तर रज़ा ख़ाँ साहब और हज़रत मौलाना शमीम अशरफ़ साहब दोनों साथ साथ तहसीले इल्म के लिए जामिआ अज़हर

मिस्र तशरीफ ले गये थे। मौलाना शमीम अशरफ साहब मिस्र ही में थे कि इन्डिया में उनके वालिद माजिद का इन्तेकाल हो गया। मौलाना शमीम अहमद साहब अजहरी ने इस सानेहा की इत्तेलाअ बजरीआ खत हुज़ूर मुफ़स्सिरे आज़म हिन्द को दी। हज़रत ने इस खत को पढ़ कर नमदीदगी के साथ अफ़सोस का इज़हार किया और फ़रमाया "अख़तर रज़ा का भी यही हाल होगा, वह मेरे इन्तिकाल पर यहाँ मौजूद नहीं होंगे" और हुआ भी यही कि हुज़ूर मुफ़स्सिरे आज़म हिन्द का विसाल मुबारक 1965 ई में हुआ और हुज़ूर ताजुशरीआ मदज़िल्लाहु आली 1966 में सनद फ़रागत हासिल कर के बरेली शरीफ़ वापस पहुँचे।

इस मौक़े से हुज़ूर मुरशिदी सय्यदी मुफ़स्सिरे आज़म हिन्द मुफ़ती इब्राहीम रज़ा खाँ रज़वी जीलाना मियाँ अलैहिर्रहमा की करामत का ज़हूर होता है, और यह हकीकत है कि वली की ज़बान से जो बात निकलती है वह मनसए शहूद पर जलवा गर हो ही जाती है। और उस से अपने फ़रज़न्द से क़ल्बी लगाओ व मोहब्बत का भी अन्दाज़ा होता है।

### मर्द ग़ैब का नाश्ता लाना

मुफ़ती मुहम्मद सलीम अख़तर बेलाली दरभंगा का बयान है कि आज से तक़रीबन बन्दरह बरस पहले में उदयपुर (राजिस्थान) के करीब सड़ाड़ा क़स्बा में इमाम अहमद रज़ा कांफ़्रेंस में ख़िताब करने के लिए मदरू था। खुश किस्मती से सरकार ताजुशरीआ भी उस इलाका में

कैजान तकरीम करने के लिए तशरीफ लाने वाले थे। हवाई अड्डे पर 21 तोपों की सलामी का एहतिमाम किया गया था, 21 गाड़ियाँ हज़रत की कार के पीछे रजा कारों से भरी हुई इस्तिक़बाल के लिए मौजूद थीं, हवाई अड्डे का अमला उस अजीमुशान शख्सियत को देखने के लिए परेशान था कि वह कौन सी ऐसी हस्ती है जिन के इस्तिक़बाल की यह तैयारियाँ हैं, हज़रत ताजुशरीआ जब हवाई जहाज से उतरे तो बरादराने वतन की अकीदत व मोहब्बत और उन से वावस्तगी की कैफ़ियत इहाता बयान में लाना मुश्किल है। फिर जब जलसा गाह में हज़रत रौनक अफ़रोज़ हो गये तो मुन्तज़िमीन जलसा से वहाँ के बरादराने वतन ने खासी गुज़ारिश की कि हज़रत के दीदार का हम को मौका दिया जाये। मैंने अपनी आँखों से देखा कि हज़रत ताजुशरीआ आलिमाना जाह व जलाल के साथ स्टेज पर जलवा बार हैं, और क़तार दर क़तार सिर्फ़ बरादराने वतन सामने से गुज़र रहे हैं, यह तो उन का हाल था, अपनों का क्या हाल बताऊँ, हर आदमी अपना हर कुछ निसार करने को तैयार था, अजीब अकीदत व मोहब्बत का मुआमला था, यह सब कुछ उस का इज़हार था जो रब की जानिब से उन को वदीअत की गई है जिसे लोग मक़बूलियत फ़िलअबद के नाम से जानते हैं।

इस सफ़र में एक अजीब बात यह हुई जिसे मैं कभी भूल नहीं सका, और अक्सर इस वाकिआ को बता कर हम लोगों से कहते हैं कि यह हज़रत की करामत



थी। मुआमला यूँ हुआ कि जलसा रात में खत्म हुआ। सुबह हज़रत की रवानगी थी और मुझे भी वहाँ से अपने जाभिआ इस्लामिया अमानिया लवाम दरभंगा(बिहार)का सफ़र करना था,पूरी आबादी के लोग हज़रत को रुख़सत करने में लगे थे,हत्ता कि वहाँ के ख़तीब व इमाम मौलाना तय्यब रज़ा साहब जो हज़रत के मुरीद भी थे और उन्होंने ही मुझे भी मदद किया था,वह भी मुझे भूल बैठे थे। दिन के दस बज गये और मैं तन्हा कमरे में ठहरा हुआ था,सारे क़स्बे में चहल पहल हज़रत की मौजूदगी की रौनक में अजीब सा ऐहसास से दो चार था,कि अचानक एक आदमी मेरे कमरे में नाश्ता के साथ वारिद हुआ,और मेरे करीब बैठ कर कहा हज़रत ताजुशरीआ ने मुझे आप के पास भेजा है,और फरमाया है कि बिलाली को नाश्ता करा दो,बाद में किसी ने इसका इकरार नहीं किया कि हज़रत ने मुझे भेजा था,पता नहीं यह मर्द ग़ैब हज़रत की कौन सी ख़िदमत पे मामूर था। सरकारे मुफ़्ती आजम के बाद अगर कोई इतनी मक़बूल शख़्सियत नज़र आती है तो यह ताजुशरीआ की ज़ात बा बरकात है,जिधर से हज़रत का गुज़र हो जाये ऐअलान आम हो जाता है कि इधर से सरकार गुज़रने वाले हैं,फिर ख़लाइक़ का हुजूम।

ई सआदत बज़ोर बाज़ नीस्त

ता न बख़्शद खुदाए बख़्शंद

उलमाए अहले सुन्नत बिहार ने यह महसूस किया कि हज़रत ताजुशरीआ का अगर दौरा हो जाये,और

लोग हज़रत की ज़्यादा से मशरफ़ हो जायें तो यह सुन्नियत का एक बड़ा काम होगा। इस सिलसिले अज़्जहब में दरभंगा शहर का नाम आया और सरकार ने मन्ज़ूरी इनायत फ़रमा दी। यह बात हज़रत के तअल्लुक से काफी मशहूर है कि हज़रत लोगों से कम मिलना पसन्द फ़रमाते हैं। ख़लवत पसन्द नहीं, अज़ दिहाम, दस्त बोसी कदम बोसी से दूरी पसन्द है और उलमा अ़वाम व ख़्वास का यह हाल कि मुझे मौका मिले तो मुझे मौका मिले हज़रत का क़ियाम दरभंगा में मुफ़ती हालैन्ड हज़रत मौलाना अब्दुलवाज़िद कादरी साहब क़िब्ला के दौलत कदा पर था हज़रत के हमराह मौलाना मुहम्मद शहाबुद्दीन रज़वी भी ख़ादिम ख़ास साथ आये थे। हमीदियस क़िल्आ घाट के वसीअ व अ़रीज़ मैदान में जलसा का एहतिमाम था। अल्लामा मुफ़ती मतीउर्रहमान साहब क़िब्ला अल्लामा मुफ़ती महबूब रज़ा कादरी साहब क़िब्ला वग़ैरा पेश पेश थे। हज़रत का हुक्म था कि कोई दस्त बोसी न करे। मेरे साथ सारे उलमा को हिसार के लिए मुतअय्यन कर दिया गया, हज़रत काफी खुश थे कि मेरी मान ली गई है, लोगों का हुजूम बे पाया टूटा पड़ रहा था, हर कोई अपनी आँखों में इस रुख़े ज़ेबा के जमाल को समा लेना चाहता था। अज़ीब दीवानगी थी। हज़रत से मौजूद उलमा ने नअत मुक़द्दस सुनाने की गुज़ारिश की, जिसे क़बूलियत का शर्फ़ मिल गया। क्या बताऊँ कि सुनाने वाला एक आशिके रसूल अपने दिल की गहराई से महबूब खुदा की बारगाह में कलाम पेश कर रहा था, एक

तो कलाम का असर फिर जब उसी कोई गुहिवे सादिक पेश कर रहा हो तो असर का दो बाला हो जाना फितरी था। एक पुर कैफ माहौल सारे मजमा पर तारी था। कुछ लोगों ने सोचा अच्छा मौका हाथ आया, हज़रत कलाम पढ़ रहे हैं। चलो कुछ नज़र भी दे देंगे, और इसी मौका पर दस्त बोसी का शर्फ भी हासिल कर लेंगे, ज्यों ही दो चार आदमी गये हज़रत ने कलाम को रोक दिया और फरमाया कि अब कोई मेरे दरगियान मुख़्तल होने आया तो मैं स्टेज से उतर जाऊँगा। लोग रुक गये, और हज़रत का फ़ैज़ान ख़ूब ख़ूब बरसा, आज भी लोग जब इस मन्ज़र को याद करते हैं तो ख़ूब लुत्फ़ अन्दौज़ होते हैं।

### मुक़द्दमा में काम्याबी एक करामत

अल्लामा मुफ़्ती अब्दुलमन्नान कलीमी शहरे मुफ़्ती मुरादआबाद व शैखुलहदीस ज़ाभिआ अकरमुलउलूम लाल मस्जिद का बयान है कि फ़कीर अर्स 1985 ई से मख़दूमी ताजुशशरीआ की ख़िदमत व मज़लिस और बाज़ अहम अस्फ़ार में मुईत व रफ़ाक़्त का शर्फ़ हासिल कर चुका है मैंने हर बार हज़रत किब्ला को तसल्लुब फ़िददीन का मज़हर अतिम और अपने अस्लाफ़ के हमा गीर अख़लाक़ व औसाफ़ और इल्म व फ़ज़ल का सच्चा जा नशीन पाया। जब किसी उनवान पर आप का कलम उठता है तो ऐसा महसूस होता है कि सय्यदिना आला हज़रत का कलम सियाले रवा दवा है। और जब ज़बान खुलती है तो यह महसूस किए बग़ैर कोई नहीं रहता कि सय्यदिना हुज़ूर मुफ़्ती आज़म हिन्द की शान अल्मियत



नुमाया है।

फ़िक्ही मजलिस हो या दारुलइफ़ता, उलमा की जमाअत हो या फुक़हा का ग़िरोह, मुतकल्लिमीन की नशिस्त हो या मुहदिदसीन का मजमा, हर जगह आप मुक़तदा और मीरे मजलिस नुमाया नज़र आते हैं।

यह तो इल्म व फज़ल की बात हुई। अल्लाह तआला ने आप को सीरत व सूरत, हिल्म व बुर्दबारी और शफ़क़त व मेहरबानी में भी ऐसा खुसूसी दर्जा अता फ़रमाया है कि आप की पहली ज़ियारत के बाद ही तिश्निगाने रुहानियत आप की तरफ़ खिंचे चले आते हैं और यह महसूस किए बग़ैर नहीं रहते कि आप अपने अस्ताफ़ कराम और ख़ान्दानी मुक़तदियाने ऐज़ाम की बोलती तस्वीर और हम पैकर हैं।

फ़कीर ने बारहा हज़रत किब्ला से इक्तिसाब फ़ैज़ के लिए इस्तिफ़ता किया जिस के जवाब में आप ने ऐसे ऐसे लअल व गौहर के फूल बरसाये कि सुन कर इंसान हैरतज़दा हो जाये और यह मानने पर मजबूर हो जाये कि यह अपने वक़््त के आलिमे रब्बानी और फ़किहुन्नफ़्स की हैसियत रखते हैं।

फ़कीर इस अमर के बयान में अपने को निहायत खुश नसीब समझता है कि 1986 ई/1407 हिजरी में जब आप को सऊदी हुकूमत ने गिरफ़्तार किया तो मैंने हज़रत की हिमायत व बरअत में तक़रीबन बीसों किस्तों में अपने रुशहात क़ल्म के ज़रीआ नजदी हुकूमत के परखचे उड़ाये, और हज़रत किब्ला की बारगाहे कुदिदसा

में अपने कलम के ज़रीआ बेहतरीन ख़िराज अकीदत व मोहब्बत पेश करने की कोशिश की। जिस के शाहिद अदल की हैसियत से माहनामा शुन्नी दुनिया के कदीम शुमारें मौजूद हैं।

दूसरा जब हिन्दुस्तान में रेडियो और टेली वीज़न की हिल्लत व हुरमत की बहस छिड़ी तो वहाँ के बहुत सारे कददानों में उस फकीर का नाम भी लिया जा सकता है।

तीसरा यह कि जब मुरादआबाद में आप पर एक नाम निहाद कम ज़रफ़ और बदतरतीन किस्म के हासिद मौलवी ने "मसअला अल्लाह गिराँ" में अपन मनशा के मुताबिक आप की जानिब से फतवा न मिलने की रफ़ाबत का बदला लेने और आप की परोकार शख़्सियत को मजरूह करने की नारवा ज़सास्त करते हुये आप पर एक झूटा मुक़दमा मुरादआबाद कोर्ट के ज़रीआ काइम कराया तो इस नाचीज़ कलीगी ने फ़ाजिल जलील मौलाना मुहम्मद शहाबुद्दीन साहब रज़वी अताउल्लाह उमरा व अलहाज अफ़रोज़ रज़ा ख़्वाहिर ज़ादा हुज़ूर ताजुशरीआ और साहबज़ादा गिरामी अल्लामा अस्जद रज़ा ख़ाँ साहब वैगारा के बाहमी मशवरा से मुक़दमा के पैरोकारी की मुकम्मल जिम्मेदारी अपने जिम्मा ली। और मुरादआबाद के ज़िला कोर्ट में जारी इस मुक़दमा की ऐसी पैरवी की कि मुख़ालिफ़ीन के पाँव उखड़ गये और उन को ख़ासरुमराम होना पड़ा, और अल्लाह तआला ने हज़रत क़िल्बा को ऐसी फ़तह और जीत अता फ़रमाई

जिस का तसव्वुर नहीं किया जा सकता है। इस अजीमुश्शान कामयाबी पर यह कहना मुबालगा होगा कि आप के जददे करीम सय्यदिना इमाम अहमद रजा फाजिले बरेलवी रजियल्लाहु तआला अन्हु पर भी एक मुकद्दमा काइम किया गया, जिस की मुकम्मल पैरोकारी का शर्फ सय्यदिना हुजूर सदरुलअफाजिल मुरादआबादी को हासिल हुआ। बेऐनही इसी तरह उन के फरज़न्द पर भी एक मुकद्दमा काइम किया गया जिस की पैरवी मुरादाबाद के तअल्लुक से इस नाचीज़ के हिस्सा में आई। मौलाना मुहम्मद शहाबुद्दीन रज़वी बराबर हर तारीख़ पर मुरादाबाद आते और मैं उन के साथ कोर्ट जाता, वकीलों से सलाह व मशवरा करता। मैं इस मुकद्दमा की पैरवी को अपनी खुश नसीबी व खुश बख्ती तसव्वुर किया करता हूँ। और यह इज़ान और यकीन करता हूँ कि मेरे ऊपर सय्यदिना आला हज़रत का करम हुआ, और मैं इस खानवादे के काम आ गया।

### हर दिल अज़ीज़ काइद पर फ़ख़

डाक्टर मौलाना गुलाम ज़रक़ानी बिन रईसुत्तहरीर अल्लामा अरशदुलकादरी मुक़ीम हयूस्टन(अमरीका)का बयान है कि चन्द साल कब्ल जमशेदपुर में एक मस्जिद की संगे बुनियाद के जलसे में हज़रत ताजुश्शरीआ के साथ मैं भी शरीक था। रांची एयरपोर्ट पर इंसानों का एक तूफ़ान इस्तिक़बाल के लिए हाज़िर था। ज्यों ही हज़रत मौसूफ़ बाहर तशरीफ़ लाये, लोग दस्तबोसी के लिए टूट पड़े। बड़ी मुश्किलों से मजमा को काबू में किया



गया। जब जमशेदपुर पहुँचे तो यही आलम था। लोगों का शौक जिन्नो खैज देखने के काबिल था। जज्बात के तलातिम में लोगों को अपनी सलामती की फिक्र न थी। बस ख्वाहिश थी तो यही कि हज़रत से मुसाफ़ा का मौका मयरसर आ जाये। इस दीवानगी की कैफ़ियत से मैं बड़ा मुतारिसर हुआ, और जब खिताबत के लिए खड़ा हुआ तो मैं ने कहा था कि मैं जब हज़रत मौसूफ़ और आप की मोहब्बत को देखता हूँ तो मुझे अफ़सोस भी होता है और खुशी भी। अफ़सोस इसलिए कि लोग परवाना वार इस तरह टूट पड़ते हैं कि हज़रत का संभालना मुश्किल हो जाता है, और खुशी इसलिए होती है कि हमारी जमाअत का काइद ऐसा हर दिल अज़ीज़ है कि लोग अपनी इज़्जत नफ़स हज़रत के क़दमों में लुटाने में फ़ख़ महसूस करते हैं।

और यह कैफ़ियत सिर्फ़ हिन्दुस्तान में ही नहीं होती, बल्कि बैरुने मुल्क भी हज़रत के साथ वालिहाना शग़फ़ रखने वाले जां निसार इसी तरह अपनी अक़ीदतों का ख़िराज पेश करते हैं। अभी चन्द साल क़ब्ल अमरीका के दौरे पर तशरीफ़ लाये थे। एक अक़ीदत मन्द की ज़ाती महफ़िल में मुहदिदसे कबीर मददज़िल्लाहुल आली ने अपनी तक़रीर के बाद हज़रत की ख़िदमत में माइक पेश करते हुये अर्ज़ किया कि अंग्रेज़ी में कुछ बयान फ़रमा दें। हज़रत ने फ़िलबदीहा अंग्रेज़ी में काफ़ी देर तक बयान फ़रमाया। लोगों पर एक सकता तारी था कि इतनी साफ़ व शशता अंग्रेज़ी ज़बान।

यकीन करे उस शाब ऐसा महसूस हो रहा था कि चाकेई आलमे इस्लाम के काइद को ऐसा ही होना चाहिए, कि जब इधर रुख किया अरबी में खिताब फरमाया फारसी दाँ तबका में बैठे तो फारसी में गुफ्तगु कर ली, अहले हिन्द व पाक के दरमियान मौजूद हों तो उर्दू में बोल पड़े और यूरोप व अमरीका में अकीदए हक्का की तरवीज व इशाअत के लिए निकले तो अंग्रेजी ज़बान में अपना मुददा दुनिया के सामने पेश कर दिया।

### पीरों के पीर

मौलाना मुफ्ती मुहम्मद रहमत अली तैगी नाज़िमे आला मदरसा कादरिया ज़ियाए मुस्तफ़ा कलकत्ता कहते हैं कि यूँ तो कई पीढ़ी आगे से आप के खान्दान में बा कमाल और मुतदीन उलमा पैदा होते रहे, और अभी भी आप का सारा घराना आलिम है, लेकिन सरकार आला हज़रत हुज़ूर मुफ्ती आजम हिन्द अलैहिर्रहमा वरिज़वान के बाद आलमी पैमाने पर अगर किसी को इज़्ज़त व शोहरत मिली है तो वह सिर्फ़ ताजुशरीआ दामत फ़यूज़िया आलिया की ज़ाते सतूर्दा सिफ़ात है।

इस ज़माने में पीराने किराम की कमी नहीं, देखा जाता है कि मुरीदीन से ज़्यादा पीर साहिबान की तादाद है। और ज़ाहिर सी बात है कि जो चीज़ मार्केट में ज़्यादा हो जाती है। उस का दिला और डीमान्ड कम हो जाती है।

ऐसा ही कुछ हाल आज कल के पीरे मगा हज़रात का है। घर घर में पीर हैं, इसलिए पीर की अज़मत व

अहमियत लोगों में आज मफकूद नज़र आ रही है, लेकिन इन्हीं लोगों में कुछ ऐसी हस्तियाँ हैं जो पीरी के आली मक़ाम पर फाइज़ और मुशख़िख़यत के बलन्द व बाला मिआर पर काइम हैं। उन्हें मुकददस हस्तियों में हुज़ूर ताजुशशरीआ किब्ला मददजिल्लाहुल आली की जात सतूदा सिफ़ात है।

अगर हकीक़त में निगाहों से देखा जाये तो बिला शुबह हज़रत इस वक़्त العصر في الملك है। बहुत से पीरों के प्रचारक मार्केट में फैले हुये हैं, जो उनकी झूटी और ग़लत सलत करामतें बयान कर के सीधे साधे लोगों को उन के दाम तजवीर में फंसाते फिरते हैं। लेकिन هज़रत بحمده تعالى و بعنايت نبيه المصطفى ताजुशशरीआ दामत फुयूज़िया अल आलिया की शान ही कुछ निराली है, कि न कहीं आप का कोई ऐजेन्ट और न प्रचार बल्कि रब्बे कदीर की तरफ़ से आप को इतनी मकबूलियत हासिल है कि मेरी दानिस्त में फी ज़माना आप से ज़्यादा मुरीद किसी के भी नहीं हैं।

ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء

प्रोफ़ेसर की टाई उतार दी

मौलाना तौहीद अशरफ़ी साकिन शहज़ादपुर ज़िला अम्बेडकरनगर का बयान है कि हुज़ूर ताजुशशरीआ का सफर हॉलैन्ड का हुआ, जलसा में बहुत से डाक्टर्स और प्रोफ़ेसर टाई लगा कर शरीक थे, आप ने टाई की हकीक़त और टाई के तअल्लुक से ईसाइयों के अक़ीदे पर भरपूर तक़रीर फ़रमाई, और टाई के जितने अक़साम हैं



उन की भी वज़ाहत फ़रमाई। इस तअल्लुक से जलसा के बाद आप से इस्तिफ़ता हो, आप ने दलाइल व बराहीन के साथ तशफ़्फ़ी बख़्श जवाब हायलैन्ड रवाना फ़रमाया, इस सिलसिला में आप की किताब मुसम्मा "टाई का मसअला" वजूद में आई।

हुज़ूर ताजुशरीआ ने यह हरगिज़ नहीं सोचा कि यूरोप के दुनियावी मनसब पर फ़ाइज़ आला तालीम याफ़ता हज़रात जलसा में मौजूद हैं, अगर टाई के तअल्लुक से गुफ़्तगु हुई तो कहीं यह सब नाराज़ न हो जायें, आप ने हुक्मे शरअ बयान फ़रमा कर अपने आलिमाना फ़कीहाना वक़ार को मजरूह होने से बचा लिया।

आज कल पीर व मुरशिद को देखा जाता है कि पीरे तरीक़त की मसनद पर बैठने के बाद अहकामे शरीअत को नज़र अन्दाज़ करना उन का शेवा बन गया है, उन को सिर्फ़ फ़िक्र रहती तो अमदनी की, नमाज़ रोज़ा अज़कार व वज़ाइफ़ और तज़किया नफ़्स व तस्फ़िया कुलूब की कोई फ़िक्र नहीं होती है। औरतों का उठना बैठना, ग़ैर शरई उमूर देखना, और तंबीह न करना, और उसे हिक्मते अमली का नाम देना, ऐसे पीरों की फ़ितरत सानिया बन गई है।

मगर हुज़ूर ताजुशरीआ एक साहिबे इल्म व फ़न के साथ बहरे तरीक़त के ग़व्वास भी हैं, मुशाहिदीन में से किसी पर यह अम्र मख़फ़ी नहीं कि हुज़ूर ताजुशरीआ के सामने कोई ग़ैर शरई अम्र वाक़ेअ हो जाये, और आप ने

खामुशी इख्तियार की हो,बल्कि फौरन हुक्मे शरई बयान फरमाये हैं। आप की शख्सियत जहाँ नूर अला नूर है,वही पाकीजा अमल व किरदार के ताजदार भी हैं,आप का जाहिर व बातिन यकसा है। यही सबब है कि हुक्मे शरई बयान करते किसी की परवाह नहीं करते हैं। आज तक हाजिरीन में से किसी ने आप के पास औरतों को बैठते हुये नहीं देखा,औरतों को हाथ पर हाथ रख कर मुरीद करते हुये नहीं देखा। चेन वाली घड़ी पहन कर किसी आलिम या गैर आलिम को बैठते नहीं देखा। यह हकीकत है कि जो अल्लाह और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से डरता है,उस से खुदा की मखलूक डरती है। आप का तसल्लुब फिददीन किसी से पोशिदा नहीं है,ऐसा मुरशिदे तरीकत किसी को मिल जाये तो वाकई उसकी आखिरत संवर जायेगी।

### जन्नत का सौदा कर लिया

कारी दिलशाद अहमद रजवी बनारसी का बयान है कि तालिबे इल्मी का दौर था,जमशेदपुर में काइदे अहले सुन्नत अल्लामा अरशदुलकादरी अलैहिर्रहमा की कियादत में शहर के कारी दिलशाद अहमद रजवी बनारस का बयान है कि गोलमौरी महल्ला में इमाम अहमद रजा कांफ्रेन्स में हुजूर ताजुशरीआ की आमद हुई। हम लोग मुरशिदे गिरामी की खिदमत पर मामूर किए गये,बैअत व इरशाद का सिलसिला शुरू था। जहान में एक बात खटकती थी कि बगैर वालिदैन् की इजाजत कैसे बैअत हो जायें,कल्बी कैफियत में एक ववाल था जिसे लफ्जों में

बयान नहीं किया जा सकता, काइदे अहले सुन्नत ने मेरी परेशानी महसूस की जैसे पेशानी की लकीरें पढ़ ली हों। इरशाद फरमाया क्या कोई पेशानी है। आँखें भीग गई, अर्ज किया हुजूर बैअत होना चाहता हूँ, क्या वालिदैन की इजाजत के बगैर मुम्किन है। कुरबान जाइये काइदे अहले सुन्नत के अल्फाज पर जो मेरी जिन्दगी का सब से कीमती उसासा हैं, इरशाद फरमाया "नादान जन्नत का सौदा वालिदैन से पूछ कर नहीं किया जाता और मैं भी तो तुम्हारा बाप हूँ" यह कहते हुये मुझे ताजुशरीआ के कदमों में डाल दिया। हुजूर यह बच्चा रशीदी साहब का है, जो अहले सुन्नत के अलम बरदार हैं और नअत के जोद गो शाइर भी हैं, उन का बच्चा आप की खिदमत में है, उसे गौसे आजम तक पहुँचा दीजिए। मुरशिदे रब्बानी ने मेरा हाथ पकड़ा, सिलसिला कादरिया में दाखिल किया दुआओं से नवाजा, इरशाद फरमाया फारिग हो कर मसलके आला हजरत की नश व इशाअत करना, यही कुरआन व सुन्नत का रास्ता है। यह जुमला क्या था, पूरी जिन्दगी का नसबुलऐन सामने रख दिया। मुझे हुजूर ताजुशरीआ की जिन्दगी के उस हिस्से को ज़ब्त तहरीर करना है जिस का तअल्लुक सिर्फ कुरआन व सुन्नत से है।

मैं एक बार बरेली शरीफ हाज़िर हुआ, शहज़ादाए ताजुशरीआ अल्लामा मुहम्मद अस्जद रज़ा खाँ की विसातत से बाद नमाज़े मग़िब मुलाकात के लिए हजरत के हुजरे में दाखिल हुआ, उस वक़्त मुफ़ितयाने किराम



मौजूद थे, चन्द लम्हे में हुजूर ताजुशरीआ अन्दरून खाना से अपने हुजरा शरीफ में तशरीफ लाये, बाद सलाम व कदम बोसी के में भी सफ के किनारे बैठ गया। एक मुपती साहिब ने ऐबारत पढ़ी और हजरत ने हदीस मुबारका के ख़त्म होते ही पुर सोज़ लहजे में अल्लाहु अकबर फरमाया।

और चेहराए मुबारक मिस्ल आफ़ताब हो गया। रिक्कत अमीज़ लेहजे में फरमाया, क्या शान है सरकार की शिफा शरीफ की वह हदीस याद आ गई है जिसे हजरत सय्यदिना काज़ी ऐयाज़ मालकी अंदलसी रहमतुल्लाह अलैहि ने सलफ़े सालेहीन और अमल बालसना के बाब में बयान फरमाया है।

हदीस : हजरत उमर बिन मैमून रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैं हजरत सय्यदिना इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में था, एक दिन उन्होंने आका सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की हदीस बयान की, **قال رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم** और कहते हुये उन पर अजीब कैफ़ियत तारी हो गई और चेहराए मुबारक अर्क अलूद हो गया।

(शिफा शरीफ बाब अब्बल तीसरी फ़सल स 92)

और एक रिवायत के मुताबिक़ इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के रिवायत करते वक्त गले की रंगें फूल जातीं, आँखें अशकबार हो जातीं। और चेहरा का रंग मुतगैयर हो जाता।

हुजूर ताजुशरीआ दर्से हदीस देते वक्त सहाबा

किराम के मज़हर नज़र आ रहे थे। जैसे सरकार का सरापा सामने हो और जलवाए ज़ेबा के दीदार की दौलत हासिल हो रही है, और दिल ऐअतिराफ़े हकीकत कर रहा है। यह वह आसार हैं जिस इश्क़े रिसालत मआब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की जलवा गरी ताजुशशरीआ की ज़ात में जलवा फगन नज़र आती है, एक आलिमे रब्बानी की ज़ात में जितनी खूबी होनी चाहिए हुज़ूर ताजुशशरीआ की सुबह व शाम और उन की महफ़िल के शब व रोज़ में देखने के बाद मन व अंन वैसी ही नज़र आती है, जैसा कि अल्लाह और उसका रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने कौल व फ़ैज़ल में हमआहंगी बरकरार रखने की तालीम दी है। कौल व फ़ैज़ल की हम आहंगी इल्म व तक्वा की एक जिहती, शरीअत व तरीक़त का हसीन संगम, जलवत व ख़लवत में यकसानियत देख कर दिल को ऐअतिराफ़ करना पड़ता है कि हुज़ूर ताजुशशरीआ हर जिहत हर ज़ाविये से आलिमे रब्बानी ही नज़र आते हैं, ताजुशशरीआ के इल्मी फ़ैज़ान से सिर्फ़ बर्रे सगीर ही नहीं बल्कि पूरी दुनियाए सुन्नियत इस वक़्त मालामाल नज़र आ रही है। इस दौरे पुरफुतन में दीन की नश्र व इशाअत करने वालों के लिए एक ऐसे अम्र का सामना है, जिसे बयान करना ज़रूरी समझता हूँ ताकि ताजुशशरीआ की शख़्सियत इस्तिक़ामत फ़िददीन की हैसियत भी उजागर हो जाये। यूरोप व एशिया के दीगर ममालिक में भी तस्वीर कशी एक आम चलन बन कर रह गई है, जिसे चाह कर भी बेशतर उलमा इस से

बच नहीं पाते। इजलास दीनिया में पूरे प्रोग्राम की मन्ज़रकशी होती है। उलमा के मना करने के बावजूद लोग बाज़ नहीं आते। मगर ताजुशरीआ का मौकूफ़ इस मसअले पर जो नाजाइज़ होने का है। यह सिर्फ़ आप के फ़तवा के हिसार तक महदूद नहीं है। बल्कि तस्वीरकशी अगर वह क़लम से नाजाइज़ गरदानते हैं। तो अपने अमल से भी साबित कर दिखाते हैं। यही वजह है कि ताजुशरीआ जिस महफ़िल में मौजूद होते हैं, चाहे वह एशिया की कोई कांफ़्रेंस हो या यूरोप का कोई इजलास, उनकी हैबत लोगों पर कुछ इस तरह तारी रहती है कि बड़े बड़े जरीह भी ग़ैर शरई हरकत की हिम्मत नहीं कर पाते। यह भी ताजुशरीआ की इस्तिक़ामत फ़िद्दीन की नज़ीर है कि अल्लाह तआला बन्दा का उन पर ऐसा रोअब तारी कर देता है। कि आशिके मुस्तफ़ा ता मरून बिलमअरुफ़ के साथ की *وينهون عن المنكر* तफ़सीर व तन्वीर नज़र आता है। इस मक़ाम पर दिल यकीन कर लेता है कि ऐसा शख्स जो दीन पर सख़्ती के साथ कारबन्दर रहने वाला है वह खुदा का सच्चा बन्दा और आलिमे रब्बानी है।

### अदाए फ़कीराना पर क़ुरबान जाओ

मौलाना नौ ख़ैज़ अन्वर उस्ताद ज़ामिआ रज़विया दैवगाँव ज़िला आजमगढ़ बयान करते हैं कि अगर मेरी कुव्वत हाफ़िज़ा मेरी रिफ़ाक़त कर रही है तो 1996 ई का वाकिआ है कि मुल्क की बेनज़ीर दीनी दर्सगाह अलजामिअतुलइस्लामिया रौनाही फ़ैज़ाबाद(यूपी) में



सालाना "जशने दस्तारे फज़ीलत" का पुरबहार मौका था, फारिगीन अपनी दस्तार की तैयारियों में मसरूफ थे, और तलबा जामिआ अपनी किस्मत पर नाजाँ थे कि आज पुर मुसरत मौका पर जानशीने हुज़ूर मुफ़्तीए आजम हिन्द ताजुशशरीआ हज़रत अल्लामा अज़हरी मियाँ साहिब किब्ला जशन की सर परस्ती फ़रमायेंगे, और अपने दस्त मुबारक से ताजुशशरीआ फज़ीलत और सनदे फ़रागत से नवाज़ेंगे।

हज़रत ताजुशशरीआ की आमद पर जामिआ के तलबा व असातिज़ा और कुर्ब व जवार के अकीदतमन्द अहले सुन्नत ने निहायत शानदार और पुर जोश इस्तिकबाल किया। अदब व ऐहतिराम और शान व शौकत के साथ आप को कियाम गाह ले जाया गया।

बादे नमाज़े इशा नोअमाने मिल्लत हज़रत अल्लामा अल हाज मुहम्मद नोअमान खाँ साहिब कादरी आजमी रहमतुल्लाहि तआला (मुतवफ़्फ़ी 29 फरवरी सन 2008 ई) साबिक प्रिन्सिपल अलजामिअतुलइस्लामिया रौनाही ज़िला फ़ैज़ाबाद और हज़रत मौलाना कारी जलालुद्दीन साहिब कादरी नाज़िमे आला अलजामिअतुलइस्लामिया हज़रत ताजुशशरीआ की ज़्यारत व मुलाकात के लिए हाज़िरे ख़िदमत हुये, सलाम व ख़ैरियत और मुसाफ़ा के बाद दोनों हज़रात ज़मीन पर बैठ गये, राकिमुल हरूफ़ भी पीछे एक तरफ़ ज़मीन पर बैठ गया। हज़रत ताजुशशरीआ तख़्त पर जलवा बार थे, जब यह हज़रात ज़मीन पर बैठे हज़रत भी तख़्त से उतर कर नीचे तशरीफ़ फ़रमा

हुये,और फरमाया आप हज़रात ज़मीन पर बैठेंगे तो मैं भी ज़मीन पर बैठूँगा,उन हज़रात ने इसरार किया कि हज़रात तख़्त पर ही तशरीफ़ रखें मगर हज़रात ने इनकार किया और ज़मीन पर बैठ कर महवे गुफ़्तगु हुये,और काफी देर तक गुफ़्त व शुनीद का सिलसिला चलता रहा।

मैं हज़रात ताजुशरीआ की इस अदाए फ़कीराना से हद दर्जा मुतास्सिर हुआ कि उलमा हक़ और सुलहा किराम की यही शान होती है,कि ग़ैरों को हकीर व कमतर नहीं समझते,सच फ़रमाया ताजदारे काइनात सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम ने कि जो अल्लाह के बन्दों की ताज़ीम व तौकीर करता है,मर्ज़ीए इलाही की ख़ातिर तवाज़ेअ करता है,अल्लाह तअ़ाला उस को रिफ़अत व अज़मत और क़बूलियत अता फ़रमाता है,यही वजह है कि आज हिन्दुस्तान व बैरूने हिन्द ताजुशरीआ की शख़्सियत मक़बूल ख़ास व आम है।

क्यों न पहुँचे अहले सुन्नत मन्ज़िले मक़सूद को  
जब हैं मीरकारवाँ अख़्तर रज़ा ख़ाँ कादरी

### हुज़मे ग़ैर मुसलमान

हाफ़िज़ मुहम्मद शमसुलहक़ रज़वी डाइरेक्टर रज़ा होज़री लुधियाना(पंजाब)अपने एक मज़मून में लिखते हैं कि मैं हिन्दुस्तान के जिस ज़िला से तअ़ल्लुक रखता हूँ वह हिन्दुस्तान का मरदम ख़ौज,इल्मी व तारीख़ी शहर सीतामढ़ी है,जहाँ एक से एक इल्म व फ़न के शहसवार पैदा हुये। इसी ज़िला का एक मअरूफ़ क़स्बा पोखरपुर शरीफ़ है। जहाँ अपने वक़्त के आरिफ़बिल्लाह सय्यदिना

अब्दुर्रहमान सरकार मुहीयुद्दीन पोखरपुरवी हैं। आप आला हजरत के अहिबुलखुलफा में से हैं। जिन्होंने इस पूरे अलाका में इस्लाम व सुन्नियत की बेलौस खिदमत अंजाम दीं। इस पूरे इलाका में आज जो दीन व सुन्नियत की बहारें हैं वह उन्हीं की मरहून मन्नत में से हैं, पुरे इलाके से बदअकीदगी के तूफान को आप ने मजबूती के साथ रोक दिया। और इस्लाम व सुन्नियत की इशाअत के लिए आहनी सुतून बन कर डटे रहे। आप ने जहाँ मदारिस व मसाजिद के कियाम के जरीआ दीन की खिदमत की, वहीं पूरे इलाके में अपने वअज़ व हिदायत के जरीआ खल्के खुदा की खूब खूब रहनुमाई की। आप का काइम कर्दा दीनी व इल्मी इदारा मदर्स नूरुलहुदा पोखरपुरा आज भी तालिबाने उलूमे नबविया की इल्मी प्यास बुझा रहा है। आप ने हदीस, तफ़सीर, इस्लामियत में कसीर तसानीफ़ यादगार छोड़ी हैं। इसलाह अवाम के लिए आप ने एक दीनी व इल्मी मुजल्ला भी जारी किया था, आप के बाद बन्द हो गया। आप के एक इल्मी रिसाला पर आला हजरत इमाम अहमद रज़ा कादरी अलैहिर्रहमा की ज़बरदस्त "तकरीजे जलील" भी है, जिस से आप के और आला हजरत अलैहिर्रहमा के दरमियान इल्मी व फ़िक्री रवाबित का बाख़ूबी अन्दाज़ लगाया जा सकता है। आला हजरत से गहरे तअल्लुकात ही का नतीजा है कि खान्वादा रज़विया के मशाइखे किराम में हुज़ूर हुज्जतुलइस्लाम, मुफ़ती अज़म हिन्द, रेहाने मिल्लत व गैराहुम सीतामढ़ी का तब्लीगी दौरा फ़रमाते रहे, और



सीतामढ़ी के बाशिन्दगाने सुन्नी मुसलमानों की इल्मी व अमली और दीनी रहनुमाई फरमाते रहे।

मुरशिदे गिरामी हुज़ूर ताजुशरीआ दामत फुयूजहु भी मुतअदिद बार ज़िला सीतामढ़ी में अपने तब्लीगी दौरे और प्रोग्राम के तिहत तशरीफ लाये। पूरे इलाका में आप के हर हर प्रोग्राम में आप की आमद पर मुसरत और खल्के खुदा का हुजूम देदनी होता है। उस ज़िला के सैकड़ों मवाज़आत तो ऐसे हैं जहाँ की पूरी पूरी आबादी आप की ज़्यारत के लिए बेताबाना इशितयाक और दस्त बोसी व कदम बोसी के लिए उमन्ड आती और शर्फ बैअत से मुशरफ होती। यहाँ तक कि अकसर एलाका के गैर मुस्लिम भी आप के नूरानी चेहरे की ज़्यारत के बाद बहुत अच्छे अच्छे अल्फाज़ से आप को याद करते नज़र आये।

खल्के खुदा का जिस कदर बे साख़्ता हुजूम मैंने इलाकों में हज़रत ताजुशरीआ के लिए मुशाहिदा किया, वह किसी और के तअल्लुक से आज तक देखने को न मिला। इस कदर मकबूलियत फ़िलखल्क यकीनन आप की बारगाहे इलाही में मकबूलियत पे शाहिद अदल है।

1995 ई का वह वाकिआ मुझे आज तक याद है जब मैं मुरादाबाद से एक सफ़र के सिलसिले में हाफ़िज़ मुहम्मद मुस्लिम अशरफ़ी के साथ देहली के लिए आया। हुस्ने इत्तेफ़ाक़ देहली इस्टेशन पे हुज़ूर ताजुशरीआ की ज़्यारत हुई, हम दोनों बे साख़्ता हुज़ूर की कदम बोसी व दस्त बोसी के लिए बारगाह में हाज़िर हुये, और सलाम व

दस्त बोसी व कदम बोसी से न्याजमन्दी हासिल की। इत्तेफाक से उस वक्त में चेन वाली घड़ी पहने हुआ था। आप ने फरमाया : आप यह घड़ी पहने हुये हैं। इसे पहन कर नमाज भी पढ़ते होंगे। फिर आप ने बड़ी शफ़क़त से पूरे मसअला को तफ़सील से बयान फरमाया, और चेनवाली घड़ी न पहनने का हुक्म दिया। फिर क्या था मैंने उसी वक्त उस घड़ी को हाथ से निकाल दिया। जब से आज तक मैंने चेनवाली घड़ी नहीं पहनी। इस सफ़र में मैंने पहली बार डेढ़ घन्टे हज़रत के रुबरुरहा, और ख़िदमत की सआदत भी मयस्सर आई। इस डेढ़ घन्टे में आप के पन्द्र व नसाइह से मैंने ऐसे फ़यूज़ व बरकात हासिल किए जिसे मेरी कोताह क़लम हीताए तहरीर में लाने से आजिज़ है। पहली बार किसी निजी मज्लिस में आप की शीरनी गुफ़्तार और रस घोलती हुई अन्दाज़ नसीहत के लुफ़ से मैं महजूज़ हुआ था। जी तो यह चाह रहा था कि यह घड़ी दराज़ होती रहे और मैं आप के रुख़े रौशन की ज़्यारत से अपने दिल के बन्द दरीचे खोलता रहू लेकिन फिर आप को किसी सफ़र के लिए फ़ौरन रवाना होना था। आप ने मुझ फ़कीर को ढेर सारी दुआओं से नवाज़ा और रुख़सत हो गये। आज उन दुआओं का समरा "रज़ाहोज़री लुधियाना और "अज़हरी मार्केट" और "अज़हरी कॉम्पलेक्स सरसन्दसीतामढ़ी" की शक़ल में आम लोगों के मुशाहिदे में है।

**मामूली ख़राश**

मशहूर नकीब जनाब हलीम हाज़िक़ रज़वी होड़ा ने

तहरीर किया कि फील खाना में सरकारे मुजाहिदे मिल्लत अलैहिरहमा के एक मुरीद जनाब अनवार अहमद हवीकी हैं। उन्होंने एक बार मुझ से कहा कि हुजूर ताजुशरीआ से बाज़ शरपसन्द लोगों की ग़लत बयानियों के सबब मेरे दिल में भी एक बेचैनी थी, और मेरी अकीदत की शमअ टमटमाती जा रही थी।

एक शब मेरा नसीबा बेदार हुआ, और ख़्वाब में देखा कि सरकार मुजाहिदे मिल्लत और हुजूर अज़हरी मियाँ मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहे हैं। मैं अभी सेहने मस्जिद में सोच ही रहा था कि सरकार मुजाहिदे मिल्लत ने मुझे डांट कर फ़रमाया "इन की ख़िदमत करो, यह मेरे मख़दूम ज़ादे हैं" उस के बाद हुजूर अज़हरी मियाँ की तरफ़ मेरा दिल खिंचता चला गया।

फीलख़ाना होड़ा के सिकन्दलैन मैदान में देवबन्दियों का एक जलसा कोई चार पाँच साल क़ब्ल हुआ था। इस जलसे में एक देवबन्दी मुक़र्रिर ने आला हज़रत और मुजाहिदे मिल्लत की शान में गुस्ताख़ाना तक़रीर की। सुबह होते ही मैंने उस की तक़रीर की कैसेट को बड़ी मुश्किल से हासिल किया, और इलाक़ाई उलमा से राब़्ता किया कि यह पहला इत्तिफ़ाक़ है अगर उस की जमकर तरदीद न की गई तो आने वाला वक़्त हमें मुआफ़ नहीं करेगा। बहुत से अहबाब ने कहा कि यह फ़लौ मौलवी की तक़रीर का रददे अमल है, और चन्द बिल्कुल ख़ामोश। हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से तीसरे या चौथे दिन हुजूर ताजुशरीआ की आमद एक मदरसे के जशने दस्ता



बन्दी में हई। हजरत ख़ात्मे बुख़ारी शरीफ़ के वक़्त तशरीफ़ लाये। देवबन्दी मुकर्रिर के काबिल ऐअतिराज जुमलों और बुहतान तराज़ियों को नोट कर के उनकी ख़िदमत में पहुँचा कि तमाम सूरते हाल से मुत्तलअ करूँ। मगर मैं अपनी कोशिशों में ना काम हो गया, कि हजरत से मुलाकात न हो पाई। ख़ात्म बुख़ारी शरीफ़ में हुज़ूर अज़हरी मियाँ फ़ारेगीन को आख़िरी हदीस शरीफ़ का दर्स दे रहे थे, और मैं बैठा सोच रहा था कि या अल्लाह! उन ऐअतिराजात व बुहतान का जवाब कौन देगा। मगर मेरी हैरत की इन्तिहा न रही कि हुज़ूर अज़हरी मियाँ देवबन्दी ख़यालत व नज़रियात का रद्दे बलीग़ उसी आख़िरी हदीस शरीफ़ की तफ़सीर व ताबीर में फ़रमाने लगे, और मेरे सारे सवालात खुद बख़ुद रौशन जवाबात पाते चले गये।

इसे बुजुर्गों का तसरूफ़ नहीं तो क्या कहेंगे।

एक मौका पर मुहम्मद पुर बुजुर्ग ज़िला मुज़फ़्फ़रपुर में सूफी जमील रज़वी कादरी ने एक बहुत आली शान जलसा किया जिस में ख़ुसूसियत के साथ हुज़ूर ताजुशरीआ मदऊ किए गये थे। यह शायद इस ऐलाका का नुमाइन्दा जलसा था कि आस पास के सैकड़ों उलमा महज़ हुज़ूर ताजुशरीआ से शर्फ़ बैअत के लिए हाज़िर हुये थे। मैं अपनी नकाबत के ज़रीआ सलाम व दुआ तक बख़ूदी जलसा को पहुँचा चुका था। मगर बैअत व इरादत के मुश्ताक़ दीवाने और परवाने काबू से बाहर हो रहे थे, आख़िर एक बड़ा सैलाब स्टेज तक पहुँच गया। हुज़ूर

ताजुशरीआ कुर्सी पर तशरीफ़ फ़रमा थे,और मैं माइक पर बार-बार इल्तिजा पर इल्तिजा करता कि स्टेज कमज़ोर है। लिल्लाह करम कीजिए।

इसी इसना में चरमराने की आवाज़ उभरी,और पूरा स्टेज जो काफी ऊँचाई पर बनाया गया था ज़मीन बोंस हो गया। सारे लोग चीख़ पड़े। हज़रत की कुर्सी मैं और सूफ़ी साहब ने पूरी कुव्वत से पकड़ली थी। मगर एक बांस की कैंची मेरे पेट में यूँ आ लगी कि अगर जुंबिश हो तो पेट में घुस जाये,मगर अराकीन व सामेईन ने कमाल होशमन्दी से उस बांस की कैंची को आरे से काट दिया,अगर मैं शेरवानी न पहना होता तो बेदरेग़ वह बांस की फिराटी पेट फाड़ देती।

सुबह के वक़्त नाश्ते पर हज़रत ने मुझ से पूछा “आप को चोट तो न आई होगी”मैंने अर्ज़ किया “हुज़ूर आप की मौजूदगी में बड़ा सानिहा मामूली ख़राश में बदल गया”हज़रत ने बे पनाह दुआयें कीं,मेरा विजदान कहता है कि यह बरक़त हुज़ूर ताजुशरीआ की थी वरना कुछ भी हो सकता था। यह दो करामत बयान कर दी हैं।

**औलादे ग़ौसे अज़म की दुआ का असर**

पीरे तरीक़त हज़रत सय्यदिना शाह फ़ख़रुद्दीन अशरफ़ अलजीलानी सज्जादा नशीन आस्ताना मख़दूम समनानी कछौछा शरीफ़ बयान करते हैं कि हज़रत के आलिमी असफ़ार में से सिर्फ़ एक वाकिआ पेश कर रहा हूँ जो शहज़ादाए ग़ौसुलवरा की बारगाह में हाज़िरी से तअल्लुक़ रखता है जिसे डाक्टर अब्दुलनईम अज़ीज़ी

साहब ने कलम बन्द किया है। जिन्होंने ताजुशरीआ हजरत अल्लामा मुफ्ती अख्तर रज़ा साहिब किब्ला अजहरी मियाँ मददजिल्लाहुल आली के खादिमे खास और रफीके सफ़र की हैसियत से गंग व जमन के दो आबे से लेकर कश्मीर की गुलपोश वादियों कन्याकुमारी से लेकर महाराष्ट्र और राजपूताना व बंगाल, यहाँ तक कि हिमाला के दामन में आबाद शहरों और सूबाजात आसाम, मयालय और अरुणाचल तक फैले हुये हैं वसीअ व अरीज हिन्दुस्तान के जाने कितने शहरों, कस्बों और गाँव के सफ़र किए हैं। अलावा इन के नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका और इराक़ वगैरा के गैर मुल्की असफ़ार का भी शर्फ़ हासिल किया है। फ़रमाते हैं कि 1982 ई में पाकिस्तान के दूसरे सफ़र के दौरान एक रोज़ शहजादए गौसुलवरा सय्यदिना पीरे तरीक़त सय्यद शाह ताहिर अलाउद्दीन गीलानी की ज़यारत के लिए हजरत ताजुशरीआ, राकिम और हजरत के 20, 25 मुरीदीन व मोअतक़दीन उन के दौलते कदा पर हाज़िर हुये। पीर साहब की वसीअ व अरीज कोठी के गेट पर तैनात दो दरबानों ने गेट खोला। कारों का काफ़ला लान में जा कर रुका लॉन से लेकर बरआमदा तक कई मुलाज़िमीन वा अदब खड़े हुये थे। सिक्रेट्री साहब ने हम लोगों की आमद की इत्तेलाअ भेजवाई। चन्द मिनट में पीर साहिब किब्ला बाहर तशरीफ़ लाये, *وسهلا مرحبا* फ़रमा कर इस्तिफ़ाल किया। हम सभी लोगों ने हजरत पीर साहब की दस्तबोसी व क़दमबोसी की। पीर साहब ने एक सजे



सजाये बड़े कमरे में सब को बिठाया। एक बहुत बड़ी मेज पर फलों और मेवाजात से भरी हुई प्लेटें सजी हुई थीं। नाशता का यह शाही इन्तेज़ाम और सामान देख कर शाहनशाहे औलिया और गौसे आज़म के करम व सखावत के पढ़े हुये वाकिआत की यादें ताज़ा हो गईं। नाश्ता के बाद गुप्तगु शुरू हुई। हज़रत पीर साहब किब्ला ने अल्लामा अख्तर रज़ा ख़ाँ साहिब किब्ला की तारीफ़ में फिल बदीह अरबी में एक कतआ पढ़ा, जिस का मफहूम यह था। "अख्तर रज़ा सितारा की तरह ताबंदी बिखरेगा" हज़रत ताजुशरीआ ने हुज़ूर पीर साहब किब्ला से दुआ के लिए कहा। उस पर पीर साहब किब्ला ने फरमाया "अख्तर रज़ा हम तुम्हारे लिए क्या दुआ करेंगे। तुम्हारे दादा अल्लामा अहमद रज़ा ख़ाँ साहब को मेरे दादा गौसे आज़म ने इतना दिया कि तुम उसी खज़ाने से निकालते रहो, बांटते रहो, कभी ख़त्म न होगा, और तुम्हारे मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ साहब मुफ़्ती आज़म हिन्द को भी बहुत दिया है, मेरे गौसे आज़म ने" उस के बाद दुआ के लिए हाथ उठाये, दुआ के बाद फिर मज़ीद कलमाते ख़ैर से नवाज़ा।

यह पीर ताहिर अलाउद्दीन साहिब किबला अलैहिर्रहमा खास गौसे पाक की औलाद से थे, बड़े ज़ाहिद आलिम फ़ाज़िल शरअ और दीनदार, पूरी दाढ़ी सुर्ख़ व सफ़ेद, नूरानी चेहरा (सुब्हानल्लाह क्या ही निराली शान थी हज़रत की) जब हम लोग हज़रत पीर साहब किब्ला के यहाँ से दस्त बोसी व क़दम बोसी कर के वापस होने

लगे तो उन्होंने फिर सब के लिए दुआ की, और ताजुशरीआ को छोड़ने के लिए बरआमदे से गुजर कर लॉन तक आये। जब हम लोग गेट तक आ गये तो हजरत पीर साहब के मुलाजिमीन ने एक दूसरे से खुसर पुसर शुरू कर दी कि यह कौन से बुजुर्ग थे, जिन्हें छोड़ने के लिए पीर साहब लॉन तक आये, और फिर उनकी आमद पर उन का ऐसा शानदार इस्तिक़बाल भी किया अरे भाई यहाँ तो सदरे ममलुकत और बड़े बड़े वज़रा आते रहते हैं उन्हें पीर साहब से मिलने के लिए काफी वक्त तक इन्तिज़ार करना पड़ता है भटों (जुलफिकार अली भट्टों) पीर साहब से मिलने के लिए आते थे, तो आधा आधा घन्टा बाहर खड़े रहते थे तब जा कर बिरयानी मिलती थी, और वापसी पर पीर साहब अपनी कुरसी पर बैठे ही बैठे उन्हें रुखसत कर दिया करते थे। मगर इन्हें छोड़ने के लिए लॉन तक आये। यह सुन कर साथ में गये लोगों में से कई पाकिस्तानियों ने मुलाजिमीन को बताया कि जानते हो यह बुजुर्ग कौन हैं। यह बरेली शरीफ़ के आला हजरत के परपोते हैं। मुलाजिमीन बोले तभी तो पीर साहिब ने इन की ऐसी इज़्ज़त की।

فالحمد لله على ذلك

### गाड़ी की करामत

मौलाना गुलाम मुईनुद्दीन इमाम जामेअ मस्जिद गवारी पुर ज़िला चौबीस परगना (बंगाल) का बयान है कि हजरत का फ़ैज़ान हिन्दुस्तान के दीगर सौबों में भी देखा गया। कर्णाटक की सरज़मीन पर हजरत सरासे हासिन

की तरफ बजरीआ कार तशरीफ ले जा रहे थे, कि अचानक कार उलट गई, सब लोग इधर उधर हो गये मगर जब हजरत को देखा तो अलहम्दुलिल्लाह हजरत ताजुशरीआ सजदे की हालत में पड़े थे। और कुछ भी न हुआ। हुजूर मुफ्ती आजम के मुरीद व खलीफा हजरत मुफ्ती अब्दुलहलीम साहब किब्ला जिन्होंने तकरीबन चालीस साल से जाइद इंगल की सर जमीन पर इमामत का फरीजा अंजाम दिया हजरत उन से बहुत मोहब्बत फरमाते थे, एक जलसा के सिलसिले में हजरत तशरीफ ले गये तकरीर के मूड में नहीं थे, मगर एक नअत ख्वाह ने हुजूर सय्यदी आला हजरत की मशहूर नअते पाक **لَم يات نظيرك في نظر** में हिन्द अल्फाज में मोरा तन मन धन तोरा सोंप देया को दया पढ़ दिया। हजरत स्टेज पर तशरीफ ले गये, फिर एक नअत ख्वाह ने आला हजरत की नअत पाक "वल्लाह जो मिल जाये मेरे गुल का पसीना" को पढ़ दिया, हजरत ने माइक ले कर अल्लाह अल्लाह पूरे दो घन्टे सिर्फ इन्हीं दो अशआर की तशरीह पर इल्मी तकरीर फरमाई।

हाजी नगर वालों का कहना है कि हजरत, जाहिद साहिब कलकत्ता के यहाँ से हाजी नगर तशरीफ ला रहे थे कि अचानक बारिकपुर मोड़ पर कार ख़ाराब हो गई, इस वक़्त रात के बाराह बज रहे थे। झाइवर ने कहा गाड़ी एक इंच आगे नहीं जायेगी। सभी हैरान व परेशान थे। दूसरी गाड़ी भी तलाशी गई वह भी नहीं मिली, तब हजरत ने हुक्म दिया "झाइवर गाड़ी चलाओ" वह पस व



पेश में था मगर चूँकि हज़रत का हुक्म था, अलबत्ता यह भी कहा कि गाड़ी कहीं रोकना नहीं आहिस्ता कर लेना, फिर वह गाड़ी ले कर चला, हाजी नगरवाले सड़क पर इस्तिक़बाल के लिए खड़े थे, उन्हें इशारे से बता दिया गया गाड़ी रुकेगी नहीं आहिस्ता हो कर अपनी मन्ज़िल की तरफ़ रवाँ हो गई, ड्राइवर ने मदरसा के पास गाड़ी रुकी, हज़रत तशरीफ़ ले गये। ड्राइवर मुआफ़ी का तलब गार हुआ, और उस ने मजमा में माइक पर बर जस्ता कहा "बारिकपुर से यह गाड़ी यहाँ किस तरह आई, यह मुझे मालूम नहीं। दो दिन तक एक अंच आगे बढ़े बग़ैर रुकी रही।"

रंगे रुख़े आफ़ताब का क्या कहना

मशहूर आलिमे दीन और हुज़ूर मुफ़्तीए आजम के ख़लीफ़ा अल्लामा शबीहुलकादरी बानी दारुलउलूम गौसुलवरा सीवान(बिहार) बयान करते हैं कि ग़ालिबन 1951 ई या 1952 ई की बात है कि मुहरे चरख़े विलायत हुज़ूर ताजुशरीआ अपने आबाई मसकन महल्ला ख़्वाजा कुतुब के महूर से गुज़रते हुये दारुलउलूम मनज़रे इस्लाम में उर्दू की पहली किताब दस्ते मुबारक में लिए हुये जलवा बार होते थे। उन के साथ उन के एक बड़े भाई "तनवीर रज़ा" होते। दोनों की उमर में एक दो साल का फ़र्क़ था, गर्ज दोनों आफ़ताब व माहताब की तरह होते उस की मिस्दाक़ हज़रत सअदी का यह शेअर है।

दो पाकीज़ा पैकर जो हूर व परी

चू खुरशीद व माह अज़सा दिगर परी

और निहायत ही सन्जीदगी से किताब ले कर  
दफ्तर में मुन्शी जी के पास बैठ जाते, बाद में सुना गया  
कि उन के बरादरम बुजुर्ग तनवीर रज़ा साहिब मफक़दुल  
ख़ैबर हो गये। इस ज़माने में यह फ़कीर भी मीज़ानुस्सफ़  
वगैरा दारुलउलूम मनज़रे इस्लाम ही की इब्तिदाई दर्स  
गाह में पढ़ता था। हज़रत के चेहरे पर नज़र पड़जाती तो  
ऐसा महसूस होता कि चेहरा आलम ताब से नूरे विलायत  
छन छन कर सारी फ़ज़ा को नूरबार कर रहा है।

बालाए सर्श ज़होश्मन्दी

मी ताफ़त सितारए बुलन्दी

गोया ताजुशरीआ की ज़ात सद्द रश्क कमर और  
रंगे रुख़े आफ़ताब है जहाँ से शऊर आगई का चश्मा  
फूटता है, जिस की तरजुमानी हाफ़िज़ शीराज़ी का यह  
शेअर कर रहा है।

ऐ नोबहार मारख़े फ़रख़न्दा तू

मशरूह काँ नामा व ख़ूबी जमाल तू

मेरी ज़िन्दगी का ना काबिल फ़रामोश दिन

मौलाना मुहम्मद मुबशिशरुलइस्लाम नूरी दारुलउलूम  
फ़ैजुलउलूम जमशेदपुर (झाड़ खन्ड) कहते हैं कि :

इधर से कौन गुज़रा था कि अब तक

दायारे कहकशा में रौशनी है

बिला शुबह हज़रत की ज़ात अंधेरी रात के  
मुसाफ़िरोँ के लिए मशअले हिदायत और मीनारा-ए-नूर  
की हैसियत रखती है। उन का फ़ज़ल व कमाल दिलकश  
और निखरी हुई शख़्सियत ही कुछ ऐसी है कि देखने

वाला फौरन मुतास्सिर हो जाता है। और आप का गरवीदा हो जाता है, मेरी जिन्दगी का वह तांबनाक और नाकाबिले फ़रामोश दिन था जब मुरशिदे बरहक का पहला दीदार हुआ था। और दीदा व दिल को जिला बख़्श दिया था। दिल की तारीकी हमेशा के लिए छुट गई। रासिखुलएअतिकाद की दौलते लाज़वाल मिल गई। बदअकीदगी का साया मिट गया। जुलाई 1985 ई मेरी जिन्दगी का टर्निंग पवाइंट साबित हुआ, जब मदीनतुलउलमा घोसी में उर्स अमजदी के पुरबहार मौका पर मेरी निगाहों ने हज़रत का नूरानी चेहरा देखा था। यह उस वक्त की बात है जब मैं तिफ़ले मकतब था। अक्ल व शऊर ज़्यादा नहीं था। मैं पहले देवबन्दी मकतब फ़िक्क के मदरसे में ज़ेरे तालीम था, और यूपी के देवबन्दी मदरसा में जाने के लिए पर तौल रहा था। मगर वालिद मरहूम सहीहुलअकीदा थे। उन की क़तई ख़्वाहिश नहीं थी कि मैं देवबन्दी मदरसा जाऊँ। इसलिए उन्होंने मुझे एक रिश्तेदार हज़रत मौलाना मुहम्मद शहीदुर्रहमान रज़वी मोहतमिम मदरसा कादरियानूरिया दुमका और मौलाना कारी मुहम्मद मन्ज़ूर अहमद मिस्बाही सदरुलमुदरिस्सीन मख़दूमिया अनवारुलउलूम असहना ज़िला देवघर जो उस वक्त फ़ैज़ुलउलूम मुहम्मदआबाद गोहना में ज़ेरे तालीम थे, और देवबन्दियों के अकाइद बातिला की निशान्दही की थी, समझा बुझा कर ले गये दिल में सोचता था कि किसी तरह एक साल गुज़ारूँगा उसके बाद देवबन्दी मदरसा में दाख़ला ले लूँगा।



इसी दौरान उसी अमजदी की तकरीब साईद आ गई थी, और उन दोनों की मुईत में घोसी चला गया। मैंने देखा कि लोगों का बड़ा हुजूम है। तकवीर व रिशालत और हज़रत ताजुशरीआ के फलक शगाफ़ नज़रों से पूरी फ़जा मामूर हो गई। और एक बुजुर्ग, नूरानी हरती, इशाक और दीवानों के दरमियान ख़रामाँ रवाँ दवाँ थी। उनकी एक झलक पाने के लिए क्या उलमा, क्या तलबा और क्या आम्मतुन्नास सभी एक दूसरे पर टूट रहे थे। सच है :

जो दिल को फ़तह कर ले वही फ़ातेह ज़माना

अस्र का वक़्त हो चुका था। महल्ला करीमुद्दीन पूर की एक मस्जिद में हज़रत ने अस्र की नमाज़ पढ़ाई और बाद नमाज़ वहीं जलवा फ़रमा रहे। मैंने बिल्कुल करीब से दीदार का शर्फ़ हासिल किया। आप ने उसी जगह लोगों को मुरीद करना शुरू कर दिया। मेरे करम फ़रमा मुझे सामने बैठाया, और कहा तुम भी मुरीद हो जाओ। उस वक़्त मैं न मुरीदी से वाकिफ़ था और न ही पीरी से। और न ही आला हज़रत व मुफ़्ती आज़म हिन्द अलैहुमा रहमतुर्रहमान के नाम से मेरे कान आशना हुये थे। बराहे रास्त हज़रत के नूरानी हाथ परं हाथ रखा, और बैअत की सआदत से बहरा वर हो गया। हलका इरादत में आना था कि ज़िन्दगी की काया ही पलट गई। ज़हन व दिमाग़ के दरिचे खुल गये और सारे शुक्क व शुबहात का अज़ खुद इज़ाला होता चला गया। हज़रत के दीदार और एक निगाहे करम ने जो ज़र्ज़ानवाज़ी करम फ़रमाई की, उसे ताहीन हयात फ़रामोश नहीं किया जा सकता है।

उन का दिया हुआ शजरा जिस में दस्त मुबारक से हज़रत ने अपना दस्तख़त फ़रमाया था, बाद नमाज़े फज़िर पढ़ना रोज़मर्रा का मामूल बन गया था। फिर क्या था बद मज़हबियत के ख़न्दक में जाने से महफूज़ व मामून हो गया। मुझे ख़्याल आता है कि उसी मौक़ा पर गरीडीहा के मौलाना मुहम्मद अनवर अहमद रज़वी के सर पर उस भीड़ में मस्जिद की चहार दीवारी की ईंट गिर गई, जिस की वजह से खून जारी हो गया और चोट लग गई थी। हज़रत करीब आये और आप ने सर पर दस्ते शफ़क़त रखा कि खून बन्द हो गया, और सारी तकालीफ़ यक़ लख़्त दूर हो गई। इस ऐतिबार से भी वह दिन काबिले याद गार है कि जब मैंने रईसुल्लतहरीर काइदे अहले सुन्नत हज़रत अल्लामा अरशदुल कादरी, शारेह बुख़ारी मुफ़्ती मुहम्मद शरीफ़ुल हक़ अमजदी, मुहदिदसे कबीर अल्लामा ज़ियाउल मुस्तफ़ा कादरी, बहरूलउलूम मुफ़्ती अब्दुलमन्नान आज़मी जैसे अकाबिर उलमा और असातीने मिल्लत को ज़िन्दगी में पहली बार देखा था।

### ख़ानकाहे बरकातिया की करामत

शर्फ़ मिल्लत हज़रत सय्यद शाह अशरफ़ मियाँ बरकाती ख़ानकाह बरकातिया मारहरा शरीफ़ अपने एक तवील मज़मून में तहरीर फ़रमाते हैं कि 1996 ई में सरदियों के दिन थे मैं ख़ानकाह में मौजूद था। इत्तेलाअ मिली कि हज़रत अज़हरी मियाँ साहब आये हैं। मैंने बाहर जा कर मुलाक़ात की। हज़रत अज़हरी मियाँ जब हुज़ूर वालिद माजिद (अहसनुल उलमा) कुदिदसा सिरुहु की

हयात में तशरीफ़ लाते तो पुर तकल्लुफ़ नाश्ता का इन्तिज़ाम होता। मैंने भी इन्तिज़ाम करना चाहा लेकिन हज़रत अज़हरी मियाँ ने कहा कि मैं तकल्लुफ़ न करूँ। एक लिफाफ़ा में नज़राना दे कर फ़रमाया कि यह वालिदा माजिदा की ख़िदमत में पेश फ़रमा दें, और फ़ौरन रुख़सत हो गये। बमुश्किल चाये पी। जब वह चले गये तब मुझे ख़्याल आया कि उस दिन मेरी वालिदा माजिदा की इदत पूरी होने का दिन था, क़दीम ख़ानदानों में रिवाज है कि इदत के ख़ात्मा पर क़रीबी अज़ा ग़मगुसारी के लिए आते हैं, तभी मुझे इस बात का अन्दाज़ा हुआ कि आज हज़रत अज़हरी मियाँ नाश्ता के बग़ैर क्यों चले गये। दरअसल वह चाहते थे उस दिन घर की ख़्वातीन उन की वजह से कोई तकलीफ़ न करें।

हुज़ूर अहसनुलउलमा कुदिदसा सिरुहु के विसाल पर भी हज़रत अज़हरी मियाँ साहिब को बहुत रज़ा हुआ था। हुज़ूर अहसनुलउलमा को वह एक घने दरख़्त की मानिन्द समझते थे, जो कड़ी धूप में अपना साया शफ़क़्त दराज़ कर देता है।

था जो अपने दर्द की हकीमी दवा मिलता नहीं

चारा साजे दर्द दिल दर्द आश्ना मिलता नहीं

सितमबर 2003 ई में एक दिन हज़रत अज़हरी मियाँ साहिब का फोन आया, फ़रमाया कि हुज़ूर अहसनुलउलमा अलैहिर्रहमा वर्रिज़वान की मनक़बत में चन्द अशआर हुये हैं, आप नोट फ़रमा कर उस साल के 'अहले सुन्नत की आवाज़' के शुमारा में शाइअ करा दें। मैंने फोन



पर वह अशाअर नोट किए और "अहले सुन्नत की आवाज़" के 1434 हिजरी 2003 ई के शुमारा में शाइअ कर दिए।

हुजूर अहसनुल उलमा अलैहिर्रहमा वरिजवान के गुलाम और फकीर बरकाती की हैसियत से मेरी फहम मुझे यह शऊर देती है कि मैं दुआ गो हूँ कि खानवादए रजविया में हजरत अजहरी मियाँ खुसूसन और दीगर अखलाफ़ उमूमन अहले सुन्नत व जमाअत की इल्मी कियादत के उस मनसब को मज़बूती से थाम लें, जिस का इल्म हमारे आला हजरत और हमारे मुफ्ती आजम ने न सिर्फ़ यह कि उठाया था बल्कि हमेशा बुलन्द रखा था। एक बार हुजूर अहसनुल उलमा अलैहिर्रहमा वरिजवान से किसी ने दरयाफ़्त किया कि हुजूर आप की खानकाह के बुजुर्गों की कौन कौन से करामत हैं। जवाब अता किया गया कि हमारे खानदान में अपने बुजुर्गों की करामतों का ज़्यादा बयान नहीं किया जाता है, क्यों कि हमारे बुजुर्ग हमें सबक दे गये हैं कि दीन पर इस्तेक़ामत किसी करामत से ज़्यादा बुलन्द होती है। वह साहिब फिर जब बज़िद रहे तो हुजूर अहसनुल उलमा अलैहिर्रहमा वरिजवान ने फ़रमाया सुनये! माजी क़रीब में मेरी खानकाह की दो करामतें हैं। एक अहमद रज़ा और दूसरी मुस्तफ़ा रज़ा "वह साहिब यह सुन कर शिशद रह गये। जब मुफ्ती शरीफ़ुलहक़ अमजदी रज़वी बरकाती कुदिदसा सिर्रुहु यह वाकिआ सुनाते थे, तो आब दीदा हो जाते थे।

ज़िन्दगी एक बेहद पेचीदा निज़ाम का नाम है।

दीनी अफ़कार, दुनिया की रफ़्तार, रिवायत की पास दारी, इल्म से हासिल शुदा तसल्लुब और रूहानियत से कशीद कर्दा रवा दारी, अपनी जड़ों से वाबस्तागी और अपने शजर की ऐसतादगी, यक दरगीर व मुहकम गीर पर अमल दर आमद और खुद अपने दरीचों को वारख करता ताज़ा हवा की आमद असलाफ़ की दानिश से फ़ैज उठाना, और अख़लाफ़ की तरबियत करना, अहबाब की हमा-जिहत तरक्की के लिए उन में जोश भरना और खुद हर मौका पर बाहोश रहना, जो बज़ाहिर दूर रहते हैं उन में खुसूस व लिल्लाहियत तलाश करना, और जो हमा वक़्त करीब रहते हैं उन के अफ़आल की निगरानी करना, जमइयत को मरबूत रखने के लिए तसल्लुब को काम में लाना, और फितनों से दूर रहने और फितनों को दूर करने के लिए ज़रूरी लचक पैदा करना। यह उन गोनागो उमीदों में से चन्द हैं जिन्हें मैं हज़रत की ज़ात से वाबस्ता रखता हूँ, और दुआ गो हूँ कि काश ऐसा हो कि हमारी ख़ानकाह बरकात की अगली पीढ़ियां अपने ज़माने के पौदे वाले से कह सकें। सुनो माज़ी करीब में हमारी ख़ानकाह की तीन करामतें हैं। "अहमद रज़ा मुस्तफ़ा रज़ा और अख़्तर रज़ा।"

### बारिश के लिए दुआ

मुफ़ती आबिद हुसैन रज़वी सदरुलमुदरिस्सीन मदरसा फ़ैज़ुलउलूम जमशेदपुर बयान करते हैं कि आज से तकरीबन 18 साल क़ब्ल जब हुज़ूर ताज़ुशरीफ़ा मदरसा फ़ैज़ुलउलूम जमशेदपुर तशरीफ़ लाये थे, उस

मौका पर मुझ को हज़रत की ख़िदमत का मौका मिला था। गुस्ल वगैरा कराने की सआदत मिली थी, कब्ल अज़ी अलजामिअतुलअशरफ़िया मुबारकपुर में भी ज़माना तालिब इल्मी में उन के हाथ पाँव दबाने का शर्फ़ मिला था। उस ख़िदमत के सिला में हज़रत ने अपने दस्ते अक़दस से अपना शज़रा भी अता फ़रमाया था।

इस मौका से एक साहिब हज़रत के पास आये और अर्ज़ किया कि हुज़ूर मेरी अहलिया को इस्काते हम्ल हो जाता है। हम्ल ठहरता है लेकिन चन्द दिन या चन्द माह के बाद गिर जाता है। हज़रत ने फ़रमाया कि सात सुइयाँ ले कर आओ, मैं सात सुइयाँ ले कर हाज़िर हुआ। हज़रत ने तअवीज़ बना कर दिया। वह तावीज़ इतना असर अन्दाज़ हुआ कि इस्कात का मर्ज़ जाइल हो गया, और वह साहिबे औलाद हो गये।

22 जून 2008 ई मुहिब्बे मोहतरम जनाब कारी अब्दुलजलील साहब शोअबए किरअत मदरसा फ़ैजुलउलूम जमशेदपुर ने फ़कीर से फ़रमाया कि पाँच साल कब्ल हज़रत अज़हरी मियाँ किब्ला दारुलउलूम हनफ़िया ज़ियाउलकुरआन लखनऊ की दस्तारबन्दी की एक कान्फ़ेन्स में खिताब के लिए मदरू थे। उन दिनों वहाँ बारिश नहीं हो रही थी। सख़्त कहत साली के अय्याम गुज़र रहे थे, लोगों ने हज़रत से अर्ज़ की कि हुज़ूर बारिश के लिए दुआ फ़रमा दें। हज़रत ने नमाज़ इस्तिस्खा पढ़ी और दुआयें कीं, अमी दुआ कर ही रहे थे कि वहाँ मूसला धार बारिश होने लगी और सारे लोग भीग गये।



हाफिज़ इस्मियाज़ नोअमानी साहब ने अपनी खुश बख्ती पर नाज़ करते हुये अपने जज़्बात का अनोखे अन्दाज़ में इज़हार करते हुये फ़रमाया कि मैं कलकत्ता में कसीर अज़ दिहाम की वजह से चादर पकड़ कर मुरीद हुआ था,कि काश हुज़ूर की जी भर कर ज़्यारत कर लेता और मुसाफ़ा का मौका मिल जाता। काफी दिनों तक यह मुराद न आई,3फ़रवरी 2003 ई को जब हज़रत बारीनगर टेलकी तशरीफ़ लाये तो जलसा की सुबह मदरसा फ़ैज़ुलउलूम में भी तशरीफ़ लाये,मैं मदरसा के सामने खड़ा था कि इतने में हज़रत की गाड़ी आ गई। उस के बाद क्या था मैंने ख़ूब हज़रत से मुसाफ़ा किया,हाथों को बोसा दिया और हाथ पकड़ कर हज़रत अल्लामा अलैहिर्रहमा की साबिक़ रिहाइशगाह में ले गया। मैं समझता हूँ कि हज़रत अपने इस मुरीद की दिली कैफ़ियात से आगाह हो गये,इसलिए इस मर्तबा अपना मौका इनायत फ़रमाया कि उस वक़्त मेरी खुशी की इन्तिहा न रही,उस वक़्त हज़रत का चेहरा इतना वजिह और ख़ुबसूरत था कि बयान से बाहर है।

### दाढ़ी के लिए हिदायत

मौलाना मंसूर फ़रीदी मुदीर सेहमाही फ़ैज़ुर्रज़ा बिलासपुर(छत्तीसगढ़)बयान करते हैं कि मुझे आज भी वह दिन याद है जब मैं जामिआ फ़ैज़ुलउलूम जमशेदपुर में ज़ेरे तालीम था,आप की तशरीफ़ आवरी "गुम्बदे ख़ज़रा कान्फ़्रेंस"गाँधी मैदान में शिरकत की गर्ज से हुई थी,उस वक़्त मुसलमानाने जमशेदपुर की खुशी ईद की खुशी से कम नहीं थी,भीड़ के मन्ज़र से ऐसा मालूम होता कि

रिजालुलगैब की आमद आमद है। पूरा शहर उस जानिब दीवाना वार दौड़ रहा था, जिस जानिब सरकार ताजुशशरीआ की सवारी चल रही थी, जब गाड़ी दारुलउलूम गौसिया निजामिया जाकिर नगर की तरफ चलने लगी तो मैं भी चल पड़ा। हजरत कासी फज़ले हक अज़ीज़ी ने नमाज़े मगरिब पढ़ाने की और दारुलउलूम के मुआइना की दअवत दी थी, बाद नमाज़े मगरिब लोगों ने हल्का में शामिल होने की ख्वाहिश का इज़हार किया तो आप उसी जगह तशरीफ़ फ़रमा हो गये, हल्का इरादत में शामिल होने वालों में एक साहिब जिन का नाम सुल्तान अहमद था, जब करीब पहुँचे तो हुज़ूर ताजुशशरीआ ने अपने एक हाथ से उनका हाथ पकड़ लिया, अब क्या था तमाम हाज़िरीन के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ी उड़ी सी नज़र आने लगीं कि अब क्या होगा पता नहीं उन से क्या ग़लती हो गई। अभी हम तमाम लोग इसी कशमकश में थे कि हजरत का दूसरा हाथ सुल्तान साहिब के चेहरे और दाढ़ी की तरफ़ उठा, और निहायत मुशफ़क़ाना अन्दाज़ में मोहब्बत भरे लहजे से आप ने फ़रमाया "रुख़सार दाढ़ी का बाल इतना नहीं उतारा जाता, यह भी दाढ़ी के हुक्म में है, इस को आइन्दा तराश ख़राश न करना" मैं हैरत में था कि आप जाह व जलाल और रोअब का यह आलम कि ज़माना आप के करीब आने से घबराता है, मगर शरीअत का हुक्म नाफ़िज़ करने के लिए आप का जमाल और आप की शफ़क़त का वह मन्ज़र मैं अपनी ज़िन्दगी के किसी भी मोड़ पर नहीं भूल सकता।

1995 ई दारुलउलूम फैजुर्रजा बिलासपुर का रस्म संगे बुनियाद के लिए हुज़ूरताजुशशरीआ तशरीफ लाये,आप की तशरीफ आवरी से कब्ल हासिदीन में से किसी ने रास्ते में गिट्टी डाल दी ताकि उस राह से गाड़ी न निकल पाये और इस तरह हम काम्याब हो जायें कि दारुलउलूम की बुनियाद के लिए ताजुशशरीआ तशरीफ न ला सकें,मगर जब अज़म जवाँ होता है और बुजुर्गों का फैज़ान जारी होता है तो ख़ालिद व तारिक सा जांबाज़ भी अल्लाह भेज देता है,और उस से अपने दीन का काम ले लेता है,उस मन्ज़र को देख कर हज़रत मौलाना जहाँगीर रज़ा नूरी परेशान हो जाते हैं मगर चूंकि आप अज़म व इरादा के पुख़्ता चटान ठहरे इतनी जल्दी हिम्मत कैसे हारते,आप ने मुकम्मल तदबीर इख़्तियार की हैं मगर चूंकि आप जहाँगीरी को अपनाते हुये एक मज़दूर से बात की,इस गिट्टी को कितनी देर में हटा सकते हो,चूंकि गिट्टी की तादाद बे शुमार थी यह तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता था कि एक दो घन्टे में रास्ता साफ़ किया जा सकता है,मगर उस मज़दूर ने सिर्फ़ इतना कहा कि आप के हज़रत के आने से पहले हम रास्ता साफ़ कर देंगे,आप इधर की फ़िक्र छोड़ें और अपना काम करें,और बन्दे ने यह तै किए बग़ैर कि आप कितना देंगे काम शुरू कर दिया,जब हज़रत की गाड़ी पहुँची उस से कब्ल पूरा रास्ता साफ़ हो चुका था,और आप दारुलउलूम फैजुर्रजा रस्मे संगे बुनियाद के लिए तशरीफ ले आये,आप की गाड़ी के पीछे पीछे हासिदीन जो बद



नियती लिए हुये आगे बढ़ कर हज़रत को रोकना ही चाह रहे थे कि वह आप के चेहराए पुर अनवर से अयाँ रोअब व जलाल की ताब न ला सके और फौरन उलटे पाँव लौट गये,और इस तरह से दारुलउलूमफैजुरजा की बुनियाद हुज़ूर ताजुशरीआ के मुक़ददस हाथों से रखी गई।

इसी सफ़र का वाकिआ है कि मुहिब्बे मुकर्रम हाफ़िज़ व कारी मुहम्मद सादिक हुसैन फ़रमाते हैं कि हुज़ूर ताजुशरीआ की ख़िदमत के लिए मैं मामूर था और आप अलहाज गुलाम सरवर के घर आराम फ़रमा थे,मैं हज़रत के सर में तेल मालिश कर रहा था और अपने मुक़ददर पर नाज़ कर रहा था कि एक ज़र्ज़ा नाचीज़ को फ़लक की क़दमबोसी का शर्फ़ हासिल हो रहा था,अचानक मेरी निगाह हुज़ूरे वाला की हथेलियों पे पड़ी,मैं एक लमहा के लिए थरथरा गया आख़िर यह क्या हो रहा है मेरी निगाहें क्या देख रही हैं मुझे यकीन नहीं हो रहा है,आप तो गहरी नीन्द में हैं फिर आप की उंगलियाँ हरकत में कैसे हैं?मैंने मौलाना अब्दुलवहीद फ़तहपुरी जो उस वक़्त मौजूद थे और दीगर अफ़राद को भी इस जानिब मुतवज्जोह किया तमाम के तमाम हैरत व इस्तिअजाब में डूब गये थे,मुआमला यह है कि आप की उंगलियाँ इस तरह हरकत कर रही थीं गोया आप तस्वीह पढ़ रहे हों,और यह मन्ज़र मैं उस वक़्त तक देखता रहा जब तक कि आप बेदार नहीं हो गये,इन तमाम तर कैफ़ियात को देखने के बाद दिल पुकार उठता है कि :

सोये है यह बजाहिर दिल इन का जागता है

2003 ई में उसी हुजूर गुफ़ितए आजम के मौके पर दिहानौर रोड मुम्बई में एक सराए की बुनियाद रखी जाती थी,जिस में हुजूर ताजुशरीआ,और मौलाना शुऐब रजा साहब मदऊ थे,बहैसियत सामेअ मैं भी मौजूद था।अचानक दिल में ख़याल आया कि काश हुजूरताजुशरीआ के साथ एक दस्तरख़्वान पर बैठने का मौका मिल जाता तो किस्मत संवर जाती,इसी तसव्वुर में गर्क कियामगाह के दरवाज़ा पर खड़ा था मेरी तरह सैकड़ों मुश्ताक़ाने दीद क़ल्ब व जिगर फ़र्शे राह किये हुये थे,अचानक दरवाज़ा खुला और एक साहब ने आवाज़ लगाई मंसूर फ़रीदी कौन हैं, अन्दर आइये। मुझे उस वक़्त अपनी समाअत पर यकीन नहीं हो रहा था कि वह तुम्हीं हो जिसे आवाज़ दी जा रही है,मगर दिल कह रहा था कि हाँ हाँ तुम्हीं हो,और फिर क्या था फ़र्ते मुसरत से मेरी आँखें भीग चुकी थीं,आंसू पोछते हुये मैं अन्दर गया,सलाम व मुसाफ़ा से सरफ़राज़ हो कर घन्टों हज़रत की ख़िदमत में लगा रहा,आज भी तसव्वुर करता हूँ तो उस कैफ़ियत से क़ल्ब व रूह को ठन्डक का ऐहसास होता है,मेरी तमन्ना क्या पूरी हुई मेरे ऐअ्तिक़ाद की दुनिया ने एक ठोस और मुस्तहक़म किलऐ को गोया तस्ख़ीर कर लिया था जहाँ से आज भी तसव्वुरे शैख़ रहनुमाई करता नज़र आता है,यह जितनी बातें लिखी गई हैं हकाइक़ पर मन्नी हैं। इस के इलावा भी बे शुमार आप की करामतें और तसरूफ़ात का ज़िक़्र मिलता है।

### नगमा व तरनुम का सर्माँ

मशहूर कलम कार व अदीब मौलाना मुफ्ती शमशाद हुसैन रजवी प्रिंसिपल मंदरसा शमसुलउलूम बदायूँ शरीफ बयान फरमाते हैं कि एक दिन हम तमाम तालिबे इल्म हजरत काजी शम्सुद्दीन जौनपुरी के दर्स में मौजूद थे, और हजरत पढ़ा रहे थे कि एक बुजुर्ग सिफत इंसान तशरीफ लाये। काजी साहिब ने खड़े हो कर उनका इस्तिकबाल किया। आने वाले को अपनी मसनद पर बठाया, और खुद मुअददब हो कर बैठ गये। और तालिब इल्मों के जहिन व दिमाग में क्या तासिर उभरा? उसको मैं नहीं बता सकता, अलबत्ता मैंने यह महसूस क्या—काजी साहब जैसी शख्सियत। अल्लाह अल्लाह उन की इल्मी शान व शौकत का यह आलम था कि बड़े बड़े उन के सामने तिफले मकतब मालूम होते थे। उन का इल्मी वकार मुस्लिम था। लेकिन आज क्या हो गया है कि इल्मी जाह व जलाल और फन्नी तमतराक नयाजमंदी के सांचे में ढल गया है। आप ने असातिजा में से किसी से मैंने दरयाफ्त किया।

हजरत यह कौन हैं? उन्होंने जवाब दिया

यह हजरत अजहरी मियाँ हैं। उस वक्त तक नाम तो सुना था मगर देखा नहीं था, फिर हजरत अजहरी मियाँ साहब ने अरबी ज़बान में एक मनकबत पढ़ी। गालिबन यह मनकबत हजरत मुजाहिदे मिल्लत की शान में लिखी गई थी। पढ़ने का लब व लहजा इस कदर दिलकश था। अल्फाज के ज़ेर व बम में ऐसी मौजूनियत



थी कि नगमा व तरन्नुम का समौं छा गया। हमारे तमाम असातिजा किराम इस मनकबत से मुतास्सिर हुये और बहुत ज़्यादा मुतास्सिर हुये, यहीं से हज़रत ताजुशरीआ की इल्मी लियाक़त का और बा कमाल सलाहियत का नक्श मेरे दिल में उभरता है।

1979 ई की बात है, मैं जमाअते राबेआ का तालिबेइल्म था, मदरसा हमीदिया रज़विया बनारस के सालाना इम्तिहान के लिए हज़रत ताजुशरीआ साहब तशरीफ़ लाये हुये थे। "मिशकात शरीफ़" का आप ने इम्तिहान लिया। मैं इम्तिहान देने वालों में शरीक था। लोगों का मेरे बारे में ख़याल था कि नाचीज़ तमाम तालिबेइल्मों में बा सलाहियत है। ख़ैर यह उन का हुस्ने ज़न था।

हज़रत ताजुशरीआ ने फ़रमाया कहीं से कोई हदीस पढ़ो, तमाम साथियों का इशारा पाते ही मैंने दो हदीसों पढ़ीं, जिस का मुतालअ मैं ख़ास तौर पर कर के आया था। हदीस तो मैंने सही ऐअराब के साथ पढ़ दी और तर्जमा भी कर दिया। उस के बाद हज़रत ने जो सवालात इस हदीस के मुतअल्लिक़ किए यह यकीन जानिये मैंने यह महसूस किया कि मैं अभी तक इल्म व फन से बे बहरा हूँ। इन दो वाकिआत ने मेरे ज़हन व दिमाग़ को बहुत मुतास्सिर किया।

### आशिके रसूल

डाक्टर हाफ़िज़ शफीक़ अजमल रज़वी (बनारस हिन्दू यूनीवर्सिटी) कहते हैं कि हज़रत ताजुशरीआ

अख्तर रज़ा खाँ अख्तर बरेलवी एक सच्चे आशिके रसूल हैं। महबूब से दूरी उन्हें क़तअन बरदाश्त नहीं हैं। उन के कलाम में फुरक़ते मदीना की सूरत में बेकरारी की कैफ़ियत और मदीना की हाज़िरी की तमन्ना ख़ूब नज़र आती है। चन्द अशआर मुलाहिज़ा फ़रमायें।

दागे फुरक़ते तैबा कल्बे गुज़महल जाता  
काश गुम्बदे ख़ज़रा देखने को मिल जाता  
फुरक़ते मदीना ने वह दिए गुझे सदमे  
कोह पर अगर पड़ते कोह भी तो हिल जाता  
दूर ऐ दिल रहें मदीने से  
मौत बेहतर है ऐसे जीने से  
फुरक़ते तैबा की वहशत दिल से जाये ख़ैर से  
मैं मदीना को चलूँ वह दिन फिर आये ख़ैर से  
शमीमे जुल्फ़े नबी ला सबा मदीने से  
मरीज़ हिज़्र को ला कर सुंघा मदीने से  
इलाही! वह मदीना कैसी बस्ती है दिखा देना  
जहाँ रहमत बरसती है जहाँ रहमत ही रहमत है

एक आशिके सादिक की यह आरज़ू और तमन्ना होती है कि उस की रूह जब निकले तो महबूब की जलवा गरी रहे, महबूब के क़दमों में गिर कर अपनी जान निछावर करे। मौत बरहक़ है, हर नफ़्स को मौत का मज़ा चखना है। मगर यह मौत अगर महबूब के क़दमों में हो तो फिर उस का क्या कहना। हज़रत अख्तर रज़ा बरेलवी ऐसी मौत को जिन्दगी से ताबीर करते हैं और इसे जाविदानी बताते हैं। हज़रत अख्तर के यहाँ मौत के इसी पाकीज़ा तस्व्वुर की कारफ़रमाई जा बजा देखने

को मिलती है।

तिरे दामने करम में जिसे नीन्द आ गई है  
जो फना न होगी ऐसी उसे ज़िन्दगी मिली है

### इल्मी व फ़िक्ही इदराक

नौजवान कलमकार व अदीम मौलाना तौफीक अहसन बरकाती मुदीर माहनामा "सुन्नी दअ्वते इस्लामी" मुम्बई अपने तास्सुरात बयान करते हैं कि न सिर्फ़ एक बुलन्द पाया शाइर बल्कि फ़िक्ह व इफ़ता के अज़ीम शह सवार, उम्मत मुस्लिमा के सच्चे काइद, और पीरे तरीक़त की हैसियत से मुतआरफ़ हैं, आप की हमा जिहत ज़ात वाक़ेई एक जहान समेटे हुये है, दर्स व तदरीस में भी आप की इल्मी व फ़िक्ही लियाक़तों का अनोखा अन्दाज़ शागिर्दों की ज़बानी मालूम हुआ, तस्नीफ़ व तालीफ़, तर्जमा व हाशिया में भी आप के ज़र्रे निगार कलम ने ख़ूब जो लानियाँ दिखायें, हज़ारहा फ़तावा तहरीर फ़रमाये, तक़रीबन तीस से ज़ाइद किताबें लिखीं, बेशुमार तहकीकी मक़ालात व मज़ामीन तहरीर फ़रमाये, किताबों पर मुक़द्दमात लिखे, तक़रीजे लिखीं, हवाशी तहरीर किए। अभी हाल ही में मज़िलसे बरकात अलजामिअतुलअशरफ़िया मुबारक पुर आजमगढ़ (यूपी) से आप का लिखा हुआ "हाशिया बुख़ारी" शाइअ हुआ जो वाक़ेई अरबी ज़बान व अदब में आप की महारत, इल्मियत व फ़काहत, और फ़न्ने हदीस में कमाल का पता देता है। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कुदिदसा सिर्रुहु की किताब "अलमोअतमदुलमुस्तनद" का सलीस उर्दू ज़बान में तर्जमा किया जो दर हकीक़त तर्जमा



निगारी का एक अनोखा बाब है, और रुहे बलागत की कमा हक्कोहु तर्जमानी का लाज़वाल गुंजिनए मअरुफ है। यह तर्जमा आप के कलम से वजूद में आया, जिस की अदबियत का अन्दाज़ा मुताला के बाद ही लगाया जा सकता है। यह दर हकीकत आप की खिदमात और इल्मी गहराई व गीराई का आईनादार है, इसी नोअ का एक और शाह कार "الزلال الانفى من بحر سبقة الاتقى" (अज इमाम अहमद रज़ा कादरी) का तर्जमा है। बिला शुबह यह सब फज़ल है अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का, करम है रसूले आजम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का, और फ़ैज़ान है आला हज़रत मुजदिददे आजम और मुफ़ितए आजम अलैहिमर्रहमा का, जो आलमे इस्लाम के रू ब रू आफ़ताब की शकल में जगमगा रहा है। दिलों को ज़ूफ़िशाँ, अज़हान को दरख़्शाँ और अफ़कार व ख़्यालात को अनवार इल्म व मअरफ़त से गुलबद अगाँ कर रहा है, और सारी खल्कत उस के फ़ैज़ान से मालामाल हो रही है।

### शरीअत की पासदारी

मशहूर ख़ातीब मौलाना अब्दुलमुस्तफ़ा हश्मती सिद्दीकी मोहतमिम दारुलउलूम मख़दूमिया रुदोली शरीफ़ ज़िला बाराबंकी ने इम्साल "उर्स नूरी" मुन्अकिद 13 मुहर्रमुलहराम 1437 ई को अज़हरी मेहमानख़ाना में तक़रीर में बयान फ़रमाया कि दुबई में एक अब्दुरज़्ज़ाक़ नामी शख़्स जो सोने का बहुत बड़ा ताजिर है, सैकड़ों लोग उस के यहाँ काम करते हैं, बिला शुबह वह ताजिर ख़रब पती है, वह ताजुशशरीआ के मुरीदों में से है, दुबई के

कियाम के दौरान वह ताजुशरीआ से मिलने आया। किसी शख्स ने ताजुशरीआ से यह बताया कि उन के यहाँ तरावीह की इमामत कोई देवबन्दी या वहाबी करता है। इतना सुनना था कि ताजुशरीआ के जलाल का आलम न पूछिये, उस शख्स से मुसाफा नहीं किया और बहुत सख्त सुस्त कहा, आखीरकार उस ने मअज़्जरत की और तौबा की और उज़्र पेश किया कि हमें इस बात का इल्म नहीं है कि हमारी कम्पनी में सैकड़ों लोग काम करते हैं, इसलिए हमें इस का इल्म नहीं हो सका कि कौन इमामत करता है, बहरहाल आइन्दा ऐसा नहीं होगा, जब सब के सामने उस ने तौबा इस्तिगफ़ार किया फिर ताजुशरीआ ने उसे नर्मी से समझाया, और अकाइदे वहाबिया बताया, और मसाइले शरीआ उसके सामने पेश किया। वह शख्स सरतापैर सरापा इज्ज व इंक़ेसारी का मुजस्समा बना रहा, मौका पा कर उस ने अर्ज किया हुज़ूर गरीब ख़ाने पर तशरीफ़ ले चलें, तो हज़रत ने साफ़ लफ़्ज़ों में फ़रमाया कि इस बार तो मैं नहीं जा सकता, अगर तुम तौबा पे काइम रहे तो आइन्दा सफ़र में चलूंगा। हालांकि उस से पहले कई बार उस के घर जा चुके थे। इस मुशाहिदा को पेश करने का मक़सद यह है कि ताजुशरीआ हकीकी मअनों में आला हज़रत, हुज्जतुल इस्लाम और हुज़ूर मुफ़तीए आज़म हिन्द के इल्म व अमल और फ़ज़ल व कभाल के सच्चे वारिस व अमीन हैं, और मौजूदा वक़्त में उन की शख़्सियत आफ़ताब व माहताब की तरह है, जिस से सारा ज़माना फ़ैज़ पाता है। सिवा

उन के जो आँख रख कर भी हसद में बन्द किए रहते हैं।

दुबई में गोल्ड मार्केट के قریب الفتیم الراس में सुन्नियों की सरकजी मस्जिद है जिस में पाकिस्तान के कारी गुलाम रसूल साहब इमाम थे। जुमा का दिन था बावजूद यह कि वहाँ माइक पे नमाज़ होती थी, बड़ी मस्जिद थी, भीड़ भाड़ नमाज़ियों की इतनी होती थी कि माइक के बगैर आवाज़ पहुँचना मुश्किल था, उन तमाम बातों के बावजूद न यह कि लोग क्या कहेंगे और क्या होगा, जुमा की इमामत फरमाई बगैर माइक के न कोई चूँ चिरा न कोई हंगामा। हांलाकि लोगों को सवाल करने का पूरा पूरा हक था, कि जब हर जुमा को माइक पे नमाज़ होती है तो आज बगैर माइक के क्यों?

यह सब कुछ फज़ले खुदावन्दी और इताअत शरीफ़ का समरा है और नतीजा है, अवाम भी उन्हीं उलमा को मतऊन करती है जो शरीअत को मज़ाक बनाए हुये हैं, अगर कोई पाबन्दे शरीअत हो तो कौम ज़रूर उस से मोहब्बत भी करती है और ऐहतिराम भी।

रुदोली शरीफ़ में 24/जमादिलआख़िर 1400 हिजरी में "सुन्नी कांफ़्रेन्स" के नाम से कुछ लोगों ने एक जलसा किया, और रईस उड़ीसा हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत मौलाना शाह हबीबुर्रहमान साहब उड़ीसवी (मुतवफ़्फ़ी 1401 हिजरी) और ताजुशरीआ, को मदऊ किया। जलसा वालों की बे तवज्जोह और अफ़रातफ़री देख कर मैंने इन दोनों बुजुगों से गुज़ारिश की कि हमारे यहाँ तशरीफ़ ले चलें।



उन हज़रत की करम फ़रमाई कि दअवत कबूल फ़रमा ली,लेकिन उस वक़्त मदरसा की ऐमारत मुख़्तसर और इन्तिज़ामायात भी माकूल न थे। इसलिए मदसरे से मुत्तसिल मुहम्मद उमर कुरैशी साहिब के गकान में दोनों बुजुर्गों के कियाम का इन्तिज़ाम हुआ,साहिबे ख़ाना का कारोबार कलकत्ता में चलता था,वह वहीं हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत के दामन से वाबस्ता हो गये थे।,साहिबे ख़ाना के साहबज़ादा जावेद उमर साहब ने कहा कि मेरी वालिदा भी हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत से मुरीद होना चाहती है,आप हज़रत से गुज़ारिश कर दें कि कबूल फ़रमा लें,मैंने हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत से अर्ज़ किया,हज़रत ने फ़रमाया“मियाँ सरकार आला हज़रत के शहज़ादे हज़रत अजहरी मियाँ की मौजूदगी में ऐसा कैसे हो सकता है कि मैं मुरीद करूँ उन्हीं से मुरीद करवाइये”चूँकि साहिबे ख़ाना पहले से हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत के दामन करम से वाबस्ता हो चुके थे,इसलिए अहलिया भी बजिद रहीं कि मुझे भी हज़रत की कनीज़ों में दाख़िल कराइये। बइसरार मैंने हज़रत को राज़ी तो कर लिया मगर घर के अन्दर जाने का जो रास्ता था वह हुज़ूर ताजुशरीआ की कियाम गाह से हो कर गुज़रता था। हज़रत ने फ़रमाया कि मैं हज़रत अजहरी मियाँ साहब के सामने से हो कर कैसे गुज़र सकता हूँ,आख़ीरकार उक़बा दरवाजे से हज़रत अन्दर तशरीफ़ ले गये और फ़रमाते थे कि“कोई तेज़ आवाज़ में न बोले कि हज़रत अजहरी मियाँ तशरीफ़ फ़रमा हैं, आहिस्ता बोलो,शहज़ादे कियाम फ़रमा हैं।”

अल्लाहु अकबर मैं देख कर दंग रह गया,कहाँ एक अस्सी साल की अजीमुलमुरत्तब शख्सियत जिन का आलिमाना वकार और मुजाहिदाना शान का जमाना खुतबा पढ़ता हो,एक तीस-पैंतीस साल के शहजादे का कितना ऐहतिराम और अदब फ़रमा रहे हैं।

### कंधों पर चारपाई

मशहूर तजकरा निगार मौलाना गुलाम जाबिर शम्सी मिस्बाही पूरनवी बयान करते हैं कि एक दफ़ा बरसात में ताजुशरीआ अल्लामा अख़्तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी बाइसी तशरीफ़ लाये मेरे गाँव के हज़रत मौलाना अब्दुलहैय नूरी,जो मेरे करीबी रिश्तेदार हैं,हरीपुर जाने के लिए तैयार कर लिए,बाइसी से फ़कीर को टूटी चौक तक तो मारुती से लाये,अब वहाँ से हरीपुर जो चन्द कदम पर है कैसे ले जायें,बीच में नाले पानी से पुर थे,किराया की जो कश्तियाँ चलती थीं,वह ग़ायब थीं,कश मकश के आलम में मौलाना नूरी ने चारपाई मंगाई,हज़रत ताजुशरीआ को बैठाया चार उलमा या उलमा नुमा लोगों ने कांधों पर उठाया,नाले का पानी उबूर कर के बैठक तक लाये,हुज़ूर जो अन्दर से जमाल,बाहर से जलाल में भरे हुये थे हिचकोले,हिलकोरे खाते हुये फ़रमाया:“या अल्लाह!लोग मरने के बाद चार के कंधों से उठाई हुई खाट पर सवार होते हैं,आप लोगों ने मुझे जीते जी ही सवार कर दिया” यह सुन कर लोग कहकहे में डूब गये। लोग आते गये,सुनते गये,कहकहे बुलन्द होते गये,यहाँ तक कि यह बात तमाम अतराफ़ में फैल गई,जो सुनता,हंस हंस कर लोट पोट हो जाता। आज भी लोग याद करते हैं,तो ज़ेरे लब मुस्कुरा देते हैं।

## हाफिज़ मुहम्मद हुसैन रज़वी की बीनाई वापस

हज़रत मौलाना शाकिरुल कादरी फैज़ी (ख़ालीफ़ा ताजुशरीआ) मुदरिस मदरसा ज़हिरुलइस्लाम व इमाम व ख़तीब हुसैनी मस्जिद उदयपुर (राजिस्थान) ने अपना एक ऐनी मुशाहिदा बयान किया कि अताए रसूल चमने फ़ातिमा के महकते फूल हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीबनवाज़ के सात सौ छियासीवें (786) उर्स का मौका था, 1419 हिजरी की बात है कि हुज़ूर ताजुशरीआ की आमद पर अंजुमन चौक उदयपुर में प्रोग्राम मुन्अकिद हुआ हज़रते के हमरा राकिमुस्सुतूर भी था, उस मौके पर अकीदत मंदों का इतना हुज़ूम था कि हज़रत की कार अपने कंधों पर उठा ली थी दिन जुमा वक़्त सुबह का था नमाज़ के बाद हज़रत के मुरीदे ख़ास आली जनाब मुहम्मद ख़लील रज़वी अज़हरी (उर्फ़ पप्पू भाई) मोहल्लाह मेवाफ़रोशान उदयपुर अपने बच्चे मुहम्मद हुसैन को लेकर हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुये उस वक़्त बच्चे की उमर सिर्फ़ तीन माह थी, आँख की बिनाई का एलाज डाक्टर अशोक शर्मा महाराना भोपाल हास्पिटल उदयपुर कर रहे थे, पुरी जांच परताल कर के डाक्टर ने ला इलाज बता दिया था, इस बच्चे को हज़रत की ख़िदमत में पेश करते हुये पुरी पेरशानी बयान कर दी, हज़रत ने बच्चे को गोद में लेकर काफ़ी देर तक कुछ पढ़कर के दम फ़रमाया, उसकी आँखों पे अपना हाथ रखा, फिर फ़रमाया कि बच्चा ठीक है और कुछ दिनों के बाद बच्चे की निगाहें ठीक हो जायेंगी बच्चा दुनिया देखेगा और डाक्टर झूठा है।

अलहम्दु लिल्लाह आज वह बच्चा बग़ैर एलाज के बहुत अच्छी तरह देख रहा है, और कुरआन शरीफ़ मुकम्मल हिफ़ज़ कर के हाफिज़ मुहम्मद हुसैन रज़वी बन गया है। यह हज़रत की करामत पुरे उदयपुर में मशहूर हो गई।

कोई जाने तो क्या जाने कोई समझे तो क्या समझे

दो आलम की ख़बर रखता है दिवाना मुहम्मद का



## तस्नीफ़ात की भारत में धूम

मर्दे दाना, मर्दे आकिल मर्दे हक आगाह हैं  
 यह शहाबुद्दीन रज़वी आलिम जी जाह हैं  
 चमके क्यों न अहले सुन्नत के दिलों की अंजुमन  
 यह सहाफ़त के फ़लक ज़ूफ़िशा इक माह हैं

ज़िन्दगी में इनकी आई हैं बहुत तब्दिलियाँ  
 आ गई इनकी समझ में दुनिया की मक्कारियाँ  
 इन के दम से देखिये शहरे बरेली में अली  
 फ़िक्र व फ़न के गुलिस्ताँ में हर तरफ़ शादाबियाँ  
 इन की तस्नीफ़ात की भारत में हर सू धूम है  
 इनकी तहरीरों की जलवा पाशयाँ हर सिम्त है  
 इल्म व फ़न के गुलिस्ता में चश्म दिल से देखिये  
 उनकी तख़लीकात की बरनाइयाँ हर सिम्त हैं

ख़िदमते दीने शहे कौनैन में मसरूफ़ हैं  
 ज़िन्दगी है वक्फ़ उनकी कारे मिल्लत के लिए  
 यह फिदाए मसलक अहमद रज़ा हैं दोस्तो  
 लिख रहे हैं हर घड़ी यह अहले सुन्नत के लिए  
 इन के कामों से हैं रहते शादमाँ अहले सुन्नत  
 अहले सुन्नत के लिए करते हैं हर लमहा यह काम  
 राहे हक़ पर दाइमा चलते रहें ताजिदगी  
 अहले हक़ करते हैं दिल से यह दुआयें सुबह व शाम

बख़्ते रौशन पर करे यह नाज़ जितना कम तो है  
 इनकी किस्मत का सितारा इन दिनों है ओज पर  
 देखिये देते हैं क्या सुन कर मेरे अशआर को  
 पर मुसररत दिल है उनका है तबीअत मौज पर

बेहतरी की हम दुआयें करते हैं सुबह व मसा  
आप को रखे जहाँ में शादमाँ हर दम खुदा  
सुन्नियत की सर बलन्दी के लिए हैं गुस्तईद  
आप को हासिल है फैजे हज़रत अख़्तर रज़ा

हुस्ने अख़लाक़ व अमल से शाद हैं अहले वतन  
आप के सर है यकीनन साया-ए-शाह-ए-जमन  
दीने बर हक़ की हमेशा बे गर्ज़ ख़िदमात से  
अहले दिल के दिल की महफ़िल में हैं यूँ जलवा फ़गन

यह अली बावफ़ा भी आप के हमराह है  
अलिमाने दीने हक़ भी तो बेशक साथ हैं  
आप के दिल में है उलफ़्त औलियाए पाक की  
बिलयकीन अफ़ज़ाल यज़दाँ आप के भी हाथ हैं

नतीजए फ़िक्र : मशहूर नकीब व शाइर हज़रत अल्लामा मौलाना  
अली अहमद सीवानी, अलीगढ़

## हुज़ूर ताजुशरीअ की तस्नीफ़ात

जानशीने मुफ़्तिए आजम हिन्द ताजुशरीअ अल्लामा मुफ़्ती अख़्तर  
रज़ा खाँ अजहरी ग़ियाँ की तमाम तस्नीफ़ात और फ़तावा  
मतबूआ के साथ ही साथ अब वेबसाइट पर भी उपलब्ध हैं।

[www.Tajush-shariah.com](http://www.Tajush-shariah.com)

## इस्लाम व मुनियत का तस्नीफ़ और एशा की...

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िल बैरलवी क़ुदस सिर्रू और इमाम अक़ाबिरीने अहले सुन्नत व ज़माअत के अफ़कार व नज़रियात और तालीमात की नशर व एशाअत के ज़ामेअ मन्सूबे पर अमल पैरा होकर "इस्लामिक रिमन् सेंटर" दर्जनों किताबें शाया कर चुका है हमारे इशाअती मक़सद के साथ ही दीनी मदारिस के असातिज़ा व तल्बा को मुसनिफ़, मज़मून निगार, तरजमाकार और क़लम का शाहकार बनाने की भी कोशिश है बैनुलअक़्यामी तकाज़ों के तहत मुख़्तलफ़ ज़बानों में अपनी अवाज़ हर एक फ़र्द तक पहुँचाने की मुख़्तलसाना ज़द्वोज़ेहद की जा रही है ज़दीद तरज़ेफ़िक व निगारिश में इल्मी व तहकीकी अन्दाज़ से सीरत व तारीख़ी, दअवत व तबलीग़ और रज़वियात के मौजूआत पर किताबें तस्नीफ़ की जा रही हैं, और ख़ूबसूरत अन्दाज़ में शाया करके आलमे इस्लाम के सामने मन्ज़रेआम पर लाया जा रहा है हमारी ख़्वाहिश है कि बैरली शरीफ़ में तस्नीफ़ व तालीफ़, तरजमा व तरज़ीज और तन्ज़ीम व तहरीक का एक मज़बूत व मौसर इदारा साबित हो

ताज़ुशशरिआ जानशीने हुज़ूर मुफ़्त-ए-आज़म हिन्द अल्लामा मुफ़्त मोहम्मद अख़्तर रज़ा क़ादरी अज़हरी दामत बरकातुहुमुल-आलिया की अकसर तसानीफ़ ज़दीद तबाअत व किताबत के साथ आप के हाथें में हैं राक़मुलसतूर हज़रत की शख़्सियत, ज़लालतुल इल्म व फ़ज़ल, दीनी व फ़िज़ही ख़िदमात और कारनामों पर मुसलसल लिख़ रहा है, आप इन किताबों का मुताअला ज़रूर करें

मोहम्मद :- शहाबुद्दीन रज़वी बैरलवी

PUBLISHED BY:

**ISLAMIC RESEARCH CENTER**

58, KASGRAN, SODAGRAN, BAREILLY SHARIF (U.P.)

MOB. : 09837549282, 09887385339, 08923721109

WEBSITE: WWW.ALAHAZRATBOOKS.COM, E-MAIL : MRAZVI.RAZVI@GMAIL.COM

**Rs. 120/-**